श्रीगणेशाय नमः
श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीआञ्जनेयार्चन सर्वस्वम्

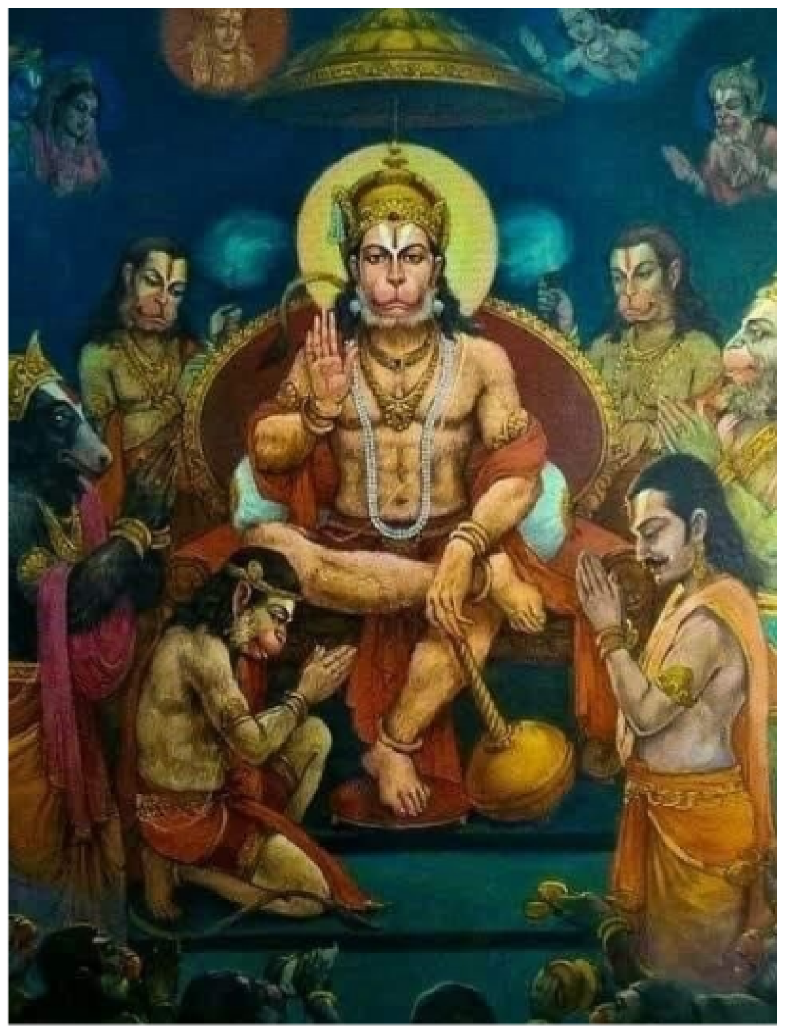

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू॥

श्रीगणेशाय नमः
श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीआञ्जनेयार्चन सर्वस्वम्

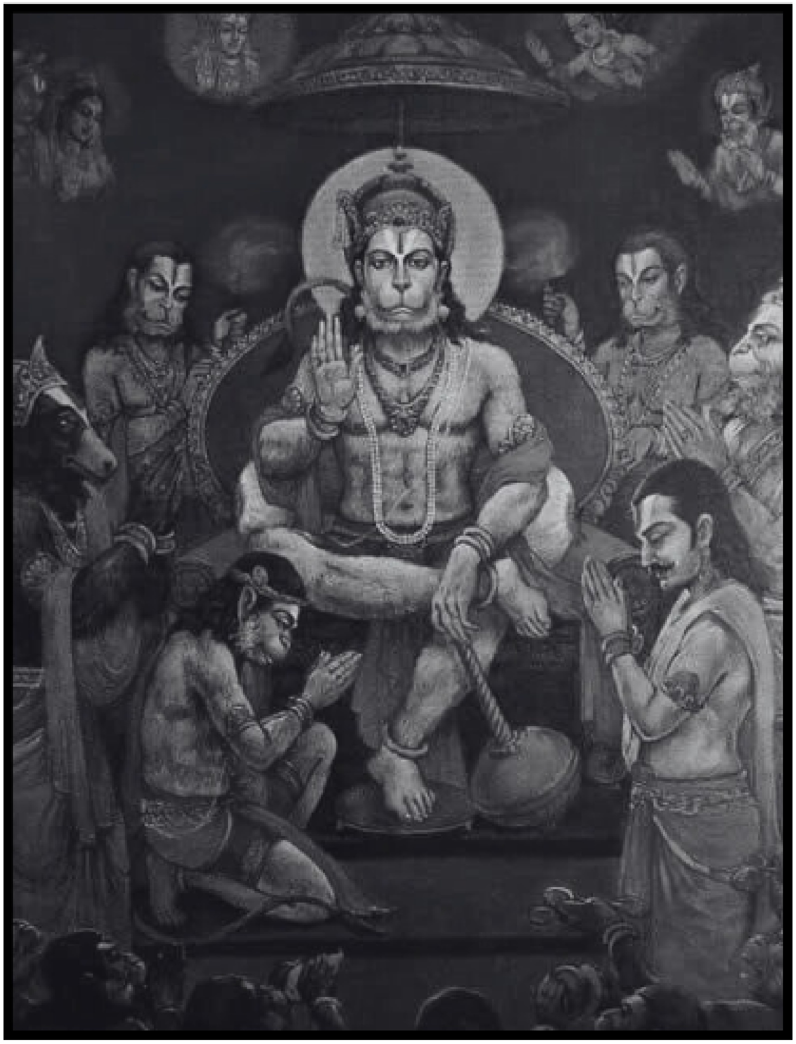

लेखक- हृतिक मिश्र

श्रीराघव ग्रन्थमालाया: तृतीयं पुष्पं

मङ्गलाचरण

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि । मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ। याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम् ॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् । यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ । वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् । सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।

यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥

बंदउँ नाम राम रघुबर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥

बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥

महामंत्र जोइ जपत महेसू । कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥

महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥

जान आदिकबि नाम प्रतापू । भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥

सहस नाम सम सुनि सिव बानी । जपि जेई पिय संग भवानी ॥

हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को ॥

नाम प्रभाउ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

श्रीरामनामाय नमः

॥ इति मङ्गलाचरण ॥

पुरोवाक्

नमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दायभक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय

गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज लिखते हैं **“राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥”** अर्थात् बिना श्रीहनुमान् जी महाराज की कृपा के कोई राम जी को प्राप्त नही कर सकता और उनका भजन करने से व्यक्ति स्वतः प्रभु को पा जाता है यथा : **“तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥”**, अतः सिद्ध होता है कि भगवान् श्रीसीताराम जी को प्राप्त करने और उनकी भक्ति प्राप्त करने के लिए श्रीहनुमान् जी महाराज की कृपा प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।

श्रीहनुमान् जी स्वयं भगवान् श्रीसदाशिव जी ही हैं यथा : **महाशम्भुः स्वयं सोऽपि कपिरूपो दुरासदः ॥ (शिवसंहिता)** श्रीहनुमान् जी साक्षात् श्रीशंकर जी के सुवन भी हैं यथा : **सर्वथा सुखिनं चक्रे सरामं लक्ष्मणं हि सः । सर्वसैन्यं ररक्षासौ महादेवात्मजः प्रभुः ॥" (शिव महापुराण)** श्रीहनुमान् जी सा बलवान दूसरा तीनों कालों में कोई नही है यथा : **भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान-सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥ (हनुमान बाहुक)** श्रीहनुमान् जी सद्गुणों के धाम हैं यथा : **शौर्यं दाक्ष्यं बलं धैर्यं प्राज्ञता नयसाधनम् । विक्रमश्च प्रभावश्च हनूमति कृतालयाः ॥ (वाल्मीकि रामायण)** श्रीहनुमान् जी भगवान् श्रीराम जी को अत्यन्त प्रिय हैं यथा : **सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना। तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥ (श्रीरामचरितमानस)** श्रीहनुमान् जी ने सभी पर उपकार करने वाले श्रीभगवान् पर भी उपकार करा है यथा : **सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥ (श्रीरामचरितमानस)** सहस्रों रावण मिलकर भी श्रीहनुमान् जी महाराज से युद्ध नही कर सकते यथा : **न रावणसहस्रं मे युद्धे प्रतिबलं भवेत्। शिलाभिश्च प्रहरतः पादपैश्च सहस्रशः ॥ (वाल्मीकि रामायण)** तथा उनकी अपार क्षमता से विधि हरि और हर भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं यथा : **भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन-अनुमानि सिसु-केलि कियो फेरफार सो । पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन, क्रम को न भ्रम, कपि बालक बिहार सो ॥ कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि, लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो। बल कैंधौं बीर -रस धीरज कै, साहस कै, तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो ॥ (हनुमान बाहुक) ।**

इस प्रकार श्रीहनुमान् महाराज की महिमा अपार है, अतः ताकि भक्त जन श्रीहनुमान् जी महाराज की सम्यक विधि से आराधना कर उनकी कृपा के भाजन बन सकें इसलिए भगवान् श्रीसीतारामहनुमान् जी की प्रेरणा और कृपा से ही इस ग्रन्थ की रचना हुई है। ग्रन्थ में श्रीहनुमान् जी की पूजन विधि, हनुमान् जयंती की पूजन विधि, अनेकानेक स्तोत्र आदि वर्णित हैं और ग्रन्थ के परिशिष्ट प्रकरण में कथाओं आदि का वर्णन करा गया है, जिन्हें पढ़कर भक्तजन लाभान्वित होंगे। इसी के साथ ग्रन्थ के मध्य-मध्य में भी अनेक विषयों का उल्लेख करा गया है जो कि भक्तों को अत्यन्त प्रिय लगेंगे। इस ग्रन्थ की रचना में अपना असीम योगदान देने के लिये मैं **श्री सुरज बेरकिळे** जी का अनेकानेक धन्यवाद करना चाहूँगा, इनके सहयोग के कारण ही यह ग्रन्थ पूर्ण हो पाया है, श्रीहनुमान् जी महाराज से प्रार्थना है कि वे इनपर अपनी असीम कृपा करें। अब अन्त में हम श्रीसीताराम जी के प्यारे अञ्जनीकुमार संकटमोचन रामदूत भगवान् श्रीहनुमान् जी महाराज से यही प्रार्थना करेंगे कि वे हमारे ऊपर अपनी ऐसी कृपा करें कि उनकी कृपा से यह ग्रन्थ सभी भक्तों को अत्यन्त प्रिय लगे तथा उनके लिए यह अत्यन्त उपयोगी भी सिद्ध हो॥ **नारायण..**

- हृतिक मिश्र

संवत् २०८२,

चैत्र शुक्ल एकादशी

सम्पर्क सूत्र- 8303317498

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

अनुक्रमणिका

पूजन प्रकरण	पृष्ठ संख्या
1. पूजन उपचारो की स्थापना	11
2. पूजन की तैयारी	11
3. श्रीहनुमत् पूजन	12-34
• पूजन पूर्व के कर्तव्य तथा पवित्रीकरण	12
• आचमन तथा आसन शुद्धिकरण	12-13
• प्राणायाम	13
• देवता नमस्कार	13
• गणेश स्मरण तथा विष्णु स्मरण	14
• संकल्प	14-15
• दिग्रक्षण	16
• भैरव नमस्कार	16
• दीप प्रज्वलन तथा पूजन	16
• शङ्ख पूजन तथा प्रोक्षण	17
• घण्टा पूजन	18
• कलश पूजन	18-19
• आत्म पूजा	19
• श्रीगणेश पूजन	20-21

- श्रीहनुमान् मानसिक पूजन 22
- श्रीहनुमत् पूजन 23-34

उत्सव प्रकरण पृष्ठ संख्या

1. श्रीहनुमान् जयन्ती पूजन 35-56
   - व्रत का सङ्कल्प 35
   - मूर्ति स्थापन 35
   - स्वस्त्ययन 35-36
   - पूजन संकल्प 37
   - दिग्रक्षण 37
   - सिद्धिबुद्धिसहित श्रीमहागणपति पूजन 37-44
   - कलश स्थापन 45-51
   - नवग्रह पूजन 52-55
   - श्रीहनुमान् जयन्ती पूजन 56

स्तोत्र प्रकरण पृष्ठ संख्या

1. श्रीहनुमत् पञ्चरत्नम् 57
2. श्रीविभीषणकृतं श्रीहनुमत्स्तोत्रम् 58-59
3. श्रीमारुति कवच 59-62
4. श्रीसंकटमोचन हनुमानाष्टक 63-64
5. श्रीहनुमान चालीसा 65-67
6. श्रीबजरंग बाण (प्रमाणिक पाठ) 68-70

7. श्रीहनुमान साठिका	**71-74**
8. श्रीहनुमान बाहुक	**75-84**
9. श्रीहनुमान् द्वादशनामस्तोत्रम्	**85**
10. श्रीविनय पत्रिका प्रोक्त हनुमत् स्तुतियाँ (अर्थ सहित)	**86-99**
स्तुति संख्या 1	86-88
स्तुति संख्या 2	88-90
स्तुति संख्या 3	90-91
स्तुति संख्या 4	91-92
स्तुति संख्या 5	92-93
स्तुति संख्या 6	93-94
स्तुति संख्या 7	94-95
स्तुति संख्या 8	95-96
स्तुति संख्या 9	96-97
स्तुति संख्या 10	97-98
स्तुति संख्या 11	98-99
स्तुति संख्या 12	99
11. श्रीहनुमत् त्रिकाल स्मरण	**100**
परिशिष्ट प्रकरण	**पृष्ठ संख्या**
1. अहिरावण महिरावण वध	**101-104**
2. श्रीहनुमान् जी का श्रीशिव जी से युद्ध	**105-107**
3. क्या प्रातःकाल हनुमान जी का नाम नही लेना चाहिए ?	**108-109**

4. प्रसाद प्रेमी हनुमान् 109

5. श्रीहनुमत् स्मरण की महिमा 110-111

6. श्रीहनुमान् जी के भाई 111

7. श्रीहनुमान् जी को श्रीसीताराम जी के वरदान 112

8. हनुमान् जी द्वारा लंका विध्वंस (आनन्द रामायण) 113-114

9. श्रीराम नाम माहात्म्य 115

॥ इति अनुक्रमणिका ॥

इस पुस्तक का सर्वाधिकार इस पुस्तक के प्रकाशक के पास सुरक्षित है, अतः इसके किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण अथवा किसी भी विधि (जैसे- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा कोई अन्य विधि) से प्रयोग अथवा किसी ऐसे यन्त्र में भण्डारण जिससे इसको पुनः प्राप्त किया जा सकता है, निषिद्ध है॥

पूजन प्रकरण

पूजन उपचारो की स्थापना

भगवान् श्रीहनुमान् जी को पाद्य, अर्घ्य, आचमन तथा मधुपर्क अर्पित करने के लिए अपने सामने चार पात्रों की स्थापना करे । तदनन्तर स्वर्ण, रजत अथवा ताम्बे के अर्घ्यपात्र और पाद्यपात्र में पवित्र जल भर दे फिर अर्घ्य पात्र में चन्दन, पुष्प, यव, अक्षत, कुश का अगला भाग, तिल, दूर्वा और सरसों डाल दे। फिर पाद्य पात्र में श्यामाक, दूर्वा, कमल और अपराजिता डाल दे। इसके बाद आचमन पात्र में जायफल, लवङ्ग और कङ्कोल डाल दे। दही, मधु और घृत के संयोग से मधुपर्क बनता है, इसे काँसे के पात्र में श्रीहनुमान् जी को निवेदित करे॥

पूजन की तैयारी

पूजन के लिये आसीन होने से पूर्व पूजन की आवश्यक तैयारी कर लेनी चाहिए। सूती वस्त्र को तीन बार मोड़कर उससे ताजे जल को छानकर कलश में वह जल भर देना चाहिए। पूजा में जितना भी जल उपयोग करें वो सारा सूती वस्त्र को तीन बार मोड़कर उसके द्वारा छाना हुआ ताजा जल ही होना चाहिए। तदनन्तर किसी पात्र के द्वारा शङ्ख में भी जल भरकर उसको अपने दाएँ भाग में शङ्ख की जिस ओर से जल गिरता है उसके उस भाग को देवता की ओर रखते हुए उसके आधार पर स्थापित कर देना चाहिए । शङ्ख को जल में डुबाना तथा उसे पृथ्वी पर रखना ये दोनो कर्म निषिद्ध हैं। तदनन्तर शङ्ख में दूर्वा, चन्दन आदि डाल देने चाहिए तथा अपने वाम भाग में कलश को स्थापित करने के लिए अक्षत पुंज स्थापित कर देना चाहिए तथा पूजन में उपयोगी अक्षतों को भी तीन बार धोकर उनको कुमकुम के द्वारा रंग लेना चाहिए। फिर अपनी बायीं ओर जल भरा कलश, घण्टा तथा देवता के सामने धूपदानी स्थापित करके एक दीपक घृत का हो तो अपने दाईं ओर और यदि तेल का हो तो अपनी बायीं ओर स्थापित कर लेना चाहिए तथा सामने अथवा दाईं ओर कुंकुम और कपूर के साथ घिसा गाढ़ा चन्दन तथा पुष्प आदि रख लें। पुष्पों को हाथ में तथा चन्दन ताम्र पात्र में न रखें और पूजन में जल को रखने के लिए काँस्य पात्र का उपयोग न करें। काँसे के पात्र में रखे हुए जल का स्नान तथा देव पूजन में उपयोग करना वर्जित है, अतः पूजा में ताम्बे आदि के पात्र ही उपयोग करें॥

॥ इति श्री ॥

श्रीहनुमत् पूजन

पूजन पूर्व के कर्तव्य

सर्वप्रथम तो स्नान करके बिना सिले वस्त्र धारण कर जल से अपने चरण धोकर पूजन कक्ष में प्रवेश करे। तत्पश्चात् पूजा की सभी सामग्रियों को यथास्थान रखकर कुश अथवा ऊन के आसन पर पद्मासन, सिद्धासन अथवा सुखासन से बैठ जाए तथा निम्न मन्त्र से शिखा बाँध ले :

"चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे"

कभी भी बिना आसन पर बैठे पूजन न करे क्योंकि श्रीकालिका पुराण
के अनुसार व्यक्ति को कभी भी खड़े रहकर पूजन नही करना चाहिए।

निम्न मन्त्र उच्चारित कर फिर आसन बिछाकर उसपर बैठना चाहिए :

विष्णुना त्वं धृता पृथ्वि ! सर्वे लोकास्त्वया धृता: ।
अतः सर्वं सहे देवि वस्तुं मे स्थानमुत्तमम् ॥

अब तीन कुशों से निर्मित पवित्री बाई अनामिका के तथा दो कुशों से निर्मित पवित्री दाहिनी अनामिका के मूल में धारण कर ले। यदि पवित्री उपलब्ध न हो सके तो स्वर्ण की अँगूठी धारण कर सकते हैं। तत्पश्चात् अपने दक्षिण हस्त में जल लेकर पवित्रीकरण मन्त्र का उच्चारण करे :

पवित्रीकरण मन्त्र-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥

अब अपनी मध्यमा तथा अनामिका अँगुली के द्वारा उस जल को **पुण्डरीकाक्ष पुनातु:, पुण्डरीकाक्ष पुनातु:, पुण्डरीकाक्ष पुनातुः** इन मन्त्रों का एक-एक बार उच्चारण करते हुए कुल तीन बार अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर छिड़क ले।

अब निम्न मन्त्रों के द्वारा 3 बार आचमन करे :

केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः ।

अब **“गोविंदाय नमः”** इस मन्त्र का उच्चारण कर अँगूठे के मूल भाग के द्वारा ओष्ठों को दो बार पोंछ ले तत्पश्चात् **“हृषीकेशाय नमः”** इस मन्त्र के द्वारा हस्त प्रक्षालन करके फिर अपने दक्षिण अंगुष्ठ के द्वारा अपनी नाक का, अपने नेत्रों का तथा अन्त में अपने दोनों कर्णों का स्पर्श करे।

अब हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़कर जल छोड़ दे-

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः ॥

आसन शुद्धिकरण-

अब दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे तत्पश्चात्

उस जल को अंगुलियों के मध्य के छिद्रों से आसन पर छिड़के :

पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

प्राणायाम-

अब मन में **श्रीराम, श्रीराम** ऐसा उच्चारण करते हुए तथा साथ में श्रीसीतालक्ष्मण जी के सहित भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए तीन प्राणायाम करे ॥

अब निम्न वर्णित मन्त्रों से देवताओं को नमस्कार करके गणेश स्मरण तथा विष्णु स्मरण करे-

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः । श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्रीशचीपुरन्दराभ्यां नमः । श्रीमातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । श्रीइष्टदेवताभ्यो नमः। श्रीकुलदेवताभ्यो नमः । श्रीग्रामदेवताभ्यो नमः। श्रीवास्तुदेवताभ्यो नमः। श्रीस्थानदेवताभ्यो नमः । श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेताय श्रीरामचन्द्राय नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

अब आगे वर्णित मन्त्रों से श्रीगणेश तथा श्रीविष्णु का स्मरण करे।

श्रीगणेश स्मरण-

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

श्रीविष्णु स्मरण-

श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः ।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

श्रीविष्णवे नमस्तुभ्यम् ॥

सङ्कल्प-

अब हाथ में जल, पुष्प तथा अक्षत लेकर पूजन का सङ्कल्प करे क्योंकि सङ्कल्प विहीन पूजन निष्फल होता है। अगर बस भगवान् की प्रसन्नता के लिए पूजन करना है तो निष्काम और अगर सांसारिक सुखों की प्राप्ति की इच्छा है तो सकाम संकल्प करना चाहिए। पूजन का संकल्प कर लेने के उपरान्त हाथ में लिए हुए जल आदि को किसी पात्र में छोड़ देना चाहिए ॥

निष्काम सङ्कल्प-

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीय-परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे ..नगरे / ग्रामे / क्षेत्रे[1] ..नामसंवत्सरे[2] ..मासे[3] शुक्ल / कृष्णपक्षे ..तिथौ[4] ..वासरे[5] ..गोत्रः[6] ..शर्माऽहं /वर्माऽहं /गुप्तोऽहं/ दासोऽहं/देवीदाऽहम्/दासीदाऽहम्[7] अनन्यश्रीसीतारामसेवक-असुरदलसंहारक-लक्ष्मणप्राणदाता-अञ्जनीनन्दन हनुमत्प्रीत्यर्थं हनुमत्पूजनं करिष्ये ।”

सकाम सङ्कल्प-

शर्माऽहं आदि तक पूर्ववत् बोलकर फिर आगे लिखे को बोले **"मम आत्मनः सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य ज्ञाताज्ञातसकलपापक्षयार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं नित्यकल्याणलाभाय अनन्यश्रीसीतारामसेवक-असुरदलसंहारक-लक्ष्मणप्राणदाता-अञ्जनीनन्दन हनुमत्प्रीत्यर्थं हनुमत्पूजनं करिष्ये ।"**

पुनः हाथ में जल ग्रहण कर निम्न संकल्प करे :

तत्रादौ दिग्रक्षणं दीपशंखघंटापूजनं कलशार्चनं श्रीगणेश पूजनं च करिष्ये ।

---

1. यदि किसी तीर्थ में पूजन कर रहे हों तो उस तीर्थ का नाम, नगर में हों तो उस नगर का नाम और गाँव में हो तो उस गाँव का नाम उच्चारित करे ।

2. जो संवत्सर चल रहा हो उसका नाम बोले ।

3. चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन । इनमें से जो भी मास चल रहा हो उसका नाम उच्चारित करे।

4. प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या तथा पूर्णिमा । इनमें से जो भी तिथि चल रही हो उसका नाम बोले।

5. रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि । इनमें से जो भी दिन हो उसका नाम उच्चारित करे ।

6. अपने गोत्र का उच्चारण करे।

7. ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में शर्मा, क्षत्रिय वर्मा, वैश्य गुप्त तथा शूद्र दास बोलें। इसी प्रकार ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वर्ण की स्त्रियाँ देवीदाऽहम् तथा वैश्य और शूद्र वर्ण की स्त्रियाँ दासीदाऽहम् बोलें॥

अब आगे वर्णित विधि से दिग्रक्षण करे तत्पश्चात् भैरव नमस्कार करे।

दिग्रक्षण-

बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर उसे दाएं हाथ से
आच्छादित करके आगे वर्णित मन्त्रों का पाठ करे :

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥

अब उस अभिमन्त्रित सरसों को सभी दिशाओं में छिड़ककर तीन बार बाईं एड़ी द्वारा पृथ्वी का ताड़न करे फिर वाम हस्त में जल लेकर दाहिनी अनामिका द्वारा उसका नेत्रों से स्पर्श कराए ॥

श्री भैरव नमस्कार-

अब निम्न मन्त्र से भैरव जी को नमस्कार कर उनसे पूजन करने की आज्ञा माँगे :

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

दीप प्रज्वलन तथा पूजन-

अब गणपति का स्मरण कर एक दीपक अगर घी का हो तो अपने दाहिनी ओर और तेल का हो तो बाईं ओर किसी आधार पर रखकर प्रज्वलित करके निम्न मंत्र से दीपस्थ देव की पूजा करे :

दीपस्थदेवतायै नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र के द्वारा दीप की प्रार्थना करे :

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् । यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ॥

दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन दीपः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

अब शङ्ख पूजन तत्पश्चात् प्रोक्षण करे।

शङ्ख पूजन-

शङ्ख में चन्दन, दूर्वा, तुलसी तथा पुष्प डालकर उसे पवित्र जल के द्वारा भर दे।
इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण कर शङ्ख में तीर्थों का आवाहन करे
तत्पश्चात् दक्षिण हस्त द्वारा अंकुश मुद्रा का प्रदर्शन करे :

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ! नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अब निम्न मन्त्रों से शङ्खस्थ देवता का पूजन करके उन्हे नमस्कार करे :

शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम् ।

पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गा सरस्वती ॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ।

शङ्खे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥

शङ्खस्थ देवतायै नमः। आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे :

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करे । नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य ! नमोऽस्तु ते ॥

अब धेनु मुद्रा का प्रदर्शन कर शङ्ख, चक्र तथा गरुड़ मुद्रा
प्रदर्शित करे तदुपरान्त परमीकरण मुद्रा का प्रदर्शन करे ।

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन शङ्खः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

प्रोक्षण-

अब शङ्ख के जल को निम्न मन्त्र का उच्चारण कर कुश के द्वारा
तीन बार अपने ऊपर, पूजन सामग्री पर तथा धरती पर छिड़के।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥

घण्टा पूजन-

अब निम्न मन्त्र के द्वारा घण्टे की प्रार्थना करे तत्पश्चात्

घण्टे का वादन कर उसे उसके स्थान पर स्थापित कर दे :

सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः ॥
आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् । कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ ॥

अब निम्न मन्त्र से गरुड़ जी का आवाहन कर उनका
पूजन कर उन्हें नमस्कार करके गरुड़ मुद्रा प्रदर्शित करे।

घण्टास्थ गरुडाय नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन घण्टास्थ गरुड: प्रीयतां**
यह उच्चारित कर जल छोड़ दे तत्पश्चात् कलश पूजन करे।

कलश पूजन-

अब अपने वाम भाग में स्थापित करे हुए कलश में आगे वर्णित मन्त्र से
वरुण देव का आवाहन कर उनका पूजन करे तत्पश्चात् उन्हें नमस्कार करे।

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥
अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन वरुण: प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

अब दक्षिण हस्त की अनामिका अंगुली के द्वारा कलश का स्पर्श करते हुए आगे वर्णित मन्त्रों को उच्चारित कर कलश में तीर्थों आदि का आवाहन करे :

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः । अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ! नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

अब अक्षत-पुष्पों से निम्न वर्णित विधि के अनुसार पूजन करे :

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः, दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः, पश्चिमे सामवेदाय नमः,
उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः, कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः ॥

अब निम्न मन्त्र से सभी आवाहित देवताओं आदि का पूजन कर उन्हें नमस्कार करे :

गायत्र्यादिभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ कर प्रार्थना करे :

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमं पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव !
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

अब कुम्भ मुद्रा का प्रदर्शन करे तत्पश्चात् निम्न वर्णित विधि से आत्म पूजा करे ॥

आत्मपूजा-

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर उन अक्षतों को स्वयं पर छोड़े :

देहो देवालयः प्रोक्तः जीवो देवः सनातनः । त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥
आत्मने नमः । आत्मपूजां समर्पयामि ॥

॥ इति श्री ॥

श्रीगणेश पूजन

ध्यान-

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः । ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से गणेश जी का ध्यान कर एक पुष्प अर्पित करे।

आवाहन-

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥
सिद्धिबुद्धिसहितं श्रीगणेशमावाहयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से गणेश जी का आवाहन कर एक पुष्प अर्पित करे।

आसन-

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम् । स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित ! ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः । आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

आसन के लिए पाँच पुष्प समर्पित करे।

चन्दन-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। चन्दनं समर्पयामि ॥

पुष्प तथा पुष्पमाला-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। धूपमाघ्रापयामि ॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
बीबीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। दीपं दर्शयामि ॥

प्रभु के आगे 5 या 7 बार दिया घुमाकर उन्हे दीप दिखाए फिर अगर दिया घी का है तो प्रभु के दाई ओर और अगर तेल का है तो बाई ओर रख दे और फिर जल से अपने हाथ धुल ले॥

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि पानीय जलं च समर्पयामि ॥

प्रभु को नैवेद्य निवेदित कर उनके पीने के लिए जल समर्पित करे ॥

॥ इति श्रीगणेश पूजन विधि ॥

श्रीहनुमत् मानसिक पूजन

भक्त को प्रथमत: निम्न वर्णित विधि के अनुसार पवनकुमार श्रीहनुमान् जी महाराज का मानसिक पूजन करना चाहिए तत्पश्चात् उसे आगे वर्णित विधि के अनुसार श्रीहनुमान् जी महाराज का बाह्य पूजन सम्पन्न करना चाहिए॥

ध्यान-

तप्तचामीकरनिभं भीघ्नं संविहिताञ्जलिम् ।

चलत्कुण्डलदीप्तास्यं पद्माक्षं मारुतिं स्मरेत् ॥

जिनकी दिव्य कान्ति तपाये हुए सुवर्ण के समान है, जो भय का नाश करनेवाले हैं, जिन्होंने अपने प्रभु पुराण पुरुषोत्तम जानकीनाथ भगवान् श्रीराम जी का चिन्तन करके उनके लिये अञ्जलि बाँध रखी है, जिनका सुन्दर मुख हिलते हुए कुण्डलों से उद्भासित हो रहा है तथा जिनके नेत्र कमल के समान शोभायमान हैं, उन पवनकुमार श्रीहनुमान् जी का ध्यान करे॥

श्रीहनुमते लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ।

श्रीहनुमते हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ।

श्रीहनुमते यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ।

श्रीहनुमते रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि ।

श्रीहनुमते वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि ।

श्रीहनुमते सर्वात्मकं नमस्कारान् परिकल्पयामि ॥

॥ इति श्रीहनुमत् मानसिक पूजन विधि ॥

अब आगे वर्णित विधि से नाना उपचारों के द्वारा श्रीहनुमान् जी का पूजन करे।

श्रीहनुमत् पूजन

ध्यान-

कर्णिकारसुवर्णाभं वर्णनीयं गुणोत्तमम् । अर्णवोल्लङ्घनोद्युक्तं तूर्णं ध्यायामि मारुतिम् ॥

श्रीहनुमते नमः । ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

कनेर के फूल और सुवर्ण के समान जिनकी अङ्गकान्ति है, जिनमें वर्णनीय (प्रशंसनीय) उत्तम गुण विद्यमान हैं तथा जो समुद्र को लाँघ जानेके लिये उद्यत हैं, उन शीघ्रगामी पवननन्दन श्रीहनुमान जी महाराज का मैं ध्यान करता हूँ॥

आवाहन-

श्रीरामचरणाम्भोजयुगलस्थिरमानसम् । आवाहयामि वरदं हनुमन्तमभीष्टदम् ॥

श्रीहनुमते नमः । आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

भगवान् श्रीराम के युगलचरणारविन्दों में स्थिरभाव से मन को लगाये रखनेवाले, अभीष्टदाता एवं वरदायक हनुमान जी का मैं आवाहन करता हूँ॥

आसन-

नवरत्नमयं दिव्यं चतुरस्रमनुत्तमम् । सौवर्णमासनं तुभ्यं कल्पये कपिनायक ॥

श्रीहनुमते नमः । आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

कपिनायक ! मैं आपके लिये सोने का सिंहासन अर्पित करता हूँ, जिसमें नौ प्रकार के रत्न जटित हैं तथा जो दिव्य, चौकोर और अत्यन्त उत्तम है ॥

स्वागत-

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये । तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च मे ॥

कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवनं मम । आगतो देवदेवेश ! सुस्वागतमिदं पुनः ॥

इस मन्त्र से हनुमान जी का स्वागत करे।

पाद्य-

सुवर्णकलशानीतं सुष्ठु वासितमादरात्। पादयोः पाद्यमनघ प्रतिगृह्ण प्रसीद मे ॥

श्रीहनुमते नमः । पाद्यं समर्पयामि ॥

निष्पाप पवनपुत्र ! मैं आपके चरणों में पाद्य अर्पित करता हूँ, जो सोने के कलश में लाया गया है और जिसे आदरपूर्वक सुवासित किया गया है। आप इसे ग्रहण करें और मुझपर प्रसन्न हो॥

अर्घ्य-

कुसुमाक्षतसम्मिश्रं गृह्यतां कपिपुङ्गव । दास्यामि तेऽञ्जनीपुत्र स्वमर्घ्यं रत्नसंयुतम् ॥

श्रीहनुमते नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

कपिप्रवर अञ्जनीनन्दन ! मैं आपको फूल, अक्षत और
रत्नों से युक्त अर्घ्य दे रहा हूँ । आप इसे स्वीकार करें ॥

आचमन-

महाराक्षसदर्पघ्न सुराधिपसुपूजित। विमलं शमलघ्न त्वं गृहाणाचमनीयकम् ॥

श्रीहनुमते नमः । आचमनं समर्पयामि ॥

बड़े-बड़े राक्षसों का दर्प चूर्ण करनेवाले देवेन्द्र पूजित हनुमान जी ! आप
पाप का नाश करनेवाले हैं। इस निर्मल आचमनीय जल को ग्रहण करें॥

मधुपर्क-

कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः । मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीहनुमते नमः । मधुपर्कं समर्पयामि, मधुपर्कान्ते आचमनं च समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से प्रभु को मधुपर्क समर्पित कर आचमन अर्पित करे।

स्नान-

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीहनुमते नमः । स्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से प्रभु को पवित्र जल द्वारा स्नान कराए।

पञ्चामृत स्नान-

मध्वाज्यक्षीरदधिभिः सगुडैर्मन्त्रसंयुतैः । पञ्चामृतैः पृथक् स्नानैः सिञ्चामि त्वां कपीश्वर ॥

श्रीहनुमते नमः । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥

कपीश्वर ! मैं 'मधु, घी, दूध, दही और गुड़-इन पाँच मन्त्र युक्त अमृतों द्वारा आपको पृथक्-पृथक् स्नान कराता हूँ ॥ इसके बाद प्रभु को शुद्ध जल से स्नान कराए।

अब हनुमान् जी को हल्दी आदि का लेप लगाकर फिर शुद्धोदक स्नान कराए।

शुद्धोदक स्नान-

सुवर्णकलशानीतैर्गङ्गादिसरिदुद्भवैः । शुद्धोदकैः कपीश त्वामभिषिञ्चामि मारुते ॥

श्रीहनुमते नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

कपिराज वायुनन्दन ! सोने के कलश में लाये हुए गङ्गा
आदि नदियों के शुद्ध जल से मैं आपका अभिषेक करता हूँ॥

मौञ्जी-मेखला-

ग्रथितां नवभी रत्नैर्मेखलां त्रिगुणीकृताम् । मौञ्जीं मुञ्जमयीं पीतां गृहाण पवनात्मज ॥

श्रीहनुमते नमः । मौञ्जीमेखलां समर्पयामि ॥

पवनकुमार ! यह मूँज की बनी हुई त्रिगुणित एवं पीतवर्ण की मौञ्जी-मेखला,
जिसमें नवरत्न गुँथे हुए हैं, आपको अर्पित है, इसे ग्रहण कीजिये॥

कटिसूत्र एवं कौपीन-

कटिसूत्रं गृहाणेदं कौपीनं ब्रह्मचारिणः । कौशेयं कपिशार्दूल हरिद्राक्तं सुमङ्गलम् ॥

श्रीहनुमते नमः । कटिसूत्रं कौपीनं च समर्पयामि ॥

कपिसिंह ! ब्रह्मचारी के लिये उपयोगी यह कटिसूत्र तथा रेशमी कौपीन,
जो हल्दी में रंगा हुआ है, ग्रहण कीजिये, यह परम मङ्गलमय है॥

उत्तरीय-

पीताम्बरं सुवर्णाभमुत्तरीयार्थमेव च । दास्यामि जानकीप्राणत्राणकारण गृह्यताम् ॥

श्रीहनुमते नमः । उत्तरीयं समर्पयामि ॥

श्रीजानकी जी के प्राणों की रक्षा करनेवाले श्रीहनुमान जी ! मैं उत्तरीय के लिये आपको यह सुनहरा पीताम्बर दे रहा हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये॥

यज्ञोपवीत-

श्रौतस्मार्त्तादिकर्तॄणां साङ्गोपाङ्गफलप्रदम् । यज्ञोपवीतमनघं धारयानिलनन्दन ॥

श्रीहनुमते नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥

वायुनन्दन ! जो श्रौत-स्मार्त्त आदि कर्म करने वालों के लिये साङ्गोपाङ्ग फल देनेवाला तथा पाप-दोष से रहित है, उस यज्ञोपवीत को धारण कीजिये॥

आभूषण-

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् । पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीहनुमते नमः । रत्नाभूषणं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से प्रभु को आभूषण पहनाए।

गन्ध-

दिव्यकर्पूरसंयुक्तं मृगनाभिसमन्वितम् । सकुङ्कुमं पीतगन्धं ललाटे धारय प्रभो ॥

श्रीहनुमते नमः । गन्धं समर्पयामि ॥

प्रभो! जो दिव्यकर्पूर से युक्त, कस्तूरीमिश्रित तथा कुङ्कुमविशिष्ट है, उस पीले रंग के गन्ध अथवा चन्दन को आप अपने ललाट में धारण कीजिये॥

अक्षत-

हरिद्राक्तानक्षतांस्त्वं कुङ्कुमद्रव्यमिश्रितान् । धारय श्रीगन्धमध्ये शुभशोभनवृद्धये ॥

श्रीहनुमते नमः । अक्षतान् समर्पयामि ॥

प्रभो ! हल्दी से रंगे हुए कुङ्कुममिश्रित इन अक्षतों को गन्ध या
चन्दन के बीच में सुन्दर शोभा की वृद्धि के लिये धारण कीजिये ॥

पुष्प, पुष्पमाला तथा पत्र-

नीलोत्पलैः कोकनदैः कह्लारैः कमलैरपि । कुमुदैः पुण्डरीकैस्त्वां पूजयामि कपीश्वर ॥

मल्लिकाजातिपुष्पैश्च पाटलैः कुटजैरपि । केतकीबकुलैश्चूतैः पुन्नागैर्नागकेसरैः ॥

चम्पकैः शतपत्रैश्च करवीरैर्मनोहरैः । पूजये त्वां कपिश्रेष्ठ सबिल्वैस्तुलसीदलैः ॥

श्रीहनुमते नमः । पुष्पं पुष्पमालां तुलसीदलं बिल्वपत्रं च समर्पयामि ॥

कपीश्वर ! कपिश्रेष्ठ ! मैं नील उत्पल, कोकनद, कह्लार, कमल, कुमुद और पुण्डरीक पुष्पों से आपकी पूजा करता हूँ। मल्लिका, जाती, पाटल, कुटज, केतकी, बकुल, आम्र, पुन्नाग, नागकेसर, चम्पा, शतदल और करवीर आदि मनोहर पुष्पोंसे तथा बिल्वपत्र और तुलसीदलों से आपकी अर्चना करता हूँ॥

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीहनुमते नमः । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

इस मन्त्र के द्वारा प्रभु को दूर्वा समर्पित करे ॥

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् । शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीहनुमते नमः । सिन्दूरं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र के द्वारा प्रभु को सिन्दूर समर्पित करे ॥

नाना परिमल द्रव्य-

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीहनुमते नमः । नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥

अबीर, गुलाल, कुङ्कुम, सिंदूर तथा हल्दी का चूर्ण प्रभु को अर्पित करे ।

सुगंधित तेल तथा इत्र-

दिव्यपुष्पसमुद्धूतं परानन्दकरं रसम् । सुगन्धं पुष्टिदं देव गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीहनुमते नमः । सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र के द्वारा प्रभु को सुगंधित तेल तथा इत्र समर्पित करे ॥

अङ्गपूजा-

श्री हनुमते नमः, पादौ पूजयामि । श्री सुग्रीवसखाय नमः, गुल्फौ पूजयामि ।

श्री अङ्गदमित्राय नमः, जङ्घे पूजयामि । श्री रामदासाय नमः, ऊरू पूजयामि ।

श्री अक्षघ्नाय नमः, कटिं पूजयामि । श्री लङ्कादहनाय नमः, बालं पूजयामि ।

श्री राममणिदाय नमः, नाभिं पूजयामि । श्री सागरोल्लङ्घनाय नमः, मध्यं पूजयामि ।
श्री लङ्कामर्दनाय नमः, केशावलिं पूजयामि । श्री संजीवनीहर्त्रे नमः, स्तनौ पूजयामि ।

श्री सौमित्रिप्राणदाय नमः, वक्षः पूजयामि । श्री कुण्ठितदशकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि।

श्री रामाभिषेककारिणे नमः, हस्तौ पूजयामि ।
श्री मन्त्ररचितरामायणाय नमः, वक्त्रं पूजयामि। श्री प्रसन्नवदनाय नमः, वदनं पूजयामि ।

श्री पिङ्गनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि । श्री श्रुतिपारगाय नमः, श्रुतिं पूजयामि ।

श्री ऊर्ध्वपुण्ड्रधारिणे नमः, कपोलं पूजयामि । श्री मणिकण्ठमालिने नमः, शिरः पूजयामि।

श्री सर्वाभीष्टप्रदाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ॥

धूप-

दिव्यं सुगुग्गुलं साज्यं सदशाङ्गं सवह्निकम् । गृहाण मारुते धूपं सुप्रियं घ्राणतर्पणम् ॥

श्री हनुमते नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

वायुनन्दन ! घ्राणेन्द्रिय को तृप्त करनेवाले इस अत्यन्त प्रिय धूप को आप ग्रहण करें। इसमें गुग्गुल, घी और दशाङ्गधूप मिश्रित है। अग्नि से संयोग होने से यह दिव्य गन्ध देता है ॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

श्रीहनुमते नमः। दीपं दर्शयामि ॥

इस मन्त्र से गोघृत अथवा तिल या सरसों के तेल का दीपक समर्पित करे।

नैवेद्य-

सशाकापूपसूपाद्यपायसानि च यत्नतः । सक्षीरदधि साज्यं च सपूपं घृतपाचितम् ॥

श्रीहनुमते नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ॥

प्रभो ! यह नैवेद्य घी में पकाकर तैयार किया गया है। इसके साथ खीर, दही, घी और अपूप भी है। इतना ही नहीं, मैंने यत्नपूर्वक साग, पूआ, दाल और पायस भी इनके साथ प्रस्तुत किये हैं। आप यह सब स्वीकार करें।

पूर्वापोशान-

श्रीहनुमते नमः । पूर्वापोशानं समर्पयामि ॥

इस मंत्र से प्रभु को पूर्वापोशान के लिए जल समर्पित करे ॥

पानीय-

गोदावरीजलं शुद्धं स्वर्णपात्राहृतं प्रियम् । पानीयं पावनोद्भूतं स्वीकुरु त्वं दयानिधे ॥

श्रीहनुमते नमः । पानीयं समर्पयामि ॥

दयानिधे ! यह गोदावरी का शुद्ध जल है, जिसे सोने के पात्र में लाया गया है।
यह प्रिय पानीय पावन तीर्थ में प्रकट हुआ है। आप इसे स्वीकार करें॥

उत्तरापोशान-

आपोशनं नमस्तेऽस्तु पापराशितृणानलम् । कृष्णावेणीजलेनैव कुरुष्व पवनात्मज ॥

श्रीहनुमते नमः । उत्तरापोशानं समर्पयामि ॥

पवनपुत्र ! आपको नमस्कार है। यह उत्तरापोशन जल आपको अर्पित है। यह पापराशिरूपी तृण को भस्म करने के लिये अग्नि के समान है। आप कृष्णावेणी नदी के जल से उत्तरापोशन कीजिये ॥ इस मन्त्र से प्रभु जी को उत्तरापोशान के लिए जल अर्पित करे।

हस्तप्रक्षालन-

दिवाकरसुतानीतजलेन स्पृश गन्धिना । हस्तप्रक्षालनार्थाय स्वीकुरुष्व दयानिधे ॥

श्रीहनुमते नमः । हस्तौ प्रक्षालयितुं जलं समर्पयामि ॥

दयानिधे ! यमुना के द्वारा लाये हुए सुगन्धित जल का स्पर्श कीजिये।
यह हाथ धोने के लिये अर्पित किया गया है, कृपया इसे स्वीकार कीजिये॥

मुखप्रक्षालन-

श्रीहनुमते नमः। मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि ॥

इस मंत्र से प्रभु को मुखप्रक्षालन के लिए जल समर्पित करे ॥

शुद्धाचमनीय-

रघुवीरपदन्यासस्थिरमानसमारुते । कावेरीजलपूर्णेन स्वीकुर्वाचमनीयकम् ॥

श्रीहनुमते नमः । शुद्धाचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

रघुवीर के चरणन्यास में मन को स्थिर रखने वाले पवननन्दन ! आप
कावेरी के जल से भरे हुए इस पात्र के द्वारा आचमनीय स्वीकार कीजिये।

फल-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

श्रीहनुमते नमः। फलं समर्पयामि ॥

“इस फल को आपके समक्ष स्थापित करके मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि मेरा अनेक जन्म लेना सफल हो जाये अर्थात् मुझे मुक्ति मिल जाये॥” इस मन्त्र से प्रभु को फल अर्पित करे॥

करोद्वर्तन-

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् । करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीहनुमते नमः। करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि ॥

दाहिने हाथ को ऊपर और बाएँ हाथ को नीचे करके दोनो हाथो की अनामिका और अंगूठे से भगवान को घिसा हुआ गीला चंदन अर्पित करे, पहले अपने दाहिने हाथ से प्रभु जी के दाहिने हाथ पर चन्दन अर्पित करे फिर अपने बाएँ हाथ से प्रभु के बाएँ हाथ पर चन्दन समर्पित करे॥

अब श्रीहनुमान् जी महाराज को दक्षिणा तत्पश्चात् सुवर्ण पुष्प तत्पश्चात् ताम्बूल समर्पित करके फिर उनकी आरती करे ॥

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री हनुमते नमः । द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

इस मंत्र से दक्षिणा अर्पित करे ।

सुवर्णपुष्प-

वायुपुत्र नमस्तुभ्यं पुष्पं सौवर्णकं प्रियम् । पूजयिष्यामि ते मूर्ध्नि नवरत्नसमुज्ज्वलम् ॥

श्रीहनुमते नमः । सुवर्णपुष्पं समर्पयामि ॥

वायुनन्दन ! आपको नमस्कार है। आपके मस्तकपर नौ प्रकार के

रत्नों से जगमगाते हुए इस प्रिय सुवर्ण-पुष्प को चढ़ाकर मैं पूजा करूँगा॥

ताम्बूल-

ताम्बूलमनघ स्वामिन् प्रयत्नेन प्रकल्पितम्। अवलोकय नित्यं ते पुरतो रचितं मया ॥

श्रीहनुमते नमः । ताम्बूलं समर्पयामि ॥

निष्पाप स्वामिन् ! मैंने यत्नपूर्वक यह ताम्बूल तैयार किया है। आपके सामने ही इसका बीड़ा बनाया है। आप सदा इसपर दृष्टिपात कीजिये॥

नीराजन-

शतकोटिमहारत्नदिव्यसद्रत्नपात्रके । नीराजनमिदं दृष्टेरतिथीकुरु मारुते ॥

श्रीहनुमते नमः । नीराजनं समर्पयामि ॥

वायुनन्दन ! शतकोटि महारत्नों से युक्त इस दिव्यरत्न पात्र में आपके लिये नीराजन (आरती) अर्पित है। आप इसपर दृष्टिपात कीजिये ॥

पुष्पाञ्जलि-

श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः । मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीहनुमते नमः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

इस मंत्र से प्रभु को पुष्पांजलि अर्पित करे।

प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

श्रीहनुमते नमः । प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

इस मंत्र से प्रभु की चार प्रदक्षिणा करे।

नमस्कार-

नमस्तेऽस्तु महावीर नमस्ते वायुनन्दन । विलोक्य कृपया नित्यं त्राहि मां भक्तवत्सल ॥

श्रीहनुमते नमः । नमस्कारान् समर्पयामि ॥

महावीर ! आपको नमस्कार है । वायुनन्दन ! आपको प्रणाम है।
भक्तवत्सल ! कृपापूर्वक मेरी ओर देखकर सदा मेरी रक्षा कीजिये॥

अब जिन भी स्तोत्र, कवच आदि का पाठ करना हो अपनी इच्छा तथा अपने अधिकार अनुसार उनका पाठ कर ले ।

जप-

सर्वप्रथम निम्न मन्त्रों के द्वारा जपमाला की वन्दना करे :

मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे । जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

अब हनुमान जी का ध्यान करते हुए **"हनुमते नमः"** इस मन्त्र का यथा क्षमता जप करे।

जप के बाद निम्न मन्त्र के द्वारा पुनः माला की वन्दना कर उसे माथे से लगाए :

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव । शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥

अब निम्न मन्त्र के द्वारा किये हुए जप को प्रभु को समर्पित कर दे :

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थिता ॥

क्षमा प्रार्थना-

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥

इस मंत्र से पूजन में हुए अपराधों के लिए क्षमा माँगे।

समर्पण-

साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया । तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥

इस मंत्र से सकल पूजन कर्म हनुमान जी को अर्पित कर दे॥

पूर्णता की प्रार्थना-

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

इस मंत्र से हनुमान जी से पूर्णता की प्रार्थना करे॥

विसर्जन-

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ! स्वस्थाने परमेश्वर । मम पूजां गृहीत्वेमां पुनरागमनाय च ॥

श्री हनुमते नमः विसर्जयामि । विसर्जनार्थे अक्षतान् पुष्पं च समर्पयामि ॥

यह मंत्र बोलकर विसर्जन कर अक्षतों और पुष्प को अर्पित करे।

अब हाथ में जल लेकर निम्न श्लोक पढ़ सकल पूजन कर्म रामदूत श्रीहनुमान् जी महाराज को समर्पित कर दे फिर उस जल को छोड़ दे :

"अनेन अस्मत्कृतेन पूजनाख्येनकर्मणा श्रीमारुतनन्दनहनुमान् प्रीयतां न मम ।"

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे तत्पश्चात् उन अक्षतों को गणेश जी आदि पर छोड़कर सभी आवाहित देवताओं का विसर्जन करे :

"यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥"

अब अपने आसन का एक कोना उठा उसके नीचे दो बूंद जल डाल दे तदनन्तर उस जल से एक बार **श्री इन्द्राय नमः** और एक बार **श्री शक्राय नमः** कहकर अपने माथे पर तिलक कर ले तदनन्तर आसन से उठकर प्रभु के चरणामृत का पान करे॥

अब निम्न मन्त्र से प्रभु का चरणोदक ग्रहण करे :

अकालमृत्युहरणं ब्रह्महत्यादिनाशनम् । सुरपादोदकं पुण्यं पिबाम्यायुर्विवर्धनम् ॥

॥ इति श्रीहनुमत् पूजन विधि ॥

उत्सव प्रकरण

श्रीहनुमान् जयन्ती पूजन

व्रत का सङ्कल्प-

श्रीहनुमान् जयन्ती के दिन प्रात:काल नित्यकर्मों से निवृत्त होकर हाथों में पुष्प, फल तथा अक्षतों सहित जल से भरा ताम्र पात्र लेकर निम्न वाक्य उच्चारित कर व्रत का सङ्कल्प करे :

अहमद्य श्रीहनुत्प्रीत्यर्थं श्रीहनुमान् जयन्ती व्रतं करिष्ये

इस प्रकार व्रत का सङ्कल्प लेकर पात्र के जल, पुष्प और अक्षतों को किसी पात्र में छोड़ दे।

मूर्ति स्थापन-

शुद्ध भूमि पर तोरण आदि से अलंकृत सुन्दर मण्डप में स्थापित की हुई सुन्दर चौकोर वेदिका के ऊपर भगवान् श्रीसीताराम जी के प्रिय भगवान् श्रीहनुमान् जी के विग्रह की स्थापना करे॥

अब पूर्वोक्त प्रकार से पवित्रीधारण, पवित्रीकरण, आचमन, आसन शुद्धिकरण तथा प्राणायाम करके निम्न वर्णित स्वस्त्ययन का पाठ करे ॥

स्वस्त्ययन-

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ।

श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्रीशचीपुरन्दराभ्यां नमः ।

श्रीमातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । श्रीइष्टदेवताभ्यो नमः । श्रीकुलदेवताभ्यो नमः ।

श्रीग्रामदेवताभ्यो नमः। श्रीवास्तुदेवताभ्यो नमः । श्रीस्थानदेवताभ्यो नमः।

श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेताय श्रीरामचन्द्राय नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः ।

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।

वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

अब पूर्वोक्त प्रकार से ही श्रीविष्णु के स्मरणपूर्वक पूजन का सङ्कल्प करे :

पूजन सङ्कल्प-

विष्णु...शर्माऽहं आदि तक पूर्ववत् बोलकर फिर आगे वर्णित अनुसार उच्चारित करे ।

“मम आत्मन: सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीहनुमत्प्रीत्यर्थं च श्रीहनुमत्पूजनं करिष्ये।”

पुनः हाथ में जल लेकर निम्न सङ्कल्प बोले :

तदङ्गत्वेन दिग्रक्षणं दीपशङ्खघण्टापूजनं निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं

सिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतिपूजनं कलशस्थापनं नवग्रहपूजनं च करिष्ये ॥

दिग्रक्षण-

बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर उसे दाएं हाथ से आच्छादित करके निम्न मन्त्रों का पाठ करे :

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥

अब उस अभिमन्त्रित सरसों को सभी दिशाओं में छिड़क दे फिर तीन बार बाईं एड़ी द्वारा पृथ्वी का ताड़न कर वाम हस्त में जल लेकर दाहिनी अनामिका से उसका नेत्रों से स्पर्श कराए।

अब भैरव नमस्कार करके दीप, शङ्ख तथा घण्टा पूजन कर महागणपति पूजन करे।

सिद्धिबुद्धिसहित श्रीमहागणपति पूजन

सर्वप्रथम भगवान् महागणपति जी फिर उनके दोनों तरफ माता सिद्धि और माता बुद्धि की स्थापना करे। अगर इनके विग्रह अथवा चित्र न हो तो ताम्बे या मिट्टी के पात्र में कुमकुम से अष्टदल कमल बनाकर उस पात्र को चावल से ऊपर तक भर दे फिर उसपर महागणपति जी की स्थापना के लिए एक सुपारी में कलावा लपेट कर उसको स्थापित करे फिर उसके बाएँ तथा दाएँ भाग में दोनों देवियों की स्थानपा के लिये एक-एक सुपारी स्थापित करे और इन्ही पर श्रीमहागणपति का माता सिद्धि तथा माता बुद्धि के साथ आवाहन कर उनका पूजन करे॥

ध्यान-

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढं त्रिनेत्रं

पाशं चैवाङ्कुशाख्यं परशुमभयदं बाहुभिर्धारयन्तम्।

शक्त्या युक्तं गजास्यं पृथुतरजठरं सिद्धिबुद्धिसमेतं

रक्तं चन्द्रार्धमौलिं सकलभयहरं विघ्नराजं नमामि ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

आवाहन-

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।

माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

सिद्धिबुद्धिसहितं श्रीमन्महागणाधिपतिम् आवाहयामि । आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

आसन-

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित ! ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इस प्रकार प्रत्येक उपचार के मन्त्र साथ **सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतिये नमः।** उच्चारित करे तथा इसके साथ ही **पाद्यं समर्पयामि॥** आदि भी पूर्ववत् ही उच्चारित करे॥

पाद्य-

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम् । विघ्नराज ! गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल ! ॥

अर्घ्य-

गणाध्यक्ष ! नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर ! । अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम् ॥

आचमन-

विनायक ! नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित ! । गङ्गोदकेन देवेश ! कुरुष्वाचमनं प्रभो ! ॥

स्नान-

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

दुग्ध स्नान-

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

दधि स्नान-

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

घृत स्नान-

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

मधु स्नान-

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

शर्करा स्नान-

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् । मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

पञ्चामृत स्नान-

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

गन्धोदक स्नान-

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम् । इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम् ॥

अभिषेक-

अब आगे वर्णित स्तोत्र से प्रभु जी का अभिषेक करे।

श्रीसङ्कष्टनाशन गणेश स्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् । भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् । तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च । सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् । एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः । न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् । पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् । संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् । तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

शुद्धोदक स्नान-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम् । समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

वस्त्र-

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

उपवस्त्र-

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति । उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ॥

यज्ञोपवीत-

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

चन्दन-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

अब प्रभु को अक्षत अर्पित करे।

अक्षत-

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

पुष्प तथा पुष्पमाला-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

अङ्ग पूजन-

1. गणेश्वराय नमः, पादौ पूजयामि । 2. विघ्नराजाय नमः, जानुनी पूजयामि ।

3. आखुवाहनाय नमः, ऊरू पूजयामि । 4. हेरम्बाय नमः, कटिं पूजयामि ।

5. कामारिसूनवे नमः, नाभिं पूजयामि । 6. लम्बोदराय नमः, उदरं पूजयामि ।

7. गौरीसुताय नमः, स्तनौ पूजयामि । 8. गणनायकाय नमः, हृदयं पूजयामि ।

9. स्थूलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि । 10. स्कन्दाग्रजाय नमः, स्कन्धौ पूजयामि ।

11. पाशहस्ताय नमः, हस्तौ पूजयामि । 12. गजवक्त्राय नमः, वक्त्रं पूजयामि ।

13. विघ्नहर्त्रे नमः, ललाटं पूजयामि । 14. सर्वेश्वराय नमः, शिरः पूजयामि ।

15. गणाधिपाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ॥

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् । शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

परिमल द्रव्य-

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

अब प्रभु को सुगन्धित तेल तथा इत्र अर्पित करे।

सुगन्धित तेल तथा इत्र-

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च । मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तम: । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च । आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

पूर्वापोशानादि-

पूर्वापोशानं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशानं समर्पयामि।

हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि॥

करोद्वर्तन-

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् । करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥

फल-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

ताम्बूल-

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

अब प्रभु की आरती करे।

आरार्तिक्य-

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् । आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

पुष्पाञ्जलि-

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥

विशेषार्घ्य-

अब एक ताम्रपात्र में जल लेकर उसमें चन्दन, अक्षत, पुष्प तथा द्रव्य को डाल ले तदुपरान्त उसके ऊपर नारियल रख कर दोनो हाथों से ताम्र पात्र पकड़कर निम्न मन्त्रों द्वारा प्रभु को विशेषार्घ्य समर्पित करे :

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥

अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ॥

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय सुखदाय सुरेश्वराय ।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नम:। नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ।

विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥

अब हाथ में जल लेकर निम्न वर्णित मन्त्र का उच्चारण कर सकल पूजनकर्म भगवान् श्रीमहागणपति जी को समर्पित कर दे :

अनेन कृतपूजनेन सिद्धिबुद्धिसहितः श्रीमहागणपति: प्रीयतां न मम ॥

॥ इति सिद्धिबुद्धिसहित श्रीमहागणपति पूजन विधि॥

श्रीगणेश स्तुति

गाइये गनपति जगबंदन । संकर-सुवन भवानी-नंदन ॥ १ ॥

सिद्धि-सदन, गज-बदन, बिनायक । कृपा-सिंधु, सुंदर, सब-लायक ॥ २ ॥

मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता । बिद्या-बारिधि, बुद्धि-बिधाता ॥ ३ ॥

माँगत तुलसिदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥ ४ ॥

भावार्थ- सम्पूर्ण जगत् के वन्दनीय, गणों के स्वामी श्री गणेश जी का गुणगान कीजिये, जो श्रीशिव-पार्वती जी के पुत्र और उनको प्रसन्न करनेवाले हैं। जो सिद्धियों के स्थान हैं, जिनका हाथी का-सा मुख है, जो समस्त विघ्नों के नायक हैं, कृपा के समुद्र हैं, सुन्दर हैं, सब प्रकार से योग्य हैं। जिन्हें मोदक बहुत प्रिय है, जो आनन्द और कल्याण को देनेवाले हैं, विद्या के अथाह सागर हैं, बुद्धि के विधाता हैं। ऐसे भगवान् श्रीगणेश जी से यह तुलसीदास हाथ जोड़कर केवल यही वर माँगता है कि मेरे मन मन्दिर में भगवान् श्रीसीताराम जी सर्वदा निवास करें॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज कृता विनय पत्रिका से समुद्धृत

कलश स्थापन-

सर्वप्रथम कलश स्थापित किये जानेवाली भूमि पर कुंकुम के द्वारा अष्टदल कमल बना ले तत्पश्चात् निम्न वर्णित विधि के अनुसार कलश स्थापित करे।

भूमि स्पर्श-

विश्वाधाराऽसि धरणि शेषनागोपरि स्थिता । उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥

इस मन्त्र से अष्टदलकमल बनाई हुई भूमि का स्पर्श करे।

यव प्रक्षेप-

यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः ।

प्राणिनां जीवनोपायस्त्वां भूमौ स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से उस भूमि पर यव स्थापित करे। यव न हों तो अक्षत स्थापित करे।

कलश स्थापन-

हेमरूप्यादिसम्भूतं ताम्रजं सुदृढं नवम् । अच्छिद्रं धौतकल्माषं कलशं स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से यवों के ऊपर कलश स्थापित करे।

कलश में जलपूरण-

जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्परम् । बीजं सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में जल भर दे।

चन्दन प्रक्षेप-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुगन्धाय कलशे प्रक्षिपाम्याहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में चन्दन डाल दे।

अब आगे वर्णित मन्त्र से कलश में धान्य डाले।

धान्य प्रक्षेप-

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम् । बलप्रदां तु सर्वेषां कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में धान्य डाल दे।

सर्वौषधी प्रक्षेप-

ओषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः । दूर्वासर्षपसंयुक्ताः कलशे ताः प्रक्षिपाम्याहम्॥

इस मन्त्र से कलश में सर्वौषधि अर्थात्- मुरा, जटामांसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी और दारूहल्दी, सटी (कचूर), चम्पक तथा मुस्ता को दूर्वा तथा सरसों सहित डाल दे।

दूर्वा प्रक्षेप-

दूर्वां ह्यमृतसम्पन्नां शतमूलां शताङ्कुराम् । शतं पातकसंहन्त्रीं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में दूर्वा डाल दे।

पञ्चपल्लव-

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चैतान् पल्लवानस्मिन्कलशे स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में पञ्चपल्लव अर्थात् बरगद, गूलर, पीपल, आम और पाकड़ के पत्ते दे।

सप्तमृत्तिका-

अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद् हृदात् ।

राजस्थानाच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥

इस मन्त्र से कलश में सप्तमृत्तिका अर्थात् घुड़साल, हाथीसाल, बाँबी, नदियों के संगम, तालाब, राजा के द्वार तथा गोशाला की मिट्टी डाल दे।

पूगीफल-

पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापनाशनम् । पुत्रपौत्रादिफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में सुपारी डाल दे।

पञ्चरत्न-

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् । एतानि पञ्चरत्नानि कलशे प्रक्षिपाम्यहम्॥

इस मन्त्र से कलश में पञ्चरत्न अर्थात् सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम डाल दे।

हिरण्य-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में स्वर्ण डाल दे।

पंचरत्नों के अभाव में आधा कर्ष अर्थात् लगभग ८ ग्राम स्वर्ण कलश में डाल दे। यदि स्वर्ण भी न हो तो गोघृत को ही डाल दे। पंचरत्नों के बाद कलश में जो स्वर्ण डाला जाता है उसके अभाव में भी गोघृत ही डाल दे ॥

कलशवेष्टनम्-

सूत्रं कार्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा । येन बद्धं जगत्तेन कलशं वेष्टयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश को कण्ठ में रक्त सूत्र से वेष्टित करे।

कलश के ऊपर धान्य से भरा हुआ पूर्णपात्र स्थापित करे-

पिधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थसाधनम् । सम्पूर्णः कलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि ॥

इस मन्त्र से धान्य से भरे हुए पूर्णपात्र को कलश के ऊपर स्थापित करे।

पूर्णपात्र के ऊपर नारियल रखे-

श्रीफलं तु शुभं प्रोक्तं सर्वकार्यप्रसाधनम् । लक्ष्मीदं फलदं शुद्धं कलशे स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश के ऊपर लाल कपड़ा तथा कलावा लपेटे हुए नारियल को रखे।

अब आगे वर्णित विधि से कलश में श्रीवरुण देव जी का पूजन करे।

निम्न वर्णित विधि से श्रीवरुण देव जी का पञ्चोपचारों से पूजन करे।

वरुण देव का आवाहन-

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥
अपाम्पतये वरुणाय नमः । अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं
सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि, स्थापयामि ॥

अब निम्न मन्त्रों के द्वारा वरुण देव का पूजन करे :

अपाम्पतये वरुणाय नमः । चन्दनं समर्पयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः । पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः। दीपं दर्शयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ॥

अब अनामिका अँगुली से कलश का स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्रों के द्वारा कलश में तीर्थों आदि का आवाहन करे :

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

अब निम्न वर्णित विधि से वरुणादि आवाहित देवताओं का पूजन करे-

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। स्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। वस्त्रं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। यज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। उपवस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। चन्दनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। अक्षतान् समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। धूपमाघ्रापयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। दीपं दर्शयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। नैवेद्यं निवेदयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पूर्वापोशानं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि।

उत्तरापोशानं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। करोद्वर्तनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। ताम्बूलं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । आरार्तिक्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। नमस्कारान् समर्पयामि ॥

अब निम्न मन्त्रों से कलश की प्रार्थना करे :

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः । आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ।

सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।

सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥

अब हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य का उच्चारण कर समस्त पूजन कर्म वरुण देव को समर्पित कर दे फिर जल छोड़ दे :

अनेन अस्मद्कृतेन कलशे पूजनाख्येनकर्मणा वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम ॥

॥ इति श्री कलश स्थापन विधि ॥

धर्मारण्य के ब्राह्मणों द्वारा श्रीहनुमान् जी की स्तुति

नमः श्रीरामभक्ताय अक्षविध्वंसनाय च । नमो रक्षःपुरीदाहकारिणे वज्रधारिणे ॥

नमो ब्राह्मणदेवाय वायुपुत्राय ते नमः । नमोऽस्तु रामभक्ताय गोब्राह्मणहिताय च॥

नमोऽस्तु रुद्ररूपाय कृष्णवक्त्राय ते नमः । अञ्जनीसूनवे नित्यं सर्वव्याधिहराय च ॥

नागयज्ञोपवीताय प्रबलाय नमोऽस्तु ते । स्वयं समुद्रतीर्णाय सेतुबन्धनकारिणे ॥

आप श्रीराम जी के भक्त और अक्षकुमार के प्राणों को हरनेवाले हैं आपको नमस्कार है। राक्षसराज रावण की लंकापुरी को जलानेवाले तथा वज्रधारी आपको प्रणाम है। ब्राह्मणों के लिये देवरूप आपको नमस्कार है। वायुनन्दन को प्रणाम है। श्रीराम जी के भक्त तथा गौओं और ब्राह्मणों के हितकारी आपको नमस्कार है। आप रुद्र स्वरूप हैं, आपका मुख कृष्णवर्ण का है, आप सम्पूर्ण व्याधियों का नित्य विनाश करते रहते हैं, अञ्जनानन्दन ! आपको अभिवादन है। जिन्होंने नाग को यज्ञोपवीत के रूपमें धारण कर रखा है, जो स्वयं ही समुद्र को लाँघ जानेवाले और सेतुबन्धके कार्यके सहयोगी हैं, उन महाबली हनुमान् जी को नमस्कार है॥

श्रीस्कन्द महापुराण, ब्रह्मखण्ड, धर्मारण्य माहात्म्य से समुद्धृत

नवग्रह पूजन

ग्रहों की स्थापना करने के लिये एक चौकी पर निम्न चित्र के अनुसार चार खड़ी पाइयों और चार पड़ी पाइयों का एक चौकोर मण्डल बनाये। इस प्रकार नौ कोष्ठक बन जायेंगे। तत्पश्चात् बीच वाले कोष्ठक में सूर्य, अग्नि कोण में चन्द्र, दक्षिण में मंगल, ईशान कोण में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैर्ऋत्य कोण में राहु और वायव्य कोण में केतु की चित्र में लिखे रंगों तथा बने आकारों के अनुरूप रंगों के ही आकार बनाकर ग्रहों की स्थापना करे।

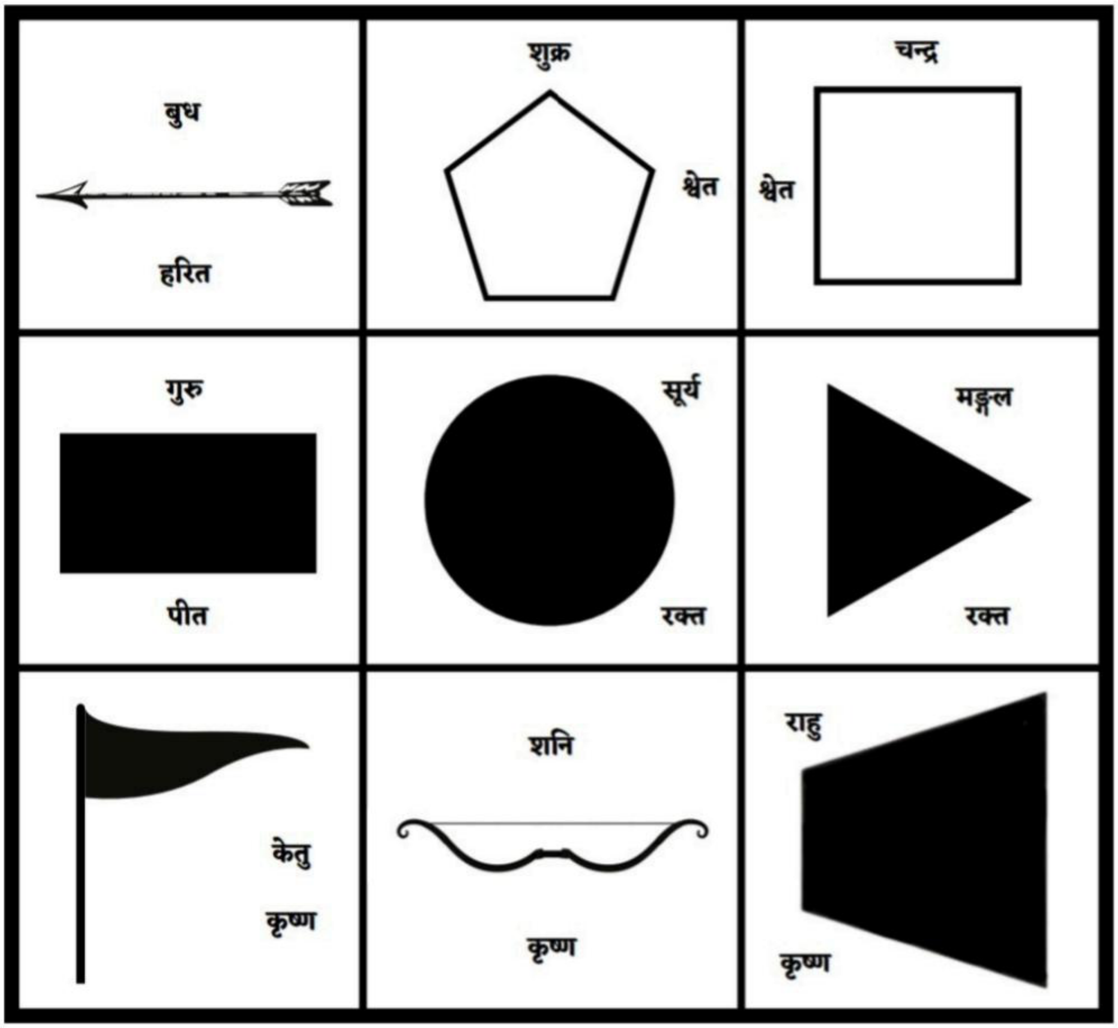

अब आगे वर्णित मन्त्रों द्वारा नवग्रहों का आवाहन कर उनका पूजन करे।

सूर्य (मध्य में, लाल गोलाकार)

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि, स्थापयामि ॥

चन्द्र (अग्निकोण में, श्वेत चतुष्कोण)

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

सोमाय नमः। सोममावाहयामि, स्थापयामि ॥

मङ्गल (दक्षिण में, लाल त्रिकोण)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥

अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

भौमाय नमः । भौममावाहयामि, स्थापयामि ॥

बुध (ईशानकोण में, हरा बाण)

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

बुधाय नमः । बुधमावाहयामि, स्थापयामि ॥

बृहस्पति (उत्तर में, पीला दीर्घचतुरस्र)

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् । बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

बृहस्पतये नमः । बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि ॥

शुक्र (पूर्व में, श्वेत पञ्चकोण)

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

शुक्राय नमः। शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि ॥

शनि (पश्चिम में, काला धनुष)

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

शनैश्चराय नमः। शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि ॥

राहु (नैर्ऋत्यकोण में, काला सूर्पाकार)

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

राहवे नमः। राहुमावाहयामि, स्थापयामि ॥

केतु (वायव्यकोण में, कृष्ण ध्वजा)

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

केतवे नमः। केतुमावाहयामि, स्थापयामि ॥

अब **“आवाहितसूर्यादिनवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः”** इस मन्त्र

से नवग्रहों का पञ्चोपचार आदि के द्वारा पूजन करे।

अब निम्न मन्त्रों द्वारा प्रार्थना करे:

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।

गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः

सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ।

राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं नित्यं

प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ॥

अब हाथ में जल लेकर **"अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम"** यह वाक्य उच्चारित कर सकल पूजन कर्म नवग्रहों को समर्पित कर दे॥ **नारायण..**

॥ इति श्रीनवग्रह पूजन ॥

सूर्य-स्तुति

दीन-दयालु दिवाकर देवा । कर मुनि, मनुज, सुरासुर सेवा ॥ १ ॥

हिम-तम-करि-केहरि करमाली । दहन दोष-दुख-दुरित-रुजाली ॥ २ ॥

कोक-कोकनद-लोक-प्रकासी । तेज-प्रताप-रूप-रस-रासी ॥ ३ ॥

सारथि-पंगु, दिब्य रथ-गामी । हरि-संकर-बिधि-मूरति स्वामी ॥ ४ ॥

बेद-पुरान प्रगट जस जागै । तुलसी राम-भगति बर माँगै ॥ ५ ॥

भावार्थ- हे दीनदयालु भगवान् सूर्य ! मुनि, मनुष्य, देवता और राक्षस सभी आपकी सेवा करते हैं ॥१॥ आप पाले और अन्धकाररूपी हाथियों को मारनेवाले सिंह हैं; किरणों की माला पहने रहते हैं; दोष, दुःख, दुराचार और रोगों को भस्म कर डालते हैं ॥२॥ रात के बिछुड़े हुए चकवा-चकवियों को मिलाकर प्रसन्न करनेवाले, कमल को खिलानेवाले तथा समस्त लोकों को प्रकाशित करनेवाले हैं। तेज, प्रताप, रूप और रस की आप खानि हैं ॥३॥ आप दिव्य रथ पर चलते हैं, आपका सारथी पंगु है। हे स्वामी ! आप विष्णु, शिव और ब्रह्मा स्वरूप हैं ॥४॥ वेद-पुराणों में आपकी कीर्ति जगमगा रही है। तुलसीदास आपसे रामभक्ति का वर माँगता है॥५॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज कृता विनय पत्रिका से समुद्धृत

श्रीहनुमान् जयन्ती पूजन

अब पूर्वोक्त विधि के अनुसार ही श्रीहनुमान् जी महाराज का पूजन करे। पूजन पूर्ण होने के बाद कीर्तन, सुन्दरकाण्ड का पाठ, श्रीराम नाम का जप आदि करता हुआ समय व्यतीत करे फिर अगले दिवस प्रातःकाल स्नान आदि अपने सभी नित्य कर्मों का सम्पादन करके श्रीहनुमान् जी महाराज का विधिवत् पूजन करे तदनन्तर ब्राह्मणों को वस्त्राभूषण आदि देकर उनका पूजन करे तदनन्तर उन्हें भोजन कराकर फिर उन्हें अपनी क्षमता अनुसार उचित दक्षिणा देकर फिर अपने व्रत का पारण करे ॥

॥ इति श्रीहनुमान् जयन्ती पूजन विधि ॥

श्रीहनुमत् जन्म रहस्य

जब अग्नि देव ने स्वयं प्रकट होकर राजा दशरथ को उनको पुत्र प्राप्ति कराने वाली खीर दी तब राजा ने वह खीर लेकर अपनी तीनों पत्नियों में बाँट दी। उसी समय कैकेयी के भाग को एक गृध्री यह सोचकर कि यदि इसको मैं ले जाऊंगी तो मेरा शाप छूट जायगा, इस स्वार्थ से उनके भाग की खीर छीन ले गयी। एक समय सुवर्चा नाम की एक अप्सरा को उसके किसी अपराध के कारण ब्रह्मा जी ने गृध्री होने का शाप दे दिया था तब फिर जब उसने स्तुति करके ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया। तब ब्रह्मा जी ने कहा कि जब तुम राजा दशरथ की पत्नी कैकेयी के भाग की खीर को उनसे छीनकर अंजनिपर्वत पर फेंकोगी, तब तुम्हारा श्राप नष्ट हो जाएगा और तुम पुनः अप्सरा हो जाओगी। इसी कारण उस गृध्री ने कैकेयी से खीर लेकर अंजनिगिरि पर डाल दी, जिससे वह पुनः अप्सरा होकर स्वर्ग लोक को चली गयी। उस खीर के भाग को वानरराज केसरी की पत्नी अंजना ने खा लिया जिससे श्रीहनुमान् जी महाराज उत्पन्न हुए॥

आनन्द रामायण, सारकाण्ड से समुद्धृत

स्तोत्र प्रकरण

श्रीहनुमत् पञ्चरत्नम्

वीताखिलविषयेच्छं जातानन्दाश्रुपुलकमत्यच्छम् ।

सीतापतिदूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ॥ १॥

तरुणारुणमुखकमलं करुणारसपूरपूरितापाङ्गम् ।

सञ्जीवनमाशासे मञ्जुलमहिमानमञ्जनाभाग्यम् ॥ २॥

शम्बरवैरिशरातिगमम्बुजदलविपुललोचनोदारम् ।

कम्बुगलमनिलदिष्टं बिम्बज्वलितोष्ठमेकमवलम्बे ॥ ३॥

दूरीकृतसीतार्तिः प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्तिः ।

दारितदशमुखकीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः ॥ ४॥

वानरनिकराध्यक्षं दानवकुलकुमुदरविकरसदृक्षम् ।

दीनजनावनदीक्षं पवनतपःपाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥ ५॥

एतत् पवनसुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम् ।

चिरमिह निखिलान्भोगान्भुङ्क्त्वा श्रीरामभक्तिभाग्भवति ॥ ६॥

॥ इति श्रीआद्यशङ्कराचार्यकृतं हनुमत्पञ्चरत्नस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

बड़भागी हनुमान्

हनूमान सम नहिं बड़भागी। नहिं कोउ राम चरन अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

भगवान् श्रीशिव जी ने भगवती माता श्रीपार्वती जी से कहा - हे गिरिजे ! हनुमान् के समान न तो कोई बड़भागी है और न कोई उनके समान भगवान् श्रीराम जी के चरणों का प्रेमी ही है, जिनके प्रेम तथा सेवा की स्वयं श्रीभगवान् ने अपने श्रीमुख से बार-बार बड़ाई करी है ॥

श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड से समुद्धृत

श्रीविभीषणकृतं श्रीहनुमत्स्तोत्रम्

नमो हनुमते तुभ्यं नमो मारुतसूनवे । नमः श्रीरामभक्ताय श्यामास्याय च ते नमः ॥१॥

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे । लङ्काविदाहनार्थाय हेलासागरतारिणे ॥२॥

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च । रावणान्तकुलच्छेदकारिणे ते नमो नमः ॥३॥

मेघनादमखध्वंसकारिणे ते नमो नमः । अशोकवनविध्वंसकारिणे भयहारिणे ॥४॥

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने । वनपालशिरश्छेदलङ्काप्रासादभञ्जिने ॥५॥

ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे । सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥६॥

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मपाशनिवारिणे । लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिघातक्षतविनाशिने ॥७॥

रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय च ते नमः । ऋक्षवानरवीरौघप्राणदाय नमो नमः ॥८॥

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः । विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः ॥९॥

महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे । परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥१०॥

पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः । बालार्कमण्डलग्रासकारिणे भवतारिणे ॥११॥

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च । रिपुमायाविनाशाय रामाज्ञालोकरक्षिणे ॥१२॥

प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिने । करालशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः ॥१३॥

बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च । विहङ्गमाय सर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥१४॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च । दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने ॥१५॥

कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च ।
स्वाम्याज्ञापार्थसङ्ग्रामसङ्ख्ये सञ्जयधारिणे ॥१६॥

भक्तान्तदिव्यवादेषु सङ्ग्रामे जयदायिने । किल्किलाबुबुकोच्चारघोरशब्दकराय च ॥१७॥

सर्पाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे वनचारिणे । सदा वनफलाहारसन्तृप्ताय विशेषतः ॥१८॥

महार्णवशिलाबद्धसेतुबन्धाय ते नमः । वादे विवादे सङ्ग्रामे भये घोरे महावने ॥१९॥

सिंहव्याघ्रादिचौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद् भयं न हि ।

दिव्ये भूतभये व्याधौ विषे स्थावरजङ्गमे ॥ २०॥

राजशस्त्रभये चोग्रे तथा ग्रहभयेषु च । जले सर्वे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राणसम्प्लवे ॥२१॥

पठेत् स्तोत्रं प्रमुच्येत भयेभ्यः सर्वतो नरः ।

तस्य क्वापि भयं नास्ति हनुमत्स्तवपाठतः ॥२२॥

सर्वदा वै त्रिकालं च पठनीयमिदं स्तवम् ।

सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥२३॥

विभीषणकृतं स्तोत्रं तार्क्ष्येण समुदीरितम् ।

ये पठिष्यन्ति भक्त्या वै सिद्धयस्तत्करे स्थिताः ॥२४॥

॥ इति श्रीसुदर्शनसंहितायां श्रीविभीषणकृतं श्रीहनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीमारुति कवच

सनत्कुमार उवाच-

कार्तवीर्यस्य कवचं कथितं ते मुनीश्वर । मोहविध्वंसनं जैत्रं मारुतेः कवचं शृणु ॥१॥

यस्य सन्धारणात्सद्यः सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः । भूतप्रेतारिजं दुःखं नाशमेति न संशयः ॥२॥

एकदाहं गतो द्रष्टुं रामं रमयतां वरम् । आनन्दवनिकासंस्थं ध्यायन्तं स्वात्मनः पदम् ॥३॥

तत्र रामं रमानाथं पूजितं त्रिदशेश्वरैः । नमस्कृत्य तदादिष्टमासनं स्थितवान् पुरः ॥४॥

तत्र सर्वं मया वृत्तं रावणस्य वधान्तकम् । पृष्टं प्रोवाच राजेन्द्रः श्रीरामः स्वयमादरात् ॥५॥

ततः कथान्ते भगवान्मारुतेः कवचं ददौ। मह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि न प्रकाश्यं हि कुत्रचित् ॥६॥

भविष्यदेतन्निर्दिष्टं बालभावेन नारद । श्रीरामेणाञ्जनासूनोर्भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥७॥

कवचम्-

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः । पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः सौम्ये सागरतारकः ॥८॥

ऊर्ध्वं पातु कपिश्रेष्ठः केसरिप्रियनन्दनः । अधस्ताद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्ये च पावनिः ॥९॥

लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्। सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः॥१०॥

भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् । नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः ॥११॥

कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः। नासाग्रमञ्जनासूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः ॥१२॥

पातु कण्ठं तु दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरारिजित्।

भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः॥१३॥

नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः । वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः ॥१४॥

लङ्कानिभर्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ।

नाभिं श्रीरामभक्तस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः ॥१५॥

गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी अतिथिप्रियः ।

ऊरू च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः ॥१६॥

जङ्घे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः ।

अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः ॥१७॥

अङ्गानि पातु सत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीः सदा ।

मुखाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ॥१८॥

दिवारात्रौ त्रिलोकेषु सदागतिसुतोऽवतु । स्थितं व्रजन्तमासीनं पिबन्तं जक्षतं कपिः ॥१९॥

लोकोत्तरगुणः श्रीमान् पातु त्र्यम्बकसम्भवः । प्रमत्तमप्रमत्तं वा शयानं गहनेऽम्बुनि ॥२०॥

स्थलेऽन्तरिक्षे ह्यग्नौ वा पर्वते सागरे द्रुमे । सङ्ग्रामे सङ्कटे घोरे विराड् रूपधरोऽवतु ॥२१॥

डाकिनीशाकिनीमारीकालरात्रिमरीचिकाः ।

शयानं मां विभुः पातु पिशाचोरगराक्षसीः ॥२२॥

दिव्यदेहधरो धीमान्सर्वसत्त्वभयङ्करः ।

साधकेन्द्रावनः शश्वत्पातु सर्वत एव माम् ॥२३॥

यद्रूपं भीषणं दृष्ट्वा पलायन्ते भयानकाः ।

स सर्वरूपः सर्वज्ञः सृष्टिस्थितिकरोऽवतु ॥२४॥

स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः साक्षाद्देवो महेश्वरः ।

सूर्यमण्डलगः श्रीदः पातु कालत्रयेऽपि माम् ॥२५॥

यस्य शब्दमुपाकर्ण्य दैत्यदानवराक्षसाः ।

देवा मनुष्यास्तिर्यञ्चः स्थावरा जङ्गमास्तथा ॥२६॥

सभया भयनिर्मुक्ता भवन्ति स्वकृतानुगाः ।

यस्यानेककथाः पुण्याः श्रूयन्ते प्रतिकल्पके ॥२७॥

सोऽवतात्साधकश्रेष्ठं सदा रामपरायणः ।

वैधात्रधातृप्रभृति यत्किञ्चिद्दृश्यतेऽत्यलम् ॥२८॥

विद्धि व्याप्तं यथा कीशरूपेणानञ्जनेन तत् ।

यो विभुः सोऽहमेषोऽहं स्वीयः स्वयमणुर्बृहत् ॥२९॥

ऋग्यजुःसामरूपश्च प्रणवस्त्रिवृदध्वरः ।

तस्मै स्वस्मै च सर्वस्मै नतोऽस्म्यात्मसमाधिना ॥३०॥

अनेकानन्तब्रह्माण्डधृते ब्रह्मस्वरूपिणे । समीरणात्मने तस्मै नतोऽस्म्यात्मस्वरूपिणे ॥३१॥

नमो हनुमते तस्मै नमो मारुतसूनवे । नमः श्रीरामभक्ताय श्यामाय महते नमः ॥३२॥

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे । लङ्काविदहनायाथ महासागरतारिणे ॥३३॥

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च । रावणान्तनिदानाय नमः सर्वोत्तरात्मने ॥३४॥

मेघनादमखध्वंसकारणाय नमो नमः । अशोकवनविध्वंसकारिणे जयदायिने ॥३५॥

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने । वनपालशिरश्छेत्रे लङ्काप्रासादभञ्जिने ॥३६॥

ज्वलत्काञ्चनवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे । सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥३७॥

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मशस्त्रनिवारिणे । लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिजातक्षतविनाशिने ॥३८॥

रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः । ऋक्षवानरवीरौघप्रसादाय नमो नमः ॥३९॥

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः । विषघ्नाय द्विषघ्नाय भयघ्नाय नमो नमः ॥४०॥

महारिपुभयघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे । परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥४१॥

पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः । बालार्कमण्डलग्रासकारिणे दुःखहारिणे ॥४२॥

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च । विहङ्गमाय शर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥४३॥

प्रतिग्रामस्थितायाथ भूतप्रेतवधार्थिने । करस्थशैलशस्त्राय रामशस्त्राय ते नमः ॥४४॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च । दक्षिणाशाभास्कराय सतां चन्द्रोदयात्मने ॥४५॥

कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च ।

स्वाम्याज्ञापार्थसङ्ग्रामसख्यसञ्जयकारिणे ॥४६॥

भक्तानां दिव्यवादेषु सङ्ग्रामे जयकारिणे । किल्किलाबुबुकाराय घोरशब्दकराय च ॥४७॥

सर्वाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे भयहारिणे । सदा वनफलाहारसन्तृप्ताय विशेषतः ॥४८॥

महार्णवशिलाबद्धसेतुबन्धाय ते नमः । इत्येतत्कथितं विप्र मारुतेः कवचं शिवम् ॥४९॥

यस्मै कस्मै न दातव्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः । अष्टगन्धैर्विलिख्याथ कवचं धारयेत्तु यः ॥५०॥

कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ जयस्तस्य पदे पदे । किं पुनर्बहुनोक्तेन साधितलक्षमादरात् ॥५१॥

प्रजप्तमेतत्कवचमसाध्यं चापि साधयेत् ॥ ५२॥

॥ इति श्रीमारुति कवचं सम्पूर्णम् ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥२ ॥

अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥३ ॥

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो ॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ॥

आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥५ ॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥६ ॥

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥७ ॥

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥८ ॥

दोहा- लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

॥ इति श्रीसंकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

श्रीहनुमान चालीसा

दोहा-

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।

बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।

बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई-

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥

राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥

संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लषन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

दोहा- पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ इति श्रीहनुमान चालीसा सम्पूर्ण॥

कपिदल प्राणरक्षक हनुमान्

आयो हनुमानु, प्रानहेतु अंकमाल देत, लेत पगधूरि एक, चूमत लँगूल हैं।

एक बूझैं बार-बार सीय-समाचार, कहें पवनकुमारु, भो बिगतश्रम-सूल हैं॥

एक भूखे जानि, आगें आनैं कंद-मूल-फल, एक पूजैं बाहु बलमूल तोरि फूल हैं।

एक कहैं 'तुलसी' सकल सिधि ताकें, जाकें कृपा-पाथनाथ सीतानाथु सानुकूल हैं॥

अपने प्राणों की रक्षा करनेवाले श्रीहनुमान् जी महाराज को आया देख कोई उनसे गले लगकर मिलते हैं, कोई चरणधूलि लेते हैं। कोई पूँछ चूमते हैं, कोई बार-बार श्रीजानकी जी के समाचार पूछते हैं। जिन्हें कहने ही से श्रीहनुमान् जी महाराज की सारी थकावट और व्यथा जाती रही। कोई हनुमान् जी को भूखे जान उनके आगे कन्द-मूल और फल लाकर रख देते हैं। कोई फूल तोड़कर हनुमान् जी की बलशालिनी भुजाओं का पूजन करते हैं। कोई कहते हैं कि कृपासिंधु सीतानाथ भगवान् श्रीराम जी जिसके ऊपर अनुकूल हैं, उसके सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज कृता कवितावली से समुद्धृत

श्रीबजरंग बाण

दोहा- निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान ।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

चौपाई-

जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥

जन के काज विलम्ब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥

जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा । सुरसा बदन पैठि विस्तारा ॥

आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका ॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥

बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा । अति आतुर यम कातर तोरा ॥

अक्षय कुमार को मारि सँहारा । लूम लपेटि लंक को जारा ॥

लाह समान लंक जरि गई । जै जै धुनि सुर पुर में भई ॥

अब विलंब केहि कारण स्वामी । कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर होइ दुख करहु निपाता ॥

जै गिरिधर जै जै सुख सागर । सुर समूह समरथ भट नागर ॥

औं हनु-हनु-हनु हनुमंत हठीले । बैरिहि मारु बज्र के कीलै ॥

गदा बज्र लै बैरिहि मारो । महाराज निज दास उबारो ॥

सुनि हंकार हुँकार दै धावो । बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥

औं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा । औं हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥

सत्य होहु हरि शपथ पायके । राम दूत धरु मारु धायके ॥

जै जै जै हनुमन्त अगाधा । दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥

पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं ॥
पाँय परौं कर जोरि मनावौं । अपने काज लागि गुण गावौं ॥
जय अंजनि कुमार बलवन्ता । शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर । अग्नि वैताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की । राखु नाथ मर्जाद नाम की ॥
जनकसुतापति-दास कहावौ । ताकी शपथ विलम्ब न लावौ ॥
जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ॥
चरन पकरि कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई । पायँ परौं कर जोरि मनाई ॥
औं चं चं चं चं चपल चलन्ता । औं हनु हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥
औं हं हं हांक देत कपि चंचल । औं सं सं सहमि पराने खलदल ॥
अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होत आनन्द हमारो ॥
ताते विनती करौं पुकारी । हरहु सकल प्रभु विपति हमारी ॥
ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा । कस न हरहु दुःख संकट मोरा ॥
हे बजरंग बाण सम धावो । मेटि सकल दुःख दरस दिखावो ॥
हे कपिराज काज कब ऐहौ । अवसर चूकि अन्त पछितैहौ ॥
जन की लाज जात यहि बारा । धावहु हे कपि पवनकुमारा ॥
जयति जयति जय जय हनुमाना । जयति जयति गुणज्ञाननिधाना ॥
जयति जयति जय जय कपिराई । जयति जयति जय जय सुखदाई ॥
जयति जयति जय राम पियारे । जयति जयति जय सिया दुलारे ॥

जयति जयति मुद मंगलदाता । जयति जयति त्रिभुवन विख्याता ॥

यहि प्रकार गावत गुण शेषा । पावत पार नहीं लवलेषा ॥

राम रूप सर्वत्र समाना । देखत रहत सदा हर्षाना ॥

विधि शारदा सहित दिनराती । गावत कपि के गुण गण पाती ॥

तुम सम नही जगत बलवाना । करि विचार देखेउँ विधि नाना ॥

यह जिय जानि शरण तव आई । ताते विनय करौं चित लाई ॥

सुनि कपि आरत वचन हमारे । मेटहु सकल दुःख भ्रम सारे ॥

यहि प्रकार विनती कपि केरी । जो जन करै लहै सुख ढेरी ॥

याके पढ़त वीर हनुमाना । धावत बाण तुल्य बलवाना ॥

मेटत आए दुःख क्षण माहीं । दै दर्शन रघुपति ढिग जाहीं ॥

पाठ करै बजरंग बाण की । हनुमत रक्षा करै प्राण की ॥

डीठ मूठ टोनादिक नासै । परकृत यंत्र मंत्र नहीं त्रासै ॥

भैरवादि सुर करैं मिताई । आयसु मानि करैं सेवकाई ॥

प्रण करि पाठ करै मन लाई । अल्प-मृत्यु ग्रह दोष नसाई ॥

आवृति ग्यारह प्रतिदिन जापै । ताकी छाँह काल नहिं चाँपै ॥

दै गूगल की धूप हमेशा । करै पाठ तन मिटै कलेशा ॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै । ताहि कहौ फिर कौन उबारै ॥

शत्रु समूह मिटै सब आपै । देखत ताहि सुरासुर काँपै ॥

तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई । रहै सदा कपिराज सहाई ॥

दोहा- प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै सदा धरै उर ध्यान ॥

तेहि के कारज तुरत ही सिद्ध करैं हनुमान ॥

॥ इति श्रीबजरंगबाण सम्पूर्ण ॥

श्रीहनुमान साठिका

चौपाई-

जय जय जय हनुमान अडंगी । महावीर विक्रम बजरंगी॥

जय कपीश जय पवनकुमारा । जय जगबंदन शील अगारा॥

जय आदित्य अमर अविकारी । अरिमरदन जय जय गिरिधारी॥

अंजनिउदर जन्म तुम लीन्हा । जय-जयकार देवतन कीन्हा॥

बाजै दुन्दुभि गगन गँभीरा । सुर मन हर्ष असुर मन पीरा॥

कपि के डर गढ़ लंक सकानी । छूटी बन्दि देवतन जानी॥

ऋषि-समूह निकट चलि आये । पवनतनय के पद सिर नाये॥

बार-बार अस्तुति करि नाना । निर्मल नाम धरा हनुमाना॥

सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना । दीन बताय लाल फल खाना॥

सुनत वचन कपि मन हर्षाना । रविरथ उदय लाल फल जाना॥

रथ समेत कपि कीन्ह अहारा । सूर्य बिना भए अति अँधियारा॥

विनय तुम्हार करै अकुलाना । तब कपीश की अस्तुति ठाना॥

सकल लोक वृत्तांत सुनावा । चतुरानन तब रवि उगिलावा॥

कहा बहोरि सुनहु बलशीला । रामचंद्र करिहैं बहुलीला॥

तब तुम उनकर करब सहाई । अबहिं बसहु कानन महँ जाई॥

अस कहि सो निज लोक सिधारे । मिले सखन महँ पवनदुलारे॥

खेलैं खेल महातरु तोरैं । ढेर करैं बहु पर्वत फोरैं॥

जेहि गिरि चरन देहिं कपि राई । बलयुत भीत रसातल जाई॥

कपि सुग्रीव बालि की त्रासा । निरखत रहे राम मगु आसा॥

मिले राम तहँ पवनकुमारा । अति आनंद सप्रेम दुलारा॥

मणि मुँदरी रघुपति सों पाई । सीता खोज चले सिर नाई॥

शत योजन जलनिधि विस्तारा । अगम अपार देवतन हारा॥

जिमि सर गोखुर सरिस कपीशा । लाँघि गये कपि कहि जगदीशा॥

सीता चरन सीस तहँ नावा । अजर-अमर को आशिष पावा॥

रहे दनुज उपवन रखवारी । एक ते एक महाभट भारी॥

तिन कहँ मारि पवनसुत वीरा । जारि लंक उन कियो अधीरा॥

सिया बोध दै पुनि फिर आये । रामचंद्र के पद सिर नाये॥

मेरु उपारि आपु छिन माहीं । बाँध्यो सेतु निमिष इक माहीं॥

शक्ती लागि लषन के जबहीं । राम बुलाय कहा पुनि तबहीं॥

भवन समेत सुखेण लै आये । तुरत सजीवन को पुनि धाय॥

मग महँ कालनेमि कह मारा । अमित सुभट निशिचर संहारा॥

आनि सजीवन गिरि समेता । धरि दीन्हों जहँ कृपानिकेता॥

फनपति केर कष्ट हरि लीन्हा । ऐसो कठिन काज तुम कीन्हा॥

अहिरावन हरि अनुज समेता । लै गयो जहाँ पाताल निकेता॥

तहाँ रहै देवी अस्थाना । दीन्ह चहै बलि काढ़ि कृपाना॥

पवनतनय प्रभु कीन गुहारी । कटक समेत निशाचर मारी॥

रीछ कीशपति सबै बहोरी । राम लषन कीन्हे यक ठोरी॥

सब देवन की बन्दि छुड़ाये । सो कीरति मुनि नारद गाये॥

अक्षय कुमार दनुज बलवाना । सानकेतु कहँ सब जग जाना॥

कुंभकरन रावन कर भाई । ताहि निपात कीन्ह कपिराई॥

मेघनाद पर शक्ती मारा । पवनतनय तब सों बरियारा॥

रावन तनय नारान्तक जाना । पल महँ ताहि हतो हनुमाना॥

जहँ लगि नाम दनुज कर पावा । पवनतनय सब मारि नसावा॥

जय मारुतसुत जय अनुकूला । नाम कृसानु शोक सम तूला॥

जहँ जीवन पर संकट होई । हनुमत नाम जपै सब कोई॥

बंदि परै सुमिरै हनुमाना । संकट कटै धरैं जो ध्याना॥

जम को बाँधि बाम पद दीन्हा । मारुतसुत व्याकुल बहु कीन्हा॥

सो भुजबल का कीन्ह कृपाला । अच्छत तुम्हैं मोर यह हाला॥

आरत हरन नाम हनुमाना । सारद ऋषि मुनि कीन्ह बखाना॥

संकट रहै न एक रती को । ध्यान धरे हनुमान जती को॥

धावहु देखि दीनता मोरी । विनती करहुँ नाथ कर जोरी॥

कपिपति बेगि अनुग्रह करहू । आतुर आइ दुसह दुख हरहू॥

राम शपथ मैं तुमहिं सुनाया । जवन गुहार लाग सिय जाया॥

पैज तुम्हार सकल जग जाना । भव बंधन भंजन हनुमाना॥

यहि बंधन कर केतिक बाता । नाम तुम्हार जगत सुखदाता॥

करहु कृपा जय-जय जग स्वामी । बार अनेक नमामि नमामी॥

भौमवार करि होम विधाना । धूप दीप नैवेद्य सुजाना॥

मंगल दायक की लौ लावे । सुर नर मुनि वांछित फल पावै॥

जयति-जयति जय-जय जग स्वामी । समरथ हौ सब अंतरजामी॥

अंजनितनय नाम हनुमाना । सो तुलसी के प्राण समाना॥

दोहा-

जय कपीश सुग्रीव नल, जय अंगद हनुमान।
राम लखन सीता सहित, सदा करहु कल्यान॥

बन्दौं हनुमत नाम यह, भौमवार परमान॥
ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्यान॥

जो नित पढ़ै यह साठिका, तुलसी कहै विचारि।
रहै न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि॥

॥ इति श्रीहनुमान साठिका सम्पूर्ण ॥

यह हनुमान साठिका गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज की ही रचना है अथवा किन्ही अन्य तुलसीदास नामक सन्त की अथवा किसी ने बाद में इसकी रचना करके इसे श्री गोस्वामी जी के नाम से प्रचारित कर दिया है, यह कह पाना हमारे लिए अत्यन्त कठिन है। आचार्य श्रीशिवदत्त मिश्र जी ने अपने हनुमद् रहस्यम् नामक ग्रन्थरत्न में इस हनुमान साठिका को भी स्थान दिया है, इनका यह ग्रन्थ स्वामी श्रीकरपात्री जी महाराज आदि श्रेष्ठ विद्वानों के द्वारा प्रशंसित तथा प्रमाणित है तथा उनकी एक और पुस्तक में भी उन्होंने हनुमान साठिका को सम्मिलित करा है, इसके अतिरिक्त कृष्णदास खेमराज प्रेस से भी इसका प्रकाशन हुआ था, उन्होंने इसे श्रीगोस्वामी जी की ही रचना माना है परन्तु तब भी सन्देह तो विद्यमान है ही। इसके रचयिता कोई भी हों उन्होने इसमें कोई शास्त्र विरुद्ध वर्णन तो करा नही है तथा इसकी फलश्रुति भी अत्यन्त सुन्दर है, अतः हमने भी इसको हमारे इस ग्रन्थ में सम्मिलित कर लिया है ॥

श्रीहनुमान बाहुक

छप्पय-

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बालबरन तनु ।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुको काल जनु ॥
गहन-दहन-निरदहन-लंक निःसंक, बंक-भुव ।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ॥
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट ।
गुनगनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन सकल-संकट-बिकट ॥१॥

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन ।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन ॥
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन ।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल बल भानन ॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट ।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥२॥

झूलना-

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य भट-असुर-सुर, सर्व-सरि-समर समरत्थ सूरो ।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली, बेद बंदी बदत पैजपूरो ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल, बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो ।
दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है, पवनको पूत रजपूत रूरो ॥३॥

घनाक्षरी-

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन-अनुमानि सिसु-केलि कियो फेरफार सो ।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन, क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो ॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि, लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।
बल कैधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै, तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो ॥४॥

भारत में पारथ के रथकेतु कपिराज, गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो ।
कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर, बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि, फलँग फलाँगहूँतें घाटि नभतल भो ।
नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं, हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ॥५॥

गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाई लंक, निपट निसंक परपुर गलबल भो ।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर, कंदुक-ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो ॥
संकटसमाज असमंजस भो रामराज, काज जुग-पूगनि को करतल पल भो ।
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह, लोकपाल पालन को फिर थिर थल भो ॥६॥

कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ैं मानो, नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो ।
जातुधान-दावन परावनको दुर्ग भयो, महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो ॥
कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधनको, तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान-सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥७॥

दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको, तू अंजनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो ।

सीय-सोच-समन, दुरित दोष दमन, सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो ॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो, प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो ।
ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान, साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥८॥

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल, बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को ।
पाप-ताप-तिमिर तुहिन-विघटन-पटु, सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोर को ॥
लोक-परलोकतें बिसोक सपने न सोक, तुलसीके हिये है भरोसो एक ओर को ।
रामको दुलारो दास बामदेव को निवास, नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को ॥९॥

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानइत, महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को ।
कुलिस-कठोर तनु जोरपरै रोर रन, करुना-कलित मन धारमिक धीर को ॥
दुर्जनको कालसो कराल पाल सज्जन को, सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको ।
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको, सेवक सहायक है साहसी समीर को ॥१०॥

रचिबेको बिधि जैसे, पालिबेको हरि, हर मीच मारिबेको, ज्याइबेको सुधापान भो ।
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको, सोखिबे कृसानु, पोषिबेको हिम-भानु भो ॥
खल-दुख-दोषिबेको, जन-परितोषिबेको, माँगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो ।
आरतकी आरति निवारिबेको तिहूँ पुर, तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो ॥११॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि, सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँकको ।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ, बापुरे बराक कहा और राजा राँकको ॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद, ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँकको ।
सब दिन रूरो परै पूरो जहाँ-तहाँ ताहि, जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँकको ॥१२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि, लोकपाल सकल लखन राम जानकी ।
लोक परलोकको बिसोक सो तिलोक ताहि, तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी ॥
केसरीकिसोर बंदीछोरके नेवाजे सब, कीरति बिमल कपि करुनानिधान की ।
बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको, जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की ॥१३॥

करुना निधान, बलबुद्धिके निधान, मोद-महिमानिधान, गुन-ज्ञानके निधान हौ ।
बामदेव-रूप, भूप रामके सनेही, नाम लेत-देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ॥
आपने प्रभाव, सीतानाथ के सुभाव सील, लोक-बेद-बिधिके बिदुष हनुमान हौ ।
मनकी, बचनकी, करमकी तिहूँ प्रकार, तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ ॥१४॥

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस, काज महाराजके समाज साज साजे हैं ।
देव-बंदीछोर रनरोर केसरी किसोर, जुग-जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं ।
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसीकी ओर, सुनि सकुचाने साधु खल गन गाजे हैं ।
बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजे मोहिं, जैसे होत आये हनुमानके निवाजे हैं ॥१५॥

सवैया-

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो ।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ॥
साहेब सेवक नाते ते हातो कियो सो तहाँ तुलसीको न चारो ।
दोष सुनाये तें आगेहुँको होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो ॥१६॥

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिरको कपि जे घर घाले ।
तेरे निवाजे गरीबनिवाज बिराजत बैरिनके उर साले ॥

संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरीके-से जाले ।
बूढ़ भये, बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥१७॥

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंकसे बंक मवा से ।
तैं रनि-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से ॥
तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख दोष दवासे ।
बानर बाज बढ़े खल-खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवा-से ॥१८॥

अच्छ-बिमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो ।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो ॥
राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीरदुलारो ।
पापतें सापतें ताप तिहूँतें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो ॥१९॥

घनाक्षरी-

जानत जहान हनुमानको निवाज्यौ जन, मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये ।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी, साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये ॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति, मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये ।
साहसी समीरके दुलारे रघुबीरजूके, बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये ॥२०॥

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो, दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये ।
रावरो भरोसो तुलसीके, रावरोई बल, आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये ॥
बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो, माथे पगु बलीको, निहारि सो निवारिये ।
केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर, बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये ॥२१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार, केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये ।
रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत, मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये ॥
साहेब समर्थ तोसों तुलसीके माथे पर, सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये ।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर, मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये ॥२२॥

रामको सनेह, राम साहस लखन सिय, राम की भगति, सोच संकट निवारिये ।
मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे, जीव-जामवंतको भरोसो तेरो भारिये ॥
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें, सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये ।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न, लंकिनी ज्यों लात-घात ही मरोरि मारिये ॥२३॥

लोक-परलोकहूँ तिलोक न बिलोकियत, तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये ।
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीवजाल, नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर, तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये ।
बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि, उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये ॥२४॥

करम-कराल-कंस भूमिपाल के भरोसे, बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी ।
बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि, बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥
आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख, पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी ।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी, बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी ॥२५॥

भालकी कि कालकी कि रोषकी त्रिदोषकी है, बेदन बिषम पाप-ताप छलछाँहकी ।
करमन कूटकी कि जंत्र-मंत्र बूट की, पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी ॥
पैहहि सजाय नत कहत बजाय तोहि, बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी ।

आन हनुमानकी दोहाई बलवानकी, सपथ महाबीरकी जो रहै पीर बाँहकी ॥२६॥

सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल, लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है ।
लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार, जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है ॥
तोरि जमकातरि मदोदरि कढ़ोरि आनी, रावनकी रानी मेघनाद महँतारी है ।
भीर बाँहपीरकी निपट राखी महाबीर, कौनके सकोच तुलसीके सोच भारी है ॥२७॥

तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर, भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहुकी ।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब, तेरो नाम लेत रहै आरति न काहु की ॥
साम दान भेद बिधि बेदहू लबेद सिधि, हाथ कपिनाथहीके चोटी चोर साहुकी ।
आलस अनख परिहासकै सिखावन है, एते दिन रही पीर तुलसीके बाहुकी ॥२८॥

टूकनि को घर-घर डोलत कँगाल बोलि, बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है ।
कीन्ही है सँभार सार अंजनीकुमार बीर, आपनो बिसारिहैं न मेरेहू भरोसो है ॥
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु, कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है ।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास, चीरीको मरन खेल बालकनिको सो है ॥२९॥

आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें, बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है ।
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये, बादि भये देवता मनाये अधिकाति है ॥
करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल, को है जगजाल जो न मानत इताति है ।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो राम दूत, ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है ॥३०॥

दूत रामरायको, सपूत पूत बायको, समत्थ हाथ पायको सहाय असहायको ।

बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत, रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको ॥
एते बड़े साहेब समर्थको निवाजो आज, सीदत सुसेवक बचन मन कायको ।
थोरी बाँहपीरकी बड़ी गलानि तुलसीको, कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभायको ॥३१॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग, छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं ।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम, रामदूतकी रजाइ माथे मानि लेत हैं ॥
घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग, हनूमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं ।
क्रोध कीजे कर्मको प्रबोध कीजे तुलसीको, सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों, तेरे घाले जातुधान भये घर-घरके ।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज, सकल समाज साज साजे रघुबर के ॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत, सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके ।
तुलसीके माथेपर हाथ फेरो कीसनाथ, देखिये न दास दुखी तोसे कनिगरके ॥३३॥

पालो तेरे टूकको परेहू चूक मूकिये न, कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये ।
भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष, पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये ॥
अंबु तू हौं अंबुचर, अंब तू हौं डिंभ, सो न, बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये ।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि, तुलसीकी बाँह पर लामीलूम फेरिये ॥३४॥

घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं, बासर जलद घन घटा धुकि धाई है ।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस, रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है ॥
करुनानिधान हनुमान महाबलवान, हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजैं तैं उड़ाई है ।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि, केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है ॥३५॥

सवैया-

रामगुलाम तुही हनुमान गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो ।
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू पितु मातु सों मंगल मोद समूलो ॥
बाँहकी बेदन बाँहपगार पुकारत आरत आनँद भूलो ।
श्रीरघुबीर निवारिये पीर रहौं दरबार परो लटि लूलो ॥३६॥

घनाक्षरी-

कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं, पापके प्रभावकी सुभाय बाय बावरे ।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन, सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे ॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि, सींचिये मलीन भो तयो है तिहूँ तावरे ।
भूतनिकी आपनी परायेकी कृपानिधान, जानियत सबहीकी रीति राम रावरे ॥३७॥

पायँपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर, जरजर सकल सरीर पीरमई है ।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह, मोहिपर दवरि दमानक सी दई है ॥
हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें, ओट रामनामकी ललाट लिखि लई है ।
कुंभजके किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि, हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥३८॥

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि, मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं ।
राम नाम जगजाप कियो चहों सानुराग, काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं ॥
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ, जिनके समूह साके जागत जहान हैं ।
तुलसी सँभारि ताड़का-सँहारि भारी भट, बेधे बरगद से बनाइ बानवान हैं ॥३९॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो, रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं ।
पर्यो लोकरीतिमें पुनीत प्रीति रामराय, मोहबस बैठो तोरि तरकितराक हौं ॥

खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो, अंजनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं ।
तुलसी गोसाइँ भयो भोंड़े दिन भूलि गयो, ताको फल पावत निदान परिपाक हौं ॥४०॥

असन-बसन-हीन बिषम-बिषाद-लीन, देखि दीन दूबरो करै न हाय-हाय को ।
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो, दियो फल सीलसिंधु आपने सुभायको ॥
नीच यहि बीच पति पाइ भरुहाइगो, बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको ।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस, फूटि-फूटि निकसत लोन रामराय को ॥४१॥

जिओं जग जानकीजीवनको कहाइ जन, मरिबेको बारानसी बारि सुरसरिको ।
तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ, जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको ॥
मोको झूठो साँचो लोग रामको कहत सब, मेरे मन मान है न हरको न हरिको ।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत, सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करिको ॥४२॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित, हित उपदेस को महेस मानो गुरुकै ।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय, तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै ॥
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी, समाधि कीजे तुलसीको जानि जन फुरकै ।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ, रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै ॥४३॥

कहों हनुमानसों सुजान रामरायसों, कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये ।
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमई, बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये ॥
माया जीव कालके करमके सुभायके, करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये ।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि, हौं हूँ रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये ॥४४॥

॥ इति श्रीहनुमान बाहुक सम्पूर्ण ॥

श्रीहनुमान् द्वादशनामस्तोत्र

हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः । रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः ॥
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः । लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः । स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥
तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत् । राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ॥

भावार्थ- हनुमान्, अंजनीसूनु, वायुपुत्र, महाबल, रामेष्ट, फाल्गुन (पाण्डुपुत्र अर्जुन) के सखा, पिंगाक्ष, अमितविक्रम, उदधिक्रमण, सीताशोकविनाशन, लक्ष्मणप्राणदाता तथा रावणदर्पहारी। महान् आत्मबल से सम्पन्न कपिराज हनुमान् जी के इन बारह नामों का जो मनुष्य सोते, जागते अथवा कहीं भी यात्रा करते समय पाठ करता है, उसे किसी प्रकार का भी भय नहीं होता और वह संग्राम में विजयी होता है। राजद्वार एवं गहन वन (आदि) किसी भी स्थान में उसे कभी किसी प्रकार का भय नहीं रहता ॥

॥ इति श्रीआनन्दरामायणे श्रीहनुमत् द्वादशनामस्तोत्रम् ॥

महाबली हनुमान्

जब लक्ष्मण जी के मूर्च्छित हो जाने से भगवान् श्रीराम जी अत्यन्त दुखी हो गए तब हनुमान् जी ने उनसे कहा– 'प्रभो! यदि इस समय मुझे आज्ञा मिले तो मैं चन्द्रमाको वस्त्रके समान निचोड़कर उससे अमृत लाकर ही आपको सिर नवाऊँ अथवा पातालमें (अमृतकी रक्षा करनेवाले) सर्पोको मारकर अमृत-कुण्डको भूमिपर उठा लाऊँ (यदि उससे भी काम न चले तो) भुवनकोश को फोड़कर सूर्य को बाहर निकाल दूँ और तुरंत ही उस छिद्र पर राहु को रखकर उसे मूँद दूँ (जिससे फिर सूर्य न आ सके और प्रातःकाल न हो)। यही नहीं, यदि मैं देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों को बलपूर्वक ले आऊँ तभी प्रभु का अनुचर कहलाऊँ। नीच मृत्यु को मूषक के समान पटक दूँ और इस प्रकार सभी का पाप काट दूँ (फिर किसीको मरने का ही भय न रहे)। प्रभो ! आपकी कृपा और आपही के प्रताप से मैं इन कार्यों में तनिक भी देरी नहीं करूँगा। अतः हे तुलसीदास के स्वामी ! जिसके करने से मैं तुमको प्रिय लगूँ, वही आज्ञा दीजिये। हनुमान् जी के ये वचन सुनकर रघुश्रेष्ठ भगवान् श्रीराम जी ने धैर्य धारणकर कहा- ' पवननन्दन ! तुम्हारा कथन सर्वथा सत्य है, तुम वास्तव में यह सभी कुछ करने में समर्थ हो॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज कृता गीतावली से समुद्धृत

श्रीविनय पत्रिका प्रोक्त श्रीहनुमत् स्तुतियाँ

1

जयत्यंजनी-गर्भ-अंभोधि-संभूत विधु विबुध-कुल-कैरवानंदकारी ।
केसरी-चारु-लोचन-चकोरक-सुखद, लोकगन-शोक-संतापहारी ॥ १ ॥
जयति जय बालकपि केलि-कौतुक उदित-चंडकर-मंडल-ग्रासकर्त्ता ।
राहु-रवि-शक्र-पवि-गर्व-खर्वीकरण शरण-भयहरण जय भुवन-भर्त्ता ॥ २ ॥
जयति रणधीर, रघुवीरहित, देवमणि, रुद्र-अवतार, संसार-पाता ।
विप्र-सुर-सिद्ध-मुनि-आशिषाकारवपु, विमलगुण, बुद्धि-वारिधि-विधाता ॥ ३ ॥
जयति सुग्रीव-ऋक्षादि-रक्षण-निपुण, बालि-बलशालि-बध-मुख्यहेतू ।
जलधि-लंघन सिंह सिंहिका-मद-मथन, रजनिचर-नगर-उत्पात-केतू ॥ ४ ॥
जयति भूनन्दिनी-शोच-मोचन विपिन-दलन घननादवश विगतशंका।
लूमलीलाऽनल-ज्वालमालाकुलित होलिकाकरण लंकेश-लंका ॥ ५ ॥
जयति सौमित्रि-रघुनंदनानंदकर, ऋक्ष-कपि-कटक-संघट-विधायी ।
बद्ध-वारिधि-सेतु अमर-मंगल-हेतु, भानुकुलकेतु-रण-विजयदायी ॥ ६ ॥
जयति जय वज्रतनु दशन नख मुख विकट, चंड-भुजदंड तरु-शैल-पानी ।
समर-तैलिक-यंत्र तिल-तमीचर-निकर, पेरि डारे सुभट घालि घानी ॥ ७ ॥
जयति दशकंठ-घटकर्ण-वारिद-नाद-कदन-कारन, कालनेमि हंता ।
अघटघटना-सुघट सुघट-विघटन विकट, भूमि-पाताल-जल-गगन-गंता ॥ ८ ॥
जयति विश्व-विख्यात बानैत-विरुदावली, विदुष बरनत वेद विमल बानी ।
दास तुलसी त्रास शमन सीतारमण संग शोभित राम-राजधानी ॥ ९ ॥

भावार्थ- हे हनुमान् ! तुम्हारी जय हो। तुम अंजनी के गर्भरूपी समुद्र से चन्द्ररूप उत्पन्न होकर देव कुलरूपी कुमुदों को प्रफुल्लित करनेवाले हो, पिता केसरी के सुन्दर नेत्ररूपी चकोरों को आनन्द देनेवाले हो और समस्त लोकों का शोक-सन्ताप हरनेवाले हो ॥ १ ॥ तुम्हारी जय हो, जय हो। तुमने बचपन में ही बाललीला से उदयकालीन प्रचण्ड सूर्य के मण्डल को लाल-लाल खिलौना समझकर निगल लिया था। उस समय तुमने राहु, सूर्य, इन्द्र और वज्र का गर्व चूर्ण कर दिया था । हे शरणागत के भय हरनेवाले ! हे विश्व का भरण-पोषण करनेवाले ! तुम्हारी जय हो ॥ २ ॥ तुम्हारी जय हो, तुम रण में बड़े धीर, सदा श्रीराम जी का हित करनेवाले, देव-शिरोमणि रुद्र के अवतार और संसार के रक्षक हो। तुम्हारा शरीर ब्राह्मण, देवता, सिद्ध और मुनियों के आशीर्वाद का मूर्तिमान् रूप है। तुम निर्मल गुण और बुद्धि के समुद्र तथा विधाता हो ॥ ३ ॥ तुम्हारी जय हो ! तुम सुग्रीव तथा रीछ (जाम्बवन्त) आदि की रक्षा करने में कुशल हो। महाबलवान् बालि के मरवाने में तुम्हीं मुख्य कारण हो। तुम्हीं समुद्र लाँघने के समय सिंहिका राक्षसी का मर्दन करने में सिंहरूप तथा राक्षसों की लंकापुरी के लिये धूमकेतुरूप हो ॥ ४ ॥ तुम्हारी जय हो ! तुम श्रीसीता जी को राम जी का सन्देशा सुनाकर उनकी चिन्ता दूर करनेवाले और रावण के अशोकवन को उजाड़नेवाले हो। तुमने अपने को निःशंक होकर मेघनाद से ब्रह्मास्त्र में बँधवा लिया था तथा अपनी पूँछ की लीला से अग्नि की धधकती हुई लपटों से व्याकुल हुए रावण की लंका में चारों ओर होली जला दी थी ॥ ५ ॥ तुम्हारी जय हो ! तुम श्रीराम-लक्ष्मण को आनन्द देनेवाले, रीछ और बन्दरों की सेना इकट्ठी कर समुद्र पर पुल बाँधनेवाले, देवताओं का कल्याण करनेवाले और सूर्यकुल-केतु श्रीराम जी को संग्राम में विजय -लाभ करानेवाले हो ॥ ६ ॥ तुम्हारी जय हो, जय हो। तुम्हारा शरीर, दाँत, नख और विकराल मुख वज्र के समान है। तुम्हारे भुजदण्ड बड़े ही प्रचण्ड हैं, तुम वृक्षों और पर्वतों को हाथों पर उठानेवाले हो। तुमने संग्रामरूपी कोल्हू में राक्षसों के समूह और बड़े-बड़े योद्धारूपी तिलों को डाल-डालकर घानी की तरह पेर डाला ॥ ७ ॥ तुम्हारी जय हो। रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद के नाश में तुम्हीं कारण हो; कपटी कालनेमि को तुम्हींने मारा था । तुम असम्भव को सम्भव और सम्भव को असम्भव कर दिखलानेवाले और बड़े विकट हो । पृथ्वी, पाताल, समुद्र और आकाश सभी स्थानों में तुम्हारी अबाधित गति है ॥ ८ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम विश्व में विख्यात हो, वीरता का बाना सदा ही कसे रहते हो । विद्वान् और वेद अपनी विशुद्ध वाणी से तुम्हारी विरदावली का वर्णन करते हैं। तुम तुलसीदास के भव-भय को नाश करनेवाले हो और

अयोध्या पुरी में सीतारमण भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के साथ सदा शोभायमान रहते हो ॥ ९ ॥

2

जयति मर्कटाधीश, मृगराज-विक्रम, महादेव, मुद-मंगलालय, कपाली ।
मोह-मद-क्रोध-कामादि-खल-संकुला, घोर संसार-निशि किरणमाली ॥ १ ॥
जयति लसदंजनाऽदितिज, कपि-केसरी-कश्यप-प्रभव, जगदार्त्तिहर्त्ता ।
लोक-लोकप-कोक-कोकनद-शोकहर, हंस हनुमान कल्याणकर्ता ॥ २ ॥
जयति सुविशाल-विकराल-विग्रह, वज्रसार सर्वांग भुजदण्ड भारी ।
कुलिशनख, दशनवर लसत, बालधि बृहद, वैरि-शस्त्रास्त्रधर कुधरधारी ॥ ३ ॥
जयति जानकी-शोच-संताप-मोचन, रामलक्ष्मणानंद-वारिज-विकासी ।
कीश-कौतुक-केलि-लूम-लंका-दहन, दलन कानन तरुण तेजरासी ॥ ४ ॥
जयति पाथोधि-पाषाण-जलयानकर, यातुधान-प्रचुर-हर्ष-हाता ।
दुष्ट रावण-कुंभकर्ण-पाकारिजित-मर्मभित्, कर्म-परिपाक-दाता ॥ ५ ॥
जयति भुवनैकभूषण, विभीषणवरद, विहित कृत राम-संग्राम साका।
पुष्पकारूढ़-सौमित्रि-सीता-सहित, भानु-कुलभानु-कीरति-पताका ॥ ६ ॥
जयति पर-यंत्रमंत्राभिचार-ग्रसन, कारमन-कूट-कृत्यादि-हंता ।
शाकिनी-डाकिनी-पूतना-प्रेत-वेताल-भूत-प्रमथ-यूथ-यंता ॥ ७ ॥
जयति वेदान्तविद विविध-विद्या-विशद, वेद-वेदांगविद ब्रह्मवादी ।
ज्ञान-विज्ञान-वैराग्य-भाजन विभो, विमल गुण गनति शुकनारदादी ॥ ८ ॥
जयति काल-गुण-कर्म-माया-मथन, निश्चलज्ञान, व्रत-सत्यरत, धर्मचारी ।
सिद्ध-सुरवृंद-योगींद्र-सेवित सदा, दास तुलसी प्रणत भय-तमारी ॥ ९ ॥

भावार्थ- हे हनुमान् ! तुम्हारी जय हो। तुम बंदरों के राजा, सिंह के समान पराक्रमी, देवताओं में श्रेष्ठ, आनन्द और कल्याण के स्थान तथा कपालधारी शिव जी के अवतार हो। मोह, मद, क्रोध, काम आदि दुष्टों से व्याप्त घोर संसाररूपी अन्धकारमयी रात्रि के नाश करनेवाले तुम साक्षात् सूर्य हो ॥ १ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम्हारा जन्म अञ्जनीरूपी देवमाता अदिति और वानरों में सिंह के समान केसरीरूपी कश्यप से हुआ है। तुम जगत् के कष्टों को हरनेवाले हो तथा लोक और लोकपालरूपी चकवा चकवी और कमलों का शोक नाश करनेवाले साक्षात् कल्याणमूर्ति सूर्य हो ॥ २ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम्हारा शरीर बड़ा विशाल और भयंकर है, प्रत्येक अंग वज्र के समान है, भुजदण्ड बड़े भारी हैं तथा वज्र के समान नख और सुन्दर दाँत शोभित हो रहे हैं। तुम्हारी पूँछ बड़ी लम्बी है, शत्रुओं के संहार के लिये तुम अनेक प्रकार के अस्त्र, शस्त्र और पर्वतों को लिये रहते हो ॥ ३ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम भगवती श्रीसीता जी के शोक सन्ताप का नाश करनेवाले और भगवान् श्रीराम-लक्ष्मण जी के आनन्दरूपी कमलों को प्रफुल्लित करनेवाले हो । बन्दर-स्वभाव से खेल में ही पूँछ से लंका जला देनेवाले, अशोक वन को उजाड़नेवाले, तरुण तेज के पुंज मध्याह्नकाल के सूर्यरूप हो ॥ ४ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम समुद्र पर पत्थर का पुल बाँधनेवाले, राक्षसों के महान् आनन्द के नाश करनेवाले तथा दुष्ट रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद के मर्म स्थानों को तोड़कर उन्हें उनके कर्मों का फल देनेवाले हो ॥ ५ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम त्रिभुवन के भूषण हो, विभीषण को राम-भक्ति का वर देनेवाले हो और रण में प्रभु श्रीरामचन्द्र जी के साथ बड़े-बड़े काम करनेवाले हो । लक्ष्मण और सीता जी सहित पुष्पक विमान पर विराजमान सूर्यकुल के सूर्य भगवान् श्रीराम जी की कीर्ति-पताका तुम्हीं हो ॥ ६ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम शत्रुओं द्वारा किये जानेवाले यन्त्र-मन्त्र ओर अभिचार (मोहन-उच्चाटन आदि प्रयोगों तथा जादू-टोने) को ग्रसनेवाले तथा गुप्त मारण-प्रयोग और प्राणनाशिनी कृत्या आदि क्रूर देवियों का नाश करनेवाले हो । तुम शाकिनी, डाकिनी, पूतना, प्रेत, वेताल, भूत और प्रमथ आदि भयानक जीवों के नियन्त्रण-कर्ता शासक हो ॥ ७ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम वेदान्त के जाननेवाले, नाना प्रकार की विद्याओं में विशारद, चार वेद और छः वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष) के ज्ञाता तथा शुद्ध ब्रह्म के स्वरूप का निरूपण करनेवाले हो । तुम ज्ञान, विज्ञान और वैराग्य के पात्र हो अर्थात् तुम्हीं ने इनको अच्छी तरह से जाना है । तुम समर्थ हो। इसी से श्रीशुकदेव जी और श्रीनारद जी आदि देवर्षि सदा तुम्हारी निर्मल गुणावली गाया करते हैं ॥ ८ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम काल (दिन,

घड़ी, पल आदि), त्रिगुण (सत्त्व, रज, तम), कर्म (संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण) और माया का नाश करनेवाले हो। तुम्हारा ज्ञानरूप व्रत सदा निश्चल है तथा तुम सत्यपरायण और धर्म का आचरण करनेवाले हो । सिद्ध, देवगण और योगीराज सदा तुम्हारी सेवा किया करते हैं। हे भव-भयरूपी अन्धकार का नाश करनेवाले सूर्य ! यह दास तुलसी तुम्हारी शरण है ॥९॥

3

जयति मंगलागार, संसारभारापहर, वानराकारविग्रह पुरारी ।

राम-रोषानल-ज्वालमाला-मिष ध्वांतचर-सलभ-संहारकारी ॥ १ ॥

जयति मरुदंजनामोद-मंदिर, नतग्रीव सुग्रीव-दुःखैकबंधो।

यातुधानोद्धत-क्रुद्ध-कालाग्निहर, सिद्ध-सुर-सज्जनानंद-सिंधो ॥ २ ॥

जयति रुद्राग्रणी, विश्व-वंद्याग्रणी, विश्वविख्यात-भट-चक्रवर्ती ।

सामगाताग्रणी, कामजेताग्रणी, रामहित, रामभक्तानुवर्ती ॥ ३ ॥

जयति संग्रामजय, रामसंदेसहर, कौशला-कुशल-कल्याणभाषी ।

राम-विरहार्क-संतप्त-भरतादि-नरनारि-शीतलकरण कल्पशाषी ॥ ४ ॥

जयति सिंहासनासीन सीतारमण, निरखि, निर्भरहरष नृत्यकारी ।

राम संभ्राज शोभा-सहित सर्वदा तुलसिमानस-रामपुर-विहारी ॥ ५ ॥

भावार्थ- हे हनुमान् ! तुम्हारी जय हो। तुम कल्याण के स्थान, संसार के भार को हरनेवाले, बन्दर के आकार में साक्षात् शिव हो। तुम राक्षसरूपी पतंगों को भस्म करनेवाली श्रीरामचन्द्र जी के क्रोधरूपी अग्नि की ज्वालमाला के मूर्तिमान् स्वरूप हो ॥ १ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम पवन और अंजनी देवी के आनन्द के स्थान हो । नीची गर्दन किये हुए, दुःखी सुग्रीव के दुःख में तुम सच्चे बन्धु के समान सहायक हुए थे। तुम राक्षसों के कराल क्रोधरूपी प्रलयकाल की अग्नि का नाश करनेवाले और सिद्ध, देवता तथा सज्जनों के लिये आनन्द के समुद्र हो ॥ २ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम एकादश रुद्रों में और जगत्पूज्य ज्ञानियों में अग्रगण्य हो, संसारभर के शूरवीरों के प्रसिद्ध सम्राट् हो। तुम सामवेद का गान करनेवालों में और कामदेव को जीतनेवालों

में सबसे श्रेष्ठ हो। तुम प्रभु श्रीराम जी के हितकारी और श्रीराम भक्तों के साथ रहनेवाले रक्षक हो ॥ ३ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम संग्राम में विजय पानेवाले, भगवान् श्रीराम जी का सन्देशा (श्रीसीता जी के पास) पहुँचानेवाले और अयोध्या का कुशल-मंगल (श्रीरघुनाथ जी से) कहनेवाले हो। तुम भगवान् श्रीराम जी के वियोगरूपी सूर्य से जलते हुए श्रीभरत जी आदि अयोध्यावासी नर-नारियों का ताप मिटाने के लिये कल्पवृक्ष हो ॥ ४ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम भगवान् श्रीराम जी को राज्य-सिंहासन पर विराजमान देख, आनन्द में विह्वल होकर नाचनेवाले हो। जैसे भगवान् श्रीराम जी श्रीअयोध्या पुरी में सिंहासनपर विराजित हो शोभा पा रहे थे, वैसे ही तुम इस तुलसीदास की मानसरूपी अयोध्या पुरी में सदा विहार करते रहो ॥ ५ ॥

4

जयति वात-संजात, विख्यात विक्रम, बृहद्बाहु, बलबिपुल, बालधिबिसाला ।

जातरूपाचलाकारविग्रह, लसल्लोम विद्युल्लता ज्वालमाला ॥ १ ॥

जयति बालार्क वर-वदन, पिंगल-नयन, कपिश-कर्कश-जटाजूटधारी ।

विकट भृकुटी, वज्र दशन नख, वैरि-मदमत्त-कुंजर-पुंज-कुंजरारी ॥ २ ॥

जयति भीमार्जुन-व्यालसूदन-गर्वहर, धनंजय-रथ-त्राण-केतू ।

भीष्म-द्रोण-कर्णादि-पालित, कालदृक सुयोधन-चमू-निधन-हेतू ॥ ३ ॥

जयति गतराजदातार, हंतार संसार-संकट, दनुज-दर्पहारी ।

ईति-अति-भीति-ग्रह-प्रेत-चौरानल-व्याधिबाधा-शमन घोर मारी ॥ ४ ॥

जयति निगमागम व्याकरण करणलिपि, काव्यकौतुक-कला-कोटि-सिंधो।

सामगायक, भक्त-कामदायक, वामदेव, श्रीराम-प्रिय प्रेमबंधो ॥ ५ ॥

जयति घर्मांशु-संदग्ध-संपाति-नवपक्ष-लोचन-दिव्य-देहदाता ।

कालकलि-पापसंताप-संकुल सदा, प्रणत तुलसीदास तात-माता ॥ ६ ॥

भावार्थ - हे हनुमान् ! तुम्हारी जय हो। तुम पवन से उत्पन्न हुए हो, तुम्हारा पराक्रम प्रसिद्ध है। तुम्हारी भुजाएँ बड़ी विशाल हैं, तुम्हारा बल अपार है। तुम्हारी पूँछ बड़ी लम्बी है। तुम्हारा शरीर

सुमेरु-पर्वत के समान विशाल एवं तेजस्वी है। तुम्हारी रोमावली बिजली की रेखा अथवा ज्वालाओं की माला के समान जगमगा रही है ॥ १ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम्हारा मुख उदयकालीन सूर्य के समान सुन्दर है, नेत्र पीले हैं। तुम्हारे सिर पर भूरे रंग की कठोर जटाओं का जूड़ा बँधा हुआ है। तुम्हारी भौंहें टेढ़ी हैं। तुम्हारे दाँत और नख वज्र के समान हैं, तुम शत्रुरूपी मदमत्त हाथियों के दल को विदीर्ण करनेवाले सिंह के समान हो ॥ २ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम भीमसेन, अर्जुन और गरुड़ के गर्व को हरनेवाले तथा अर्जुन के रथ की पताका पर बैठकर उसकी रक्षा करनेवाले हो। तुम भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य और कर्ण आदि से रक्षित काल की दृष्टि के समान भयानक, दुर्योधन की महान् सेना का नाश करने में मुख्य कारण हो ॥ ३ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम सुग्रीव के गये हुए राज्य को फिर से दिलानेवाले, संसार के संकटों का नाश करनेवाले और दानवों के दर्प को चूर्ण करनेवाले हो। तुम अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी, चूहे, पक्षी और राज्य के आक्रमणरूप खेती में बाधक छः प्रकार की ईति, महाभाव, ग्रह, प्रेत, चोर, अग्निकाण्ड, रोग, बाधा और महामारी आदि क्लेशों के नाश करनेवाले हो ॥ ४ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम वेद, शास्त्र और व्याकरण पर भाष्य लिखनेवाले और काव्य के कौतुक तथा करोड़ों कलाओं के समुद्र हो। तुम सामवेद का गान करनेवाले, भक्तों की कामना पूर्ण करनेवाले साक्षात् शिवरूप हो और श्रीराम के प्यारे प्रेमी बन्धु हो ॥ ५ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम सूर्य से जले हुए सम्पाती नामक गृध्र को नये पंख, नेत्र और दिव्य शरीर के देनेवाले हो और कलिकाल के पाप-सन्तापों से पूर्ण इस शरणागत तुलसीदास के माता-पिता हो ॥ ६ ॥

5

जयति निर्भरानंद-संदोह कपिकेसरी, केसरी-सुवन भुवनैकभर्त्ता ।

दिव्यभूम्यंजना-मंजुलाकर-मणे, भक्त-संताप-चिंतापहर्त्ता ॥ १ ॥

जयति धर्मार्थ-कामापवर्गद विभो, ब्रह्मलोकादि-वैभव-विरागी ।

वचन-मानस-कर्म सत्य-धर्मव्रती, जानकीनाथ-चरणानुरागी ॥ २ ॥

जयति बिहगेश-बलबुद्धि-बेगाति-मद-मथन, मनमथ-मथन, ऊर्ध्वरेता ।

महानाटक-निपुन, कोटि-कविकुल-तिलक, गानगुण-गर्व-गंधर्व-जेता ॥ ३ ॥

जयति मंदोदरी-केश-कर्षण, विद्यमान दशकंठ भट-मुकुट मानी ।

भूमिजा-दुःख-संजात रोषांतकृत-जातनाजंतु कृत जातुधानी ॥ ४ ॥

जयति रामायण-श्रवण-संजात रोमांच, लोचन सजल, शिथिल वाणी ।

रामपदपद्म-मकरंद-मधुकर, पाहि, दास तुलसी शरण, शूलपाणी ॥ ५ ॥

भावार्थ- हे हनुमान् ! तुम्हारी जय हो। तुम पूर्ण आनन्द के समूह, वानरों में साक्षात् केसरी (सिंह), केसरी के पुत्र और संसार के एकमात्र भरण-पोषण करनेवाले हो। तुम अंजनीरूपी दिव्य भूमि की सुन्दर खानि से निकली हुई मनोहर मणि हो और भक्तों के सन्ताप और चिन्ताओं को सदा नष्ट करते हो ॥ १ ॥ हे विभो ! तुम्हारी जय हो। तुम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के देनेवाले हो, ब्रह्मलोक तक के समस्त भोग-ऐश्वर्यों में वैराग्यवान् हो। मन, वचन और कर्म से सत्यरूप धर्म के व्रत का पालन करनेवाले हो और जानकीनाथ श्रीराम जी के चरणों के परम प्रेमी हो ॥ २ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम गरुड़ के बल, बुद्धि और वेग के बड़े भारी गर्व को खर्व करनेवाले तथा कामदेव के नाश करनेवाले बाल-ब्रह्मचारी हो, तुम बड़े-बड़े नाटकों के निर्माण और अभिनय में निपुण हो, करोड़ों महाकवियों के कुलशिरोमणि और गान-विद्या का गर्व करनेवाले विजय पानेवाले हो ॥ ३ ॥ तुम्हारी जय हो। तुम वीरों के मुकुटमणि, महा अभिमानी रावण के सामने उसकी स्त्री मन्दोदरी के बाल खींचनेवाले हो। तुमने श्रीजानकी जी के दुःख को देखकर उत्पन्न हुए क्रोध के वश हो राक्षसियों को ऐसा क्लेश दिया जैसा यमराज पापी प्राणियों को दिया करता है ॥ ४ ॥ तुम्हारी जय हो । भगवान् श्रीराम जी का चरित्र सुनते ही तुम्हारा शरीर पुलकित हो जाता है, तुम्हारे नेत्रों में प्रेम के आँसू भर आते हैं और तुम्हारी वाणी गद्गद हो जाती है । हे भगवान् श्रीराम जी के चरण-कमल-पराग के रसिक भौरे ! हे हनुमान् रूपी त्रिशूलधारी शिव ! यह दास तुलसी तुम्हारी शरण है, इसकी रक्षा करो ॥ ५ ॥

6

जाके गति है हनुमानकी ।

ताकी पैज पूजि आई, यह रेखा कुलिस पषानकी ॥ १ ॥

अघटित-घटन, सुघट-बिघटन, ऐसी बिरुदावलि नहिं आनकी ।

सुमिरत संकट-सोच-बिमोचन, मूरति मोद-निधानकी ॥ २ ॥

तापर सानुकूल, गिरिजा, हर, लषन, राम अरु जानकी ।

तुलसी कपिकी कृपा-बिलोकनि, खानि सकल कल्यानकी ॥ ३ ॥

भावार्थ- जिसको (सब प्रकार से) श्रीहनुमान् जी का आश्रय है, उसकी प्रतिज्ञा पूरी हो ही गयी। यह सिद्धान्त वज्र (हीरे) की लकीर के समान अमिट है ॥ १ ॥ क्योंकि श्रीहनुमान् जी असम्भव घटना को सम्भव और सम्भव को असम्भव करनेवाले हैं, ऐसे यश का बाना दूसरे किसी का भी नहीं है । श्रीहनुमान् जी की आनन्दमयी मूर्ति का स्मरण करते ही सारे संकट और शोक मिट जाते हैं ॥ २ ॥ सब प्रकार के कल्याणों की खानि श्रीहनुमान् जी की कृपादृष्टि जिसपर है, हे तुलसीदास ! उसपर माता श्रीपार्वती जी, भगवान् श्रीशंकर जी, भगवान् श्रीलक्ष्मण जी, भगवान् श्रीराम जी और माता श्रीजानकी जी सदा कृपा किया करती हैं ॥ ३ ॥

7

ताकिहै तमकि ताकी ओर को ।

जाको है सब भाँति भरोसो कपि केसरी-किसोरको ॥ १ ॥

जन-रंजन अरिगन-गंजन मुख-भंजन खल बरजोरको ।

बेद-पुरान-प्रगट पुरुषारथ सकल-सुभट-सिरमोर को ॥ २ ॥

उथपे-थपन, थपे उथपन पन, बिबुधबृंद बँदिछोर को ।

जलधि लाँघि दहि लंक प्रबल बल दलन निसाचर घोर को ॥ ३ ॥

जाको बालबिनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोरको ।

जाकी चिबुक चोट चूरन किय रद-मद कुलिस कठोरको ॥ ४ ॥

लोकपाल अनुकूल बिलोकिवो चहत बिलोचन-कोरको ।

सदा अभय, जय, मुद-मंगलमय जो सेवक रनरोरको ॥ ५ ॥

भगत-कामतरु नाम राम परिपूरन चंद चकोरको ।

तुलसी फल चारों करतल जस गावत गईबहोरको ॥ ६ ॥

भावार्थ- जिसे सब प्रकार से केसरीनन्दन श्रीहनुमान् जी का भरोसा है, उसकी ओर भला क्रोधभरी दृष्टि से कौन ताक सकता है ? ॥ १ ॥ श्रीहनुमान् जी के समान भक्तों को प्रसन्न करनेवाला, शत्रुओं का नाश करनेवाला, दुष्टों का मुँह तोड़नेवाला बड़ा बलवान् संसार में और कौन है ? इनका पुरुषार्थ वेदों और पुराणों में प्रकट है। इनके समान समस्त शूरवीरों में शिरोमणि दूसरा कौन है ? ॥ २ ॥ इनके समान (सुग्रीव, विभीषण आदि) राज्यबहिष्कृतों को पुनः स्थापित करनेवाला, सिंहासन पर स्थित (बालि, रावण आदि) राजाधिराजों को राज्यच्युत करनेवाला, देवताओं को प्रण करके रावण के बन्धन से छुड़ानेवाला, समुद्र लाँघकर लंका को जलानेवाला और बड़े-बड़े बलवान् भयानक राक्षसों के बल का नाश करनेवाला दूसरा कौन है ? ॥ ३ ॥ जिनके बाल-विनोद को याद करके अब भी प्रात:काल के सूर्यदेव डरा करते हैं, जिनकी ठोड़ी की चोट ने कठोर वज्र के दाँतों का घमंड चूर कर दिया ॥ ४ ॥ बड़े-बड़े लोकपाल भी जिनका कृपाकटाक्ष चाहते हैं, ऐसे रणबांकुरे श्रीहनुमान् जी की जो सेवा करता है, वह सदा निडर रहता है, शत्रुओं पर विजयी होता है और संसार के सभी सुख तथा कल्याणरूप मोक्ष को प्राप्त करता है ॥ ५ ॥ पूर्णकलासम्पन्न चन्द्रमा जैसे श्रीराम जी के मुख को अनिमेष दृष्टि से देखनेवाले चकोररूप श्रीहनुमान् जी का नाम भक्तों के लिये कल्पवृक्ष के समान है। हे तुलसीदास ! गयी हुई वस्तु को फिर से दिला देने वाले प्रभु श्रीहनुमान् जी का जो गुण गाता है, अर्थ, धर्म, काम, मोक्षरूप चारों फल सदा उसकी हथेली पर धरे रहते हैं ॥ ६ ॥

8

ऐसी तोहि न बूझिये हनुमान हठीले। साहेब कहूँ न रामसे, तोसे न उसीले ॥ १ ॥

तेरे देखत सिंहके सिसु मेंढक लीले। जानत हौं कलि तेरेऊ मन गुनगन कीले ॥ २ ॥

हाँक सुनत दसकंधके भये बंधन ढीले । सो बल गयो किधौं भये अब गरबगहीले ॥ ३ ॥

सेवकको परदा फटे तू समरथ सीले । अधिक आपुते आपुनो सुनि मान सही ले ॥ ४॥

साँसति तुलसीदासकी सुनि सुजस तुही ले। तिहूँकाल तिनको भलौ जे राम-रँगीले ॥ ५ ॥

भावार्थ- हे हठीले (भक्तों के कष्ट बरबस दूर करनेवाले) हनुमान् ! तुझे ऐसा नहीं चाहिये। श्रीराम सरीखे तो कहीं स्वामी नहीं हैं और तेरे समान कहीं सहायक नहीं हैं ॥ १ ॥ यह होते हुए भी आज तेरे देखतेदेखते मुझ सिंह के बच्चे को (तुझ सिंहरूप सहायक के शरणागत मुझ

बालक को) कलियुगरूपी मेंढक (जिसकी तेरे सामने कोई हस्ती नहीं है) निगले लेता है। मालूम होता है, इस कलियुग ने तेरे भक्तवत्सलता, शरणागत की रक्षा के लिये हठकारिता, उदारता आदि गुणों को कील दिया है ॥ २ ॥ एक दिन तेरी हुँकार सुनते ही रावण के अंग-अंग के जोड़ ढीले पड़ गये थे, वह तेरा बल पराक्रम आज कहाँ गया ? अथवा क्या तू अब दयालु के बदले घमंडी हो गया है ? ॥ ३ ॥ आज तेरे सेवक का पर्दा फट रहा है उसे तू सिल दे अर्थात् तू जाती हुई इज्जत को बचा दे। तू बड़ा समर्थ है, पहले तो तू सेवक को अपने से अधिक मानता, उसकी सुनता, सहता था, पर अब क्या हो गया ? ॥ ४ ॥ इस तुलसीदास के संकट को सुनकर उसे दूर करके यह सुयश तू ही ले ले। वास्तव में तो जो भगवान् श्रीरामचन्द्र जी महाराज के रँगीले भक्त हैं उन लोगों का तो तीनों कालों में कल्याण ही है ॥ ५ ॥

9

समरथ सुअन समीरके, रघुबीर-पियारे। मोपर कीबी तोहि जो करि लेहि भिया रे ॥१॥

तेरी महिमा ते चलैं चिंचिनी-चिया रे। अँधियारो मेरी बार क्यों, त्रिभुवन-उजियारे ॥२॥

केहि करनी जन जानिकै सनमान किया रे। केहि अघ औगुन आपने कर डारि दिया रे ॥३॥

खाई खोंची माँगि मैं तेरो नाम लिया रे। तेरे बल, बलि, आजु लौं जग जागि जिया रे ॥४॥

जो तोसों होतौ फिरौं मेरो हेतु हिया रे। तौ क्यों बदन देखावतो कहि बचन इयारे ॥५॥

तोसो ग्यान-निधान को सरबग्य बिया रे। हौं समुझत साईं-द्रोहकी गति छार छिया रे ॥६॥

तेरे स्वामी राम से, स्वामिनी सिया रे। तहँ तुलसीके कौनको काको तकिया रे ॥७॥

भावार्थ- हे सर्वशक्तिमान् पवनकुमार ! हे राम जी के प्यारे ! तुझे मुझपर जो कुछ करना हो सो भैया अभी कर ले ॥ १ ॥ तेरे प्रताप से इमली के चियें भी (रुपये की जगह) चल सकते हैं; अर्थात् यदि तू चाहे तो मेरे-जैसे निकम्मों की भी गणना भक्तों में हो सकती है। फिर मेरे लिये, हे त्रिभुवन-उजागर ! इतना अँधेरा क्यों कर रखा है ? ॥ २ ॥ पहले मेरी कौन-सी अच्छी करनी जानकर तूने मुझे अपना दास समझा था तथा मेरा सम्मान किया था और अब किस पाप तथा अवगुण से मुझे हाथ से फेंक दिया, अपनाकर भी त्याग दिया ? ॥ ३ ॥ मैंने तो सदा से ही तेरे नाम पर टुकड़ा माँगकर खाया है, तेरी बलैया लेता हूँ, मैं तो तेरे ही बल के भरोसे पर जगत् में

उजागर होकर अबतक जीता रहा हूँ ॥ ४ ॥ जो मैं तुझसे विमुख होता तो मेरा हृदय ही उसमें कारण होता, फिर मैं निज परिवार के मनुष्य की तरह भली-बुरी सुनाकर तुझे अपना मुँह कैसे दिखाता ? ॥ ५ ॥ तू मेरे मन की सब कुछ जानता है, क्योंकि तेरे समान ज्ञान की खानि और सबके मन की जाननेवाला दूसरा कौन है ? यह तो मैं भी समझता हूँ कि स्वामी के साथ द्रोह करनेवाले को नष्टभ्रष्ट हो जाना पड़ता है ॥ ६ ॥ तेरे स्वामी भगवान् श्रीरामचन्द्र जी और स्वामिनी भगवती माता श्रीसीता जी सरीखी हैं, वहाँ तुलसीदास का तेरे सिवा और किस मनुष्य का और किस वस्तु का सहारा है ? इसलिये तू ही मुझे वहाँ तक पहुँचा दे ॥७॥

10

अति आरत, अति स्वारथी, अति दीन-दुखारी।

इनको बिलगु न मानिये, बोलहिं न बिचारी ॥ १ ॥

लोक-रीति देखी सुनी, व्याकुल नर-नारी।

अति बरषे अनबरषेहूँ, देहिं दैवहिं गारी ॥ २ ॥

नाकहि आये नाथसों, साँसति भय भारी।

कहि आयो, कीबी छमा, निज ओर निहारी ॥ ३ ॥

समै साँकरे सुमिरिये, समरथ हितकारी।

सो सब बिधि ऊबर करै, अपराध बिसारी ॥ ४॥

बिगरी सेवककी सदा, साहेबहिं सुधारी।

तुलसीपर तेरी कृपा, निरुपाधि निरारी ॥ ५ ॥

भावार्थ- हे हनुमान् जी ! अति पीड़ित, अति स्वार्थी, अति दीन और अति दुःखी के कहे का बुरा नहीं मानना चाहिये, क्योंकि ये घबराये हुए रहने के कारण भले-बुरे का विचार करके नहीं बोलते ॥ १ ॥ संसार में यह प्रत्यक्ष देखा-सुना जाता है कि वर्षा अधिक होने या बिलकुल न होने पर व्याकुल हुए स्त्री-पुरुष दैव को गालियाँ सुनाया करते हैं; परंतु इसका परमेश्वर कोई खयाल नहीं करता ॥ २ ॥ जब कलियुग के कष्ट और भवसागर के भारी भय से मेरे नाक में

दम हो गया, तभी मैं भली-बुरी कह बैठा। अब तुम अपनी भक्तवत्सलता की ओर देखकर मुझे क्षमा कर दो ॥ ३ ॥ संकट के समय लोग समर्थ और अपने हितकारी को ही याद करते हैं और वह भी उनके सारे अपराधों को भुलाकर उनकी सब प्रकार से रक्षा करता है ॥ ४ ॥ सेवक की भूलों को सदा से स्वामी ही सुधारते आये हैं। फिर इस तुलसीदास पर तो तुम्हारी एक निराली एवं निश्छल कृपा है ॥ ५ ॥

11

कटु कहिये गाढ़े परे, सुनि समुझि सुसाईं।

करहिं अनभलेउ को भलो, आपनी भलाई ॥ १ ॥

समरथ सुभ जो पाइये, बीर पीर पराई।

ताहि तकैं सब ज्यों नदी बारिधि न बुलाई ॥ २ ॥

अपने अपनेको भलो, चहैं लोग लुगाई।

भावै जो जेहि तेहि भजै, सुभ असुभ सगाई ॥ ३॥

बाँह बोलि दै थापिये, जो निज बरिआई।

बिन सेवा सों पालिये, सेवककी नाईं ॥ ४॥

चूक-चपलता मेरियै, तू बड़ो बड़ाई।

होत आदरे ढीठ है,अति नीच निचाई ॥ ५ ॥

बंदिछोर बिरुदावली, निगमागम गाई।

नीको तुलसीदासको, तेरियै निकाई ॥ ६ ॥

भावार्थ- जब संकट पड़ता है, तभी अपने स्वामी को भला-बुरा कहा जाता है और अच्छे स्वामी यह समझ-बूझकर अपनी भलाई से उस बुरे सेवक का भी भला कर देते हैं ॥ १ ॥ समर्थ, कल्याणकारी और ऐसे शूरवीर को पाकर जो दूसरों की विपत्ति में सहायता देता है, सब लोग उस ओर ऐसे देखा करते हैं, जैसे समुद्र के पास नदियाँ बिना बुलाये ही दौड़-दौड़कर जाती हैं ॥ २ ॥ संसार में सभी स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी भलाई चाहते हैं, शुभ-अशुभ के नाते

से जो (देवता) जिसको अच्छा लगता है, वह उसी देवता को भजता है। मुझे तो एक तुम्हारा ही भरोसा है ॥ ३ ॥ जिसे जबरदस्ती अपने बल का भरोसा देकर रख लिया वह यदि तुम्हारी सेवा नहीं करता, तो भी उसे सेवक की तरह पालना चाहिये ॥ ४ ॥ भूल और चंचलता तो सब मेरी ही है; पर तुम बड़े हो, मुझ जैसे अपराधियों को क्षमा करने में ही तुम्हारी बड़ाई है। यह तो सभी जानते हैं कि आदर करने से नीच भी ढीठ हो जाता और नीचता करने लगता है ॥ ५ ॥ तुम बन्धनों से छुड़ानेवाले हो तुम्हारा ऐसा सुयश वेद-शास्त्र गाते हैं। मुझ तुलसीदास का भला अब तुम्हारी भलाई से ही होगा, अन्यथा मैं तो किसी भी योग्य नहीं हूँ ॥ ६ ॥

12

मंगल-मूरति मारुत-नंदन । सकल-अमंगल-मूल-निकंदन ॥ १ ॥

पवनतनय संतन-हितकारी । हृदय बिराजत अवध-बिहारी ॥ २ ॥

मातु-पिता, गुरु, गनपति, सारद । सिवा-समेत संभु, सुक, नारद ।॥ ३ ॥

चरन बंदि बिनवौं सब काहू । देहु रामपद-नेह-निबाहू ॥ ४ ॥

बंदौं राम-लखन-बैदेही । जे तुलसीके परम सनेही ॥ ५ ॥

भावार्थ- पवनकुमार श्रीहनुमान् जी महाराज कल्याण की मूर्ति हैं। वे सारी बुराइयों की जड़ काटनेवाले हैं ॥ १ ॥ पवन के पुत्र हैं, संतों का हित करनेवाले हैं। अवधविहारी श्रीराम जी सदा इनके हृदय में विराजते हैं ॥ २ ॥ इनके तथा माता-पिता, गुरु, गणेश जी, सरस्वती जी, पार्वती जी सहित शिव जी, शुकदेव जी तथा नारद जी ॥ ३ ॥ इन सबके चरणों में प्रणाम करके मैं यह विनती करता हूँ कि श्रीरघुनाथ जी के चरण-कमलों में मेरा प्रेम सदा एक-सा निभा रहे, यह वरदान दीजिये ॥ ४ ॥ अन्त में मैं भगवान् श्रीराम जी, भगवान् श्रीलक्ष्मण जी तथा भगवती माता श्रीजानकी जी को प्रणाम करता हूँ, जो तुलसीदास के परमप्रेमी और सर्वस्व हैं ॥ ५ ॥

॥ इति श्री ॥

श्रीहनुमत् त्रिकाल स्मरण

प्रातःकाल में श्रीहनुमान् जी महाराज का ध्यान-

प्रातः स्मरामि हनुमन्तमनन्तवीर्यं श्रीरामचन्द्रचरणाम्बुजचञ्चरीकम् ।
लङ्कापुरीदहननन्दितदेववृन्दं सर्वार्थसिद्धिसदनं प्रथितप्रभावम् ॥

जो श्रीरामचन्द्र जी के चरण कमलों के भ्रमर हैं, जिन्होंने लंकापुरी को दग्ध करके देवगण को आनन्द प्रदान किया है, जो सम्पूर्ण अर्थ-सिद्धियों के आगार और लोकविश्रुत प्रभावशाली हैं, उन अनन्त पराक्रमशाली भगवान् श्रीहनुमान् जी महाराज का मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ॥

मध्याह्न काल में श्रीहनुमान् जी महाराज का ध्यान-

माध्यं नमामि वृजिनार्णवतारणैकाधारं शरण्यमुदितानुपमप्रभावम् ।
सीताऽऽधिसिन्धुपरिशोषणकर्मदक्षं वन्दारुकल्पतरुमव्ययमाञ्जनेयम् ॥

जो भवसागर से उद्धार करने के एकमात्र साधन और शरणागत के पालक हैं, जिनका अनुपम प्रभाव लोकविख्यात है, जो भगवती माता श्रीसीता जी की मानसिक पीड़ारूपी सिन्धु के शोषण कार्य में परम प्रवीण और वन्दना करने वालों के लिये कल्पवृक्ष हैं, उन अविनाशी अञ्जनानन्दन भगवान् श्रीहनुमान् जी महाराज को मैं मध्याह्न काल में प्रणाम करता हूँ॥

सायं काल में श्रीहनुमान् जी महाराज का ध्यान-

सायं भजामि शरणोपसृताखिलार्तिपुञ्जप्रणाशनविधौ प्रथितप्रतापम्।
अक्षान्तकं सकलराक्षसवंशधूमकेतुं प्रमोदितविदेहसुतां दयालुम् ॥

शरणागतों के सम्पूर्ण दुःख समूह का विनाश करने में जिनका प्रताप लोक-प्रसिद्ध है, जो अक्षकुमार का वध करने वाले और समस्त राक्षस वंश के लिये धूमकेतु हैं एवं जिन्होंने विदेहनन्दिनी भगवती माता श्रीसीता जी को आनन्द प्रदान किया है, उन दयालु पवनपुत्र रामदूत श्रीराम जी के प्यारे भगवान् श्रीहनुमान् जी महाराज का मैं सायंकाल भजन करता हूँ॥

॥ इति श्रीहनुमत् त्रिकाल स्मरणं सम्पूर्णम् ॥

परिशिष्ट प्रकरण

अहिरावण-महिरावण वध

आनन्द रामायण, सारकाण्ड अनुसार

जब लक्ष्मण जी के प्राण हनुमान् जी ने संजीवनी लाकर बचा लिये तब रावण ने दूतों को बुलाकर कहा- हे दूतों ! तुम लोग शीघ्र पाताल लोक में जाकर वहाँ रहनेवाले महाबलि ऐरावण तथा महाबली मैरावण इन दोनों को यहाँ के युद्ध का समाचार सुनाओ, तब रावण के दूत वहाँ गये और उन दोनों को सब वृत्तांत बता दिया। यह सुनकर वे दोनों बड़ी आतुरता के साथ लङ्का में आए और रात्रि काल में श्रीराम-लक्ष्मण का हरण करने के लिये राम जी के शिविर में गये। वहाँ उन दोनों ने वानरों की सेना के चारों ओर हनुमान् जी की पूँछ का बना हुआ दुर्गम घेरा देखा, तब महाबलान उन दैत्यों ने आकाश मार्ग से वानर सेना में प्रवेश किया। वहाँ राम-लक्ष्मण को एक शिलापर युद्धश्रम से थककर कुछ सोते हुए सा देख उन दोनों ने उस शिला समेत राम-लक्ष्मण को उठा लिया और पाताल में अपने महल में ले गये। तब सेना में राम लक्ष्मण को न देखकर मारुति चलकर पाताल को गए। रास्ते में लङ्का के दक्षिण किनारे निकुम्भिला गुफा में स्थित एक गर्भवती कपोतिका अपने पति से कह रही थी कि हे नाथ ! आज मुझे नरमांस खाने की इच्छा हो रही है। इसपर उसके पति ने कहा- आज दो दैत्य राम-लक्ष्मण को रसातल में ले आए हैं । वे दोनों देवी के सम्मुख मारे जायँगे, कल उनका वध हो जानेपर मैं तेरे लिए नरमांस ला दूंगा, इस बात को सुनकर मारुति कुछ संतुष्ट होकर (कि उचित मार्ग पर हूँ) आगे बढ़े। आगे जाकर उन्होंने उसके द्वार पर मकरध्वज को बैठे देखा। मकरध्वज ने मारुति को पकड़ लिया और पूछा- तुम कौन हो और कहाँ से आये हो ? मारुति ने अपना परिचय दिया कि मैं श्रीराम का दूत हूँ, सोते हुए राम-लक्ष्मण को लङ्का से दो राक्षस उठाकर यहाँ पाताल में आज ही ले आये हैं। मैं उन दोनों की खोज करने यहाँ आया हूँ। यदि तुमको उनका कुछ पता हो तो बताओ। मारुति के इस वचन को सुनकर मकरध्वज ने पूछा कि मेरे पिता अञ्जनीकुमार हनुमान् वहाँ कुशल-क्षेम से तो हैं ? यह सुना तो हनुमान् जी ने चकित होकर पूछा- अरे ! हनुमान् की स्त्री ही कौन थी कि जिससे तुम पैदा हुए ? इसपर उसने मारुति को उत्तर दिया- जब हनुमान् जी ने लंका को जलाकर अपनी पूँछ समुद्र में ठण्डी की थी। उस समय उन्होंने धुएँ से कण्ठ में जमा हुआ कफ जल में त्याग दिया था, उसे एक मकरी

ने खा लिया, उसी से उत्पन्न मैं उनका पुत्र हूँ। यह सुनकर मारुति ने कहा कि यदि ऐसा है, तब तो मैं ही अञ्जनीपुत्र हूँ, यह बात सर्वथा सत्य है। तब मकरध्वज ने अपने पिता हनुमान् जी को प्रणाम किया और सब समाचार भी कह सुनाया। उसने कहा कि जब वे दोनों असुर यहाँ से राम-लक्ष्मण को लेने के लिए लंका गये थे, उससे पूर्व ही उन दोनों ने राम-लक्ष्मण की कामाक्षी देवी के सामने बलि देने का निश्चय कर लिया था। तदनुसार कल उन दोनों का देवी के सम्मुख बलिदान दिया जाना निश्चित हो चुका है। जाइये, देवालय में जाकर खड़े हो जाइये और वहाँ से राम-लक्ष्मण को उठा ले जाइएगा। तत्पश्चात् हनुमान् छोटा रूप धारण करके देवालय में घुस गये तथा अन्दर जाकर चुपचाप खड़े हो गये। उसी समय मारुति ने भीतर से देवी के जैसा स्वर बनाकर कहा- आज तुम लोग झरोखे में से ही मेरी पूजा कर लो और बाद में धनुष तथा तूणीर को धारण करनेवाले राम-लक्ष्मण नाम के दोनों मनुष्यों को वनफूल तथा फलों और पुष्पमालाओं से सुशोभित करके जीवित ही मेरी प्रसन्नता के लिए तनिक-सी किवाड़ खोलकर धीरे से भीतर कर देना। कोई यदि आज किसी प्रकार थोड़ा भी मुझको देखेगा तो वह अवश्य अन्धा हो जाएगा । देवी के इस आदेश को सुनकर दोनों दैत्यों ने समझा कि आज देवी भलीभाँति हमपर प्रसन्न हुई हैं, फिर उन दोनों ने गवाक्षमार्गसे ही देवी का पूजन किया । बताशे, मिठाई, मालपुए तथा खीर आदि भी झरोखे से भीतर डाल दी। उन्होंने करोड़ों पञ्चामृत के घड़े अन्दर उड़ेले और करोड़ों फलों के ढेर भी वहीं से भीतर डाल दिये। वह सब खाकर मारुति पुनः उनसे कहने लगे- तुमने थोड़ा ही भोजन दिया है, मैं तो अभी बहुत भूखी हूँ। देवी के इस वचन को सुनकर वे दोनों दैत्य बड़े विस्मय में पड़ गये और अपने दूतों द्वारा दुकानों का सामान तथा नगरवासियों के सब खाद्य पदार्थ लुटवाकर उसके पर्वत सदृश ढेर को भीतर डाल दिया। उन्होंने अपने राजगृहों में भी जो कुछ खाने-पीने की चीजें संचित कर रक्खी थीं, वे भी नौकरों से मँगवाकर देवी को समर्पित कर दीं। इससे पुरवासियों के प्रत्येक घर में बड़ा भारी कोलाहल मच गया, बच्चों के खाने के लिए भी कहीं कुछ नहीं बचा। तदनन्तर उन्होंने धनुष तथा तूणीर धारण किये हुए श्रीराम-लक्ष्मण की वन्य पुष्पों से पूजा करके उन्हें द्वार के रास्ते धीरे से देवी को अर्पण कर दिया। उन्हें देखकर मारुति ने नमस्कार किया और उन दोनों ने हनुमान् जी को हृदय से लगाया। तब हनुमान् किवाड़ खोलकर बाहर आये और उन दोनों दैत्यों को ललकारा, फिर श्रीराम-लक्ष्मण भी देवालय से बाहर निकल आये और उन्होंने बाणों की वर्षा करके उन दोनों राक्षसों को क्षणभर में मार डाला। पर वे दोनों राक्षस फिर जीवित हो गये, राम जी ने फिर उन्हें मारा तो वे फिर जीवित हो गये। इस प्रकार उन दोनों को

उन्होंने सौ बार मारा परन्तु उनकी मृत्यु नही हुई। तब चकित होकर मारुति उनकी मृत्यु के उपाय की खोज में इधर-उधर भ्रमण करने लगे तो नगरी के एक एकान्त स्थान में स्थित ऐरावण की भोगपत्नी को उन्होंने देखा और उससे उन दोनों के मरण का उपाय पूछा, तब उसने कहा कि मैं एक नागकन्या हूँ, मेरे साथ ऐरावण ने बलात्कार किया है और मैरावण भी मुझे कुदृष्टि से देखता है। इन दोनों को रतिदान देने की सामर्थ्य मुझमें नही है। उन दोनों से मुझे दुःख ही मिलता है, अतः इन दोनों के मारे जाने पर मुझको तो आनन्द ही होगा। किन्तु हे मारुते ! यदि राम मुझे अपनी स्त्री बनायें तो ही मैं वह उपाय बताऊँगी, जिससे कि वे दोनों मारे जा सकें। यह सुनकर मारुति ने कहा कि यदि श्रीराम के भार से तुम्हारा पलंग नही टूटेगा तो राम तुम्हारे पति बनेंगे, तब सहमति जताकर उस स्त्री ने कहा कि पूर्व समय में एक बार बालकों के द्वारा काँटों पर आरोपित भ्रमरों को उन ऐरावण-मैरावण ने छुड़ा दिया था । इससे सन्तुष्ट होकर उन भ्रमरों ने उन दोनों से कहा कि तुम दोनों ने हम लोगों को मरने से बचाया है अतः जैसे भी होगा, हम तुम दोनों की मृत्यु से रक्षा करेंगे। इतना कहकर वे सब भँवरे वहीं रहने लगे। बस, ये भँवरे ही इस समय उत्तम अमृत लाकर उसकी बूँदों से इन दोनों के रक्त को स्पर्श कराके बारम्बार इन्हें सजीव कर दिया करते हैं। हे कपे ! वे भँवरे अभी भी उन दोनों के शयनगृहों में विद्यमान हैं। वे करोड़ों की संख्या में हैं, तुम उन्हें मार डालो। उसके कथनानुसार हनुमान् जी ने जाकर क्षणभर में उन सब भँवरों को मार डाला। उनमें से शरण में आये हुए एक भँवरे से मारुति ने कहा- तुम जाकर ऐरावण की भोगपत्नी के पलंग को भीतर से खाकर हाथी के द्वारा खाये हुए कैथे के समान अन्दर ही अन्दर से खोखला कर दो। भँवरे ने वैसा ही किया। बाद में भगवान् श्रीराम जी ने बाण से उन दोनों राक्षसों को मार डाला और उनके स्थान में राज्य पर मकरध्वज को अभिषिक्त कर दिया। इतना करके उन्होंने ज्यों ही वहाँ से चलने की तैयारी की, त्यों ही मारुति ने राम जी से प्रार्थना की कि आप नागकन्या के घर चलकर अनेक चित्र-विचित्र शोभा देखें। वस्त्रों तथा अलङ्कारों से मण्डित सुन्दर मुखवाली उस कन्या के पलङ्ग पर बैठकर अपने भार से उसके पलङ्ग को तोड़ आएँ। यह सब कर लेने के बाद उस कन्या के द्वारा प्रार्थना करने पर राम जी ने उससे कहा- तुम इस देह को त्याग कर पृथ्वी पर जाओ। वहाँ ब्राह्मणकन्या का शरीर धारण करके बहुत काल तक तप करने के बाद तीसरे जन्म तथा द्वापर युग में तुम मेरी पत्नी बनोगी। राम जी के सुन्दर तथा मधुर वाक्य को सुनकर वह राम जी के सामने ही अग्नि में प्रवेश कर गयी। जन्मान्तर में वह कन्याकुमारी नाम की ब्राह्मणी कन्या होकर पृथ्वी पर उत्पन्न हुई। तब राम जी मारुति के कन्धे पर प्रसन्नतापूर्वक

आरूढ़ हुए, मारुतितनय मकरध्वज ने भी अपने राज्य का भार मन्त्री को सौंप दिया और ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले शेष के अवतार लक्ष्मण जी को अपने कन्धे पर बिठा लिया। इस प्रकार दोनों भाई श्रीराम-लक्ष्मण क्षणभर में लङ्का जा पहुँचे। भगवान् श्रीराम-लक्ष्मण जी को देखकर सुग्रीवादि सब वानर बड़े प्रसन्न हुए और बारम्बार आलिङ्गन तथा प्रणाम करने लगे ॥

॥ इति श्री ॥

पञ्चमुख पवनकुमार का ध्यान

पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् । दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटीकुटिलेक्षणम्॥

अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् । अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥

पश्चिमं गारुडं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् । सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम् ॥

उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् । पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् ॥

ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् । येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाख्यं महासुरम् ॥

जघान शरणं तत् स्यात् सर्वशत्रुहरं परम् ॥

पञ्चमुख श्रीहनुमान् जी का पूर्व की ओर का मुख वानर का है, उसकी प्रभा करोड़ों सूर्यों के तुल्य है । वह विकराल दाढ़ों से युक्त है और उसकी भृकुटियाँ चढ़ी हुई हैं। इन्हींका दक्षिण की ओरवाला मुख नृसिंह भगवान् का है, यह महान् अद्भुत, अत्यन्त उग्र तेजसे युक्त, भयावह और (शरणागतों के लिये) भयनाशक है। इनका पश्चिम दिशावाला मुख गरुड़ का है, इसकी चोंच टेढ़ी और अत्यन्त पुष्ट है । यह सभी नागों को परास्त करनेवाला तथा विष एवं भूत-प्रेत आदिका उच्छेदक है। इनका उत्तर की ओर का मुख सूकर का है, यह दीप्तिमान्, आकाश के सदृश कृष्णवर्ण तथा पातालचारी जीवों, सिंह, वेताल एवं ज्वर आदि रोगों का विदारक है। इनका ऊपर की ओर उठा हुआ (पाँचवाँ) मुख घोड़े का है, यह अत्यन्त भयानक और राक्षसों का संहारक है। विप्रवर ! जिस मुख के द्वारा हनुमान् जी ने तारक नामक महादैत्य का वध किया था, वह समस्त शत्रुओं का विघातक एवं सर्वोत्कृष्ट मुख (भक्तों के लिये) रक्षक हो॥

मन्त्रमहार्णव से समुद्धृत

श्रीहनुमान् जी का श्रीशिव जी से युद्ध
श्रीपद्म महापुराण, पाताल खण्ड के अनुसार

भगवान् श्रीराम जी ने अश्वमेध यज्ञ करा और यज्ञ के घोड़े को छोड़ दिया तथा उसकी रक्षा के लिए सेना सहित शत्रुघ्न और भरतपुत्र पुष्कल तथा हनुमान् जी नियुक्त करे गए और वे उस अश्व का रक्षण करते हुए सम्पूर्ण पृथ्वी के भ्रमण के लिए निकल गए। तब कुछ समय पश्चात् एक वीरमणि नामक राजा के पुत्र रुक्मांगद ने उस अश्व को पकड़ लिया और फिर अपने पिता को बताया, उस राजा वीरमणि की भक्ति के कारण भगवान् शंकर सदा उसकी रक्षा के लिए उसके नगर में निवास करते थे अतः उसने शिव जी से सलाह की उन्होंने कहा कि अश्व लौटा दो परंतु वह न माना तब शिव जी ने इसी बहाने श्रीराम जी के दर्शन हो जाएँगे यह कहकर युद्ध की आज्ञा दे दी परन्तु शिव जी ने उसे स्पष्ट कहा कि मैं अपने स्वामी से नही लडूँगा उनके आने तक कोई वीर तुमसे घोड़ा नही ले जा सकेगा, फिर युद्ध हुआ परन्तु शत्रुघ्न जी पुष्कल और हनुमान् जी के आगे राजा टिक न सका, तब शिव जी उसकी रक्षा करने के लिए उसकी ओर से लड़ने आए और उनके गणों ने अयोध्या के अनेकों वीरों को मार गिराया। वीरभद्र ने पुष्कल का वध कर दिया और शिव जी ने शत्रुघ्न को मूर्च्छित कर दिया। तब युद्धस्थल में शिव जी को परास्त करने की इच्छा से उनके पास आकर हनुमान् जी ने उनसे कहा- रुद्र ! तुम रामभक्त का वध करने के लिये उद्यत होकर धर्म के प्रतिकूल आचरण कर रहे हो; अतः मैं तुम्हें दण्ड देना चाहता हूँ। मैंने पूर्वकाल में वैदिक ऋषियों के मुखों से अनेकों बार सुना है कि पिनाकधारी रुद्र सदा ही श्रीरघुनाथ जी के चरणों का स्मरण करते रहते हैं; किन्तु वे सभी बातें आज असत्य सिद्ध हुईं, क्योंकि तुमने रामभक्त शत्रुघ्न के साथ युद्ध किया है। तुमने मेरे पुष्कल को मार दिया और शत्रुघ्न जी को मूर्च्छित कर दिया है, अतः त्रैलोक्य का अंत करने वाले तुमको मैं आज मारता हूँ, तुम रामभक्ति के पराङ्मुख हो। हनुमान् जी के ऐसा कहने पर भगवान् महेश्वर उनसे बोले- कपिश्रेष्ठ ! तुम वीरों में प्रधान और धन्य हो, तुमने जो कुछ कहा है, वह सत्य है। देव-दानववन्दित भगवान् श्रीराम जी वास्तव में मेरे स्वामी हैं। किन्तु मेरा भक्त वीरमणि उनके अश्व को ले आया है और उस अश्व के रक्षक शत्रुघ्न, जो शत्रुवीरों का दमन करनेवाले हैं, इसके ऊपर चढ़ आये हैं। इस अवस्था में मैं वीरमणि की भक्ति के वशीभूत होकर उसकी रक्षा करने के लिये आया हूँ; क्योंकि भक्त अपना ही स्वरूप होता है। अतः जिस किसी तरह भी सम्भव हो, उसकी रक्षा करनी चाहिये; यही मर्यादा है। चण्डीपति भगवान् शंकर के ऐसा कहने पर

हनुमान् जी बहुत कुपित हुए और उन्होंने एक बड़ी शिला उनके रथ पर दे मारी। उस शिला के प्रहार से शिव जी का रथ चूर-चूर हो गया और उस रथ के घोड़े, सारथि तथा पताका भी नष्ट हो गये। यह देख आकाश में स्थित देवताओं ने हनुमान् जी की प्रशंसा करी, उन लोगों ने कहा वानरराज ! आप धन्य हैं। आपने बहुत बड़ा काम किया है, शिव जी को रथहीन देखकर नन्दी दौड़े हुए आये और बोले- भगवन् ! मेरी पीठ पर सवार हो जाइये। तब भगवान् भूतनाथ को वृषभ पर आरूढ़ देखकर हनुमान् जी का क्रोध और भी बढ़ गया और उन्होंने शाल का वृक्ष उखाड़कर बड़े वेग से उनकी छाती पर उसका प्रहार किया। उससे आहत होकर शङ्कर जी ने अपना त्रिशूल उठाया वह त्रिशूल अग्नि की ज्वाला के समान जाज्वलयमान था। अग्नितुल्य तेजस्वी उस महान् शूल को अपनी ओर आते देख पवनकुमार हनुमान् जी ने उसे वेगपूर्वक हाथ से पकड़ लिया और फिर क्षणभर में उसे चूरचूर कर दिया। कपिश्रेष्ठ हनुमान् जी ने जब वेग के साथ त्रिशूल के टुकड़े-टुकड़े कर डाले, तब भगवान् शिव जी ने तुरंत ही शक्ति हाथ में ली, जो पूर्ण रूप से लोहे की बनी हुई थी और उसे मारुति पर चला दिया, शिव जी की चलायी हुई वह शक्ति बुद्धिमान् हनुमान् जी की छाती में आ लगी। उससे हनुमान जी क्षणभर के लिए मूर्च्छित हो गये। क्षणभर के बाद उन्होंने भयंकर वृक्ष लेकर उससे बड़े-बड़े नागों से विभूषित महादेव जी की छाती पर प्रहार किया। वीरवर हनुमान् जी की मार खाकर शिव जी के शरीर में लिपटे हुए नाग थर्रा उठे और वे उन्हें छोड़कर इधर-उधर होते हुए बड़े वेग से पाताल में घुस गये। शिव जी ने देखा कि नाग उनके वक्ष:स्थल पर नहीं हैं, तब उन्होंने क्रोध करके अपने दोनों हाथों में मूसल धारण किया और वे बोले- वानराधम ! संग्राम से भाग जाओ नहीं तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, क्षणभर में मैं मूसल से तुम्हारा वध कर दूँगा। तब शिव जी ने उनके ऊपर मूसल का वार करा परंतु क्रुद्ध शिव जी के द्वारा छोड़े गए मूसल को देखकर हनुमान् जी ने श्रीहरि का स्मरण करते हुए उससे अपने आप को बचा लिया। लौह निर्मित तथा क्रुद्ध शिव जी के द्वारा छोड़ा गया वह मूसल पृथिवी पर गिरा और पाताल में चला गया। उस समय श्रीरामसेवक हनुमान् जी अत्यन्त कुपित हो गए और उन्होंने हाथ में पर्वत लेकर उससे शङ्कर जी के वक्षःस्थल पर प्रहार किया। शिव जी जब तक उस पर्वत को काट पाते तब तक हनुमान जी ने अनेक शाखाओं वाले शालवृक्ष से उन पर प्रहार कर दिया, शिव जी जब तक उसको भी काटने के लिए तैयार हुए तब तक हनुमान जी ने उन पर शिला से प्रहार कर दिया। तब जब शिव जी उन शिलाओं को काटना चाह रहे थे तब तक वे हनुमान जी उनपर पर्वतों की वर्षा करने लगे।

वे पर्वतो को अपनी पूंछ में लपेटकर शङ्कर जी को मारने लगे। शिलाओं, पर्वतों, वृक्षों तथा पूँछ के प्रहार से नन्दी अत्यन्त भयभीत हो गये, शिव जी के मस्तक पर स्थित चन्द्रमा के टुकड़े -टुकड़े हो गये और शङ्कर जी अत्यन्त व्याकुल हो गये क्योकि हनुमान् जी उन पर प्रत्येक क्षण प्रहार कर रहे थे। तब शिव जी हनुमान् जी से बोले- 'श्रीरघुनाथ जी की सेवा में रहनेवाले भक्तप्रवर ! तुम धन्य हो। आज तुमने महान् पराक्रम कर दिखाया। तुमने इस महान् कार्य से मुझे सन्तुष्ट कर दिया। मैं यज्ञ, दान और तपस्या से भी सुलभ नहीं हूँ; अतः तुम मुझसे वरदान माँगो, तब इस प्रकार कहने वाले सन्तुष्ट हुए भगवान् श्रीशङ्कर जी से प्रभु श्रीहनुमान जी ने जोर से हँसकर कहा- महेश्वर ! भगवान् श्रीराम जी की कृपा से मुझको सब कुछ प्राप्त है, तथापि आप मेरे युद्ध से सन्तुष्ट हुए हैं, अतः मैं आपसे यह वर माँगता हूँ कि ये हमारे पुष्कल नामक वीर युद्ध में मारे गये हैं और शत्रुघ्न जी युद्ध में मूर्च्छित हो गये हैं तथा दूसरे भी बहुत-से वीर बाणों की मार से क्षत-विक्षत एवं मूर्च्छित होकर धरती पर गिरे हुए हैं, इन सबकी आप अपने गणों के साथ रक्षा करें। आप ऐसा करें कि इन गिरे हुए वीरों के शरीरों को भूत, वेताल तथा पिशाच न ले जा सकें और न सियार इत्यादि ही इनको खा सकें। जब तक मैं देवराज इन्द्र इत्यादि देव गणों को हराकर द्रोण पर्वत को न ले आऊँ तब तक आप ऐसा करें अथवा मैं वहाँ पर विद्यमान औषधियों को लाकर जब तक मरे हुए वीरों को जीवित न कर लूँ तब तक आप इनकी रक्षा करें। अभी मैं द्रोणगिरि को लाने जा रहा हूँ, उसपर मरे हुए प्राणियों को जिलानेवाली ओषधियाँ रहती हैं। यह सुनकर श्रीशंकर जी ने कहा- बहुत अच्छा, तुम शीघ्र जाओ मैं तुम्हारे वीरों की रक्षा कर रहा हूँ। तब श्रीशिव जी के इस वाक्य को सुनकर श्रीहनुमान् जी द्रोण पर्वत पर चले गये और उन्होंने वहाँ के देवताओं को परास्त करके औषधी लाकर सबको जीवित कर दिया फिर शिव जी से अपने प्राण बचाने को शत्रुघ्न जी ने हनुमान् जी के कहने से राम जी का स्मरण करा और उनके स्मरण करते ही रण में पुराण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम जी आ गए भगवान् श्रीशिव जी उन्हें देखते ही प्रभु के आगे दंडवत हो गए और राजा वीरमणि से भी प्रभु श्रीराम जी को प्रणाम कराके उसके द्वारा प्रभु को अश्व वापस करा दिया॥

॥ इति श्री ॥

क्या प्रातःकाल हनुमान जी का नाम नही लेना चाहिए ?

अक्सर समाज में लोगो को यह कहते सुना जाता है कि प्रातःकाल श्रीहनुमान् जी महाराज का नाम नही लेना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर उस दिन भोजन नही मिलता अथवा अशुभ होता है, उनकी बात का आधार श्रीहनुमान् जी का यह वचन हुआ करता है **"प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा॥"** तो इस लेख में हम आपको बताएंगे कि क्या वास्तविक में सुबह हनुमान् जी महाराज का नाम नही लेना चाहिए अथवा यह बात असत्य है..

देखिए ऐसा नही है की श्रीहनुमान् जी महाराज का सुबह नाम लेने से कुछ बुरा होता हो, यह भ्रम मात्र है। श्रीसुन्दरकाण्ड में जो प्रसंग है वह यह है कि श्रीविभीषण जी स्वयं को तामस देह वाला बताते है तो हनुमान् जी कहते है कि मैं तो इससे भी अधम हूँ क्योंकि आपकी तो बस देह ही तामसी है परन्तु कुल तो उच्च ब्राह्मण कुल है न परन्तु मेरी तो देह भी तामस और कुल भी उच्च नहीं.. **यथा : कहहु कवन मैं परम कुलीना ?,** अब कपि की देह है तो उससे क्या ही साधन बनेगा ? कौनसी ही उपासना आदि हो पायेगी ? अतः कहते है **"कपि चंचल सबहीं बिधि हीना"** तो मुख्यता से यहाँ हनुमान् जी ने अपनी दीनता दिखाई है जैसे गोस्वामी जी ने भी स्वयं को मूर्ख आदि कहा है, यह भक्तों का स्वभाव ही है कि वे सर्वग्य सर्वसमर्थ होते हुए भी स्वयं को कुछ नही समझते और स्वयं को दीन-हीन ही मानते हैं। अब आगे कहते हैं कि **"प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा॥",** अब यहाँ यह देखना चाहिए कि हनुमान् जी महाराज ने यहाँ **"हमारा"** शब्द उपयोग करा है जिससे सिद्ध होता है कि हनुमान् जी ने यहाँ अपने स्वयं की नही अपितु अपने वानर कुल की बात करी है अतः ये प्रातःकाल नाम न लेने की बात भी वानर कुल के लिए ही है रुद्रावतार श्रीहनुमान् जी महाराज के लिए नही, सबेरे-सबेरे वानर का दर्शन-स्मरण आदि शुभ नही माना जाता, अतः उसी के आधार पर हनुमान् जी ने उपर्युक्त बात को कहा है। अब प्रश्न उठता है कि यह बात यहाँ क्यों कही ? तो वो इसलिए कि विभीषण जी स्वयं को भगवत्कृपा के अयोग्य समझ रहे हैं और अपनी परिस्थिति बताकर शंका प्रकट कर रहे हैं कि क्या कभी प्रभु जी मुझपर भी कृपा करेंगे ? **यथा : "सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥ तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा॥"** अतः हनुमान् जी यह कह कर विभीषण जी को उनकी महानता दिखलाते हैं और उनपर भी प्रभु कृपा करेंगे उन्हें यह ढाढ़स बंधाते हैं, कि

कहाँ जिनका सुबह नाम तक नही लिया जाता ऐसे वानर कुल का मैं और कहाँ प्रातःस्मरणीय आप **यथा : " प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीकव्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् । रुक्माङ्गदार्जुनवसिष्ठविभीषणादीन् पुण्यानिमान् परमभागवतान् स्मरामि ॥"** तो जब भगवान् श्रीराम जी ने मुझपर इतनी दया करी है तो वे आप पर अपनी कृपा क्यों न करेंगे ?।

अतः प्रमाणित होता है कि प्रातःकाल बंदरों का नाम लेना ही अशुभ माना गया है न कि हनुमान् जी का, उनका स्मरण तो सदा ही सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा मोक्षप्रद है, आनन्द रामायण में भगवान् मारुति के द्वादश नाम वर्णित हैं जिनका प्रातः तथा रात्रि दोनो कालों में स्मरण करने का विधान भी वहीं दिया गया है और उसका फल सर्वत्र विजय, अभय प्राप्ति आदि कहा गया है, अतः यह प्रमाणित होता है कि प्रातःकाल श्रीहनुमान् जी महाराज का स्मरण मंगलदायक तथा मोक्षप्रद ही है अशुभप्रद नही। जिस प्रकार से गिद्ध तथा कौवे का दर्शन कुछ अवसरों पर अशुभ माना जाता है परन्तु गृध्रराज श्रीजटायु जी तथा श्रीकाकभुशुण्डि जी महाराज तो सदा ही प्रणाम योग्य और परम मंगल कारक ही हैं, ठीक उसी प्रकार भले ही प्रातःकाल में वानर कुल का स्मरण आदि अशुभ माना गया हो परन्तु श्रीहनुमान् जी का स्मरण तो सदा मंगलप्रद, अभयप्रद तथा मनुष्य की सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला ही है॥

॥ इति श्री ॥

प्रसाद प्रेमी हनुमान्

आनन्द रामायण, सारकाण्ड अनुसार

एक बार भगवान् श्रीराम जी सबके सहित भोजन करने बैठे। तब उनके भोजन ग्रहण करके तृप्त होते ही हनुमान् जी झट से उठकर उनके पास आ पहुँचे और उनके सामने पीढ़े पर रक्खे हुए पकवानों से परिपूर्ण स्वर्ण के थाल को बाएँ हाथ से उठाकर आकाश में चले गये और राम जी के उस भोजनशेष को स्वयं आनन्द से खाने लगे तथा नीचे वानरो के लिए फेंकने लगे। यह देखकर विभीषण जी आदि भक्त भी शीघ्र अपनी-अपनी थालों को छोड़कर हनुमान् जी की प्रशंसा करके कहने लगे कि आपने अति उत्तम कार्य किया है। यह कहकर वे स्वयं भी बड़े आदर से उनका फेंका हुआ राम जी का उच्छिष्ट पाने लगे। उस समय प्रभु श्रीराम जी के प्रसाद के लिये बड़ा भारी कोलाहल मच गया, यह देखकर श्रीसीताराम जी प्रसन्न होकर हँसने लगे॥

॥ इति श्री ॥

श्रीहनुमत् स्मरण की महिमा

गोस्वामी श्रीतुलसीदास कृत श्रीदोहावली अनुसार

मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुत पूत ।
सकल सिद्धि कर कमल तल सुमिरत रघुबर दूत ॥

भावार्थ- श्रीराम जी के दूत वायुपुत्र श्रीहनुमान् जी मनोहर मंगल और आनन्द की मूर्ति हैं। उनका स्मरण करते ही समस्त सिद्धियाँ करतलगत (सुलभ) हो जाती हैं ॥

धीर बीर रघुबीर प्रिय सुमिरि समीर कुमारु ।
अगम सुगम सब काज करु करतल सिद्धि बिचारु ॥

भावार्थ- धीर, वीर श्रीरघुवीर के प्यारे पवनकुमार श्रीहनुमान् का स्मरण करके चाहे जैसे दुर्लभ या सुलभ सब काम करो; निश्चय रखो कि उनकी सफलता तुम्हारे हाथ में ही रखी है॥

सुख मुद मंगल कुमुद बिधु सुगुन सरोरुह भानु ।
करहु काज सब सिद्धि सुभ आनि हिएँ हनुमानु ॥

भावार्थ- सुख, आनन्द और मंगलरूपी कुमुदिनी के खिलाने के लिये चन्द्रमा के सदृश और सुन्दर गुणरूपी कमलों को विकसित करने के लिये सूर्य के समान श्रीहनुमान् जी का हृदय में ध्यान करके कार्य आरम्भ करो; फिर सब शुभ और सिद्ध ही होगा ॥

सकल काज सुभ समउ भल सगुन सुमंगल जानु ।
कीरति बिजय बिभूति भलि हियँ हनुमानहि आनु ॥

भावार्थ- श्रीहनुमान् जी का हृदय में ध्यान करो और यह निश्चय समझ लो कि तुम्हारे सभी कार्य सिद्ध होंगे, दिन अच्छे आवेंगे, सभी सद्गुण, सुमंगल, कीर्ति, विजय और विमल विभूति की प्राप्ति होगी ॥

सूर सिरोमनि साहसी सुमति समीर कुमार ।
सुमिरत सब सुख संपदा मुद मंगल दातार ॥

भावार्थ- शूरों के शिरोमणि, साहसी, सुबुद्धिमान् श्रीपवनकुमार हनुमान् जी का स्मरण करते ही स्मरण करनेवाले को सब सुख, सम्पत्ति, आनन्द और मंगल देनेवाले हैं ॥

॥ इति श्री ॥

श्रीहनुमान् जी के भाई

श्रीब्रह्माण्ड महापुराण अनुसार

केसरी कुञ्जरस्याथ सुतां भार्यामविन्दत ॥

अञ्जना नाम सुभागा गता पुंसवने शुचिः । पर्युपास्ते च तां वायुर्यौवनादेव गर्विताम् ॥

तस्यां जातस्तु हनुमान् वायुना जगदायुना । ये ह्यन्ये केसरिसुता विख्याता दिवि चेह वै ॥

ज्येष्ठस्तु हनुमांस्तेषां मतिमांस्तु ततः स्मृतः । श्रुतिमान् केतुमांश्चैव गतिमान् धृतिमानपि ॥

हनुमद्भ्रातरो ये वै ते दारैः सुप्रतिष्ठिताः । स्वानुरूपैः सुताः पित्रा पुत्रपौत्रसमन्विताः ॥

ब्रह्मचारी च हनुमान् नासौ दारैश्च योजितः । सर्वलोकानपि रणे यो योद्धुं च समुत्सहेत् ॥

जवे जवे च वितते वैनतेय इवापरः ।

अर्थात्- वानरश्रेष्ठ केसरी ने कुञ्जर की पुत्री अञ्जना को अपनी भार्या के रूप में ग्रहण किया। एक बार सुभागा अंजना पवित्र पुंसवन में जा पहुँची, जहाँ उन यौवनगर्विता अंजना से वायु देवता का मिलन हुआ तदनन्तर उनके गर्भ से जगत् के प्राणस्वरूप वायु देवता के अंश से श्रीहनुमान् जी का जन्म हुआ। इनके अतिरिक्त केसरी के जो अन्य पुत्र स्वर्गलोक तथा भूतल पर विख्यात थे, उनमें हनुमान ज्येष्ठ थे। इनके बाद क्रमशः मतिमान्, श्रुतिमान्, केतुमान्, गतिमान् और धृतिमान् थे। ये जो श्रीहनुमान् जी के छोटे भाई हैं, ये सभी स्त्रियों से संयुक्त अर्थात् विवाहित थे। ये सभी अपने ही अनुरूप पुत्री, पुत्र और पौत्र से संयुक्त थे। परंतु श्रीहनुमान् जी महाराज ब्रह्मचारी थे, इन्होंने दार-परिग्रहण नहीं किया था। ये संग्राम में सम्पूर्ण लोकों से लोहा लेने का उत्साह रखते थे और वेग में तो मानो दूसरे पक्षीराज गरुड ही थे ॥

॥ इति श्री ॥

श्रीहनुमान् जी को श्रीसीताराम जी के वरदान

आनन्द रामायण, सारकाण्ड अनुसार

अपने अभिषेक के पश्चात् रघुकुलमणि भगवान् श्रीराम जी ने प्रेम से भगवती माता श्रीसीता जी को करोड़ों चन्द्रमा के समान चमकीली मणियों तथा रत्नों से विभूषित एक हार दिया और मनस्विनी सीता जी ने राम जी का दिया हुआ वह हार वायुपुत्र श्रीहनुमान् जी को दे दिया। उस हार के गौरव से हनुमान् जी बड़े ही सुशोभित होने लगे। यह देखकर भगवान् श्रीराम जी ने श्रीहनुमान् जी महाराज से कहा- हे मारुते ! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ, तुम जो चाहो वो वरदान माँग लो। तब प्रसन्न होकर श्रीहनुमान् जी ने प्रभु श्रीराम जी को नमस्कार करके कहा- हे प्रभो ! आपके नामस्मरण से मेरा मन अब भी तृप्त नहीं हुआ है। अतएव जबतक आपका नाम भूतल में विद्यमान रहे, तबतक मैं आपके नाम का स्मरण करता हुआ इस लोक में जीवित रहूँ। हे राजेन्द्र ! यही मेरा अभिलाषित वर आप मुझे दे दें। लोक में जहाँ कहीं भी आपकी पवित्र कथा होती हो, वहाँ वह कथा सुनने के लिये जानें में मेरी अप्रतिहत गति हो। देवालय, नदीतीर, तीर्थस्थान तथा बावली आदि जलाशय को छोड़कर अन्य स्थानों में छः घड़ी के बाद नित्य आपकी कथा हुआ करे। तब श्रीराम जी ने कहा- अच्छा, तुम मुक्त होकर सुख से भूमण्डल पर निवास करो। कल्पान्त के समय तुम मेरी सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करोगे, इसमें संदेह नहीं है। इसके पश्चात् भगवती माता श्रीजानकी जी ने प्रसन्न होकर श्रीहनुमान् जी महाराज से कहा- हे मारुते ! तुम जहाँ कहीं रहोगे, वहीं पर मेरे आशीर्वाद से तुमको सब भोग्य पदार्थ प्राप्त हो जाया करेंगे। ग्राम, बाग, नगर, गोशाला, मार्ग, घर, वन, पर्वत, देवालय, नदी, तीर्थक्षेत्र, जलाशय, पुर, वाटिका, उपवन, पीपल, वट तथा तुलसी के वन आदि स्थानों में मनुष्य अपने विघ्नों को शान्त करने के लिये तुम्हारी मूर्ति की पूजा करेंगे। तुम्हारा नाम स्मरण करने मात्र से ही भूत-प्रेत तथा पिशाच आदि दूर भाग जायेंगे। इसके बाद राम जी ने अयोध्या जी में जो अन्य वानर आये थे, उन सबका भी उन्हें बहुमूल्य आभूषण तथा वस्त्रों को देकर सत्कार किया ॥

॥ इति श्री ॥

हनुमान् जी द्वारा लंका विध्वंस

आनन्द रामायण, सारकाण्ड अनुसार

जब रावण ने अपने राक्षसों को हनुमान् जी की पूँछ जलाने की आज्ञा दी तब वे सब उनकी पूँछ जलाने के लिए उसपर वस्त्र लपेटने लगे परंतु हनुमान् जी ने अपनी पूँछ लम्बी कर दी जिससे वस्त्र कम पड़ गये। तब वे राक्षस लंका की बाजार के गोदामों से कपड़े चुराकर, घरों से वस्त्र लाकर और रावण की आज्ञा से लंका के नर-नारियों के वस्त्र छीनकर हनुमान् जी की पूँछ में लपेटने लगे। ऐसा करके उन्होंने सारे नगर के लोगों को नग्न कर दिया तथापि जब पूँछ नहीं ढकी तो शय्या के मण्डप, पुरवासियों तथा राजा के महलों के वस्त्र भी लाकर लपेट दिये। तब भी जब पूरा नहीं पड़ा तो सभासदों तथा राजा के वस्त्र लाकर लपेट दिये गये, ध्वजाएँ तथा पताकाएँ ला-लाकर लपेटी गयीं। रानी मन्दोदरी, साधु-महात्माओं तथा भिक्षुकों के वस्त्र भी ला-लाकर लपेट दिये गए परन्तु तब भी पूँछ ढकी न जा सकी, फिर जब कुछ राक्षस पूँछ ढकने को सीता जी की भी साड़ी उतारने के लिए जाने लगे तब हनुमान् जी ने पूँछ बढ़ाना बन्द कर दिया। तब प्रत्येक घर में तेल आदि के लिए कोलाहल होने लगा क्योंकि वे दूत सबके यहाँ का घी तथा तेल उठा लाये थे। यहाँ तक कि किसी घर में दीपक जलाने तक के लिए भी तेल और बालकों के लिए भी घी नही बचा था। तब वे राक्षस हनुमान् जी की पूँछ अग्नि के द्वारा जलाने लगे, परन्तु अग्नि प्रदीप्त नहीं हुई। उस समय हनुमान् जी ने कहा कि यदि रावण स्वयं अपने मुख से फूँककर जलाये तो अग्नि जल सकती है। हनुमान् जी की बात सुनकर रावण तुरन्त आगे बढ़ा और ज्यों ही उसने अपने मुख से अग्नि को फूँकना प्रारम्भ किया, त्यों ही उसके सिरों के बाल तथा दाढ़ी-मूंछ जलने लगी। तब रावण अपने बीसों हाथों से उस आग को बुझाने के लिए अपने मुखों पर पटापट थप्पड़ मारने लगा। यह देखकर राक्षस जोर-जोर से खिलखिलाकर हँस पड़े, हनुमान् जी भी हँसने लगे। यह देखकर रावण बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने आज्ञा दी कि इस दुष्ट वानर को पकड़ कर ले आओ। तब वे राक्षस हनुमान् जी को बड़ी मजबूती से बाँधकर ले गये और नगर में चारों ओर घुमाने लगे, घुमाते समय उनके साथ बड़े-बड़े बाजे बज रहे थे तथा बहुत से बालक तथा शस्त्रधारी लोग उनको घेरे हुए थे। इस प्रकार दिन में सारी लंका देखकर सायंकाल के समय हनुमान् जी सूक्ष्म रूप धारण करके झटपट बन्धन में से निकल गये और कूदकर दरवाजे पर जा चढ़े। इसके पूर्व ही ब्रह्मपाश भी अपने

स्थान पर लौट गया। वहाँ से चलकर वे पश्चिमी द्वार पर आये। वहाँ फाटक का खम्भा उखाड़कर उससे उन्होंने अपने समस्त द्वारपालों को मार डाला साथ ही उन्होंने अनेक रक्षक राक्षसों को भी मार गिराया और उन्होंने अपनी पूँछ की अग्नि से सब महलों में आग लगाकर सारी लंका को जला डाला। उस समय लंका के प्रत्येक गृह में बड़ा भारी कोलाहल होने लगा। स्त्रियाँ अपने बालकों को सोते हुए छोड़कर ही घरो से बाहर निकल पड़ीं। उनके वस्त्रों तथा बालों में आग लगी हुई थी और वे अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगीं। हनुमान् जी ने रावण के महलों में भी आग लगा दी और उन्होंने रावण की सभा को जलाकर वहाँ के राक्षसों को अपनी पूँछ से बहुत पीटा और सब राक्षस जलने तथा अनेक प्रकार के शब्द करके चिल्लाने लगे। तब रावण क्रुद्ध हो दस करोड़ रासक्षों को साथ लेकर हनुमान् जी से लड़ने के लिए गया। हनुमान् जी ने उन सबको लोहे के खंभे से मार डाला और करोड़ों राक्षसों को एक साथ पूँछ में बाँधकर लीलापूर्वक रावण के सिर पर दे मारा, इस प्रकार मारने से उसकी चमड़ी क्षणभर में जल उठी। हनुमान् जी की पूँछ की अग्नि से जलकर दशानन मूर्च्छित हो गया, परन्तु हनुमान् जी ने यह सोचकर उसका वध नही करा कि यदि राम जी के हाथ से यह मारा जाएगा तो उनका यश बढ़ेगा। अपने पिता को गिरा हुआ तथा राक्षसों को जलते हुए देख इन्द्रजीत अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए एक गुफा में जाकर छिप गया। हनुमान् जी ने लक्ष्मण जी की प्रसन्नता के लिए उसका भी वध नही करा। इस प्रकार सभी को जीतकर तथा विशाल लंका पुरी को जलाकर श्रीहनुमान् जी महाराज ने जाकर समुद्र में अपनी पूँछ बुझाई॥

॥ इति श्री ॥

श्रीहनुमान् जी की शक्ति का रहस्य

जब श्रीहनुमान् जी महाराज ने सीता अन्वेषण के कार्य में स्वयं को असमर्थ बताया तब भगवान् श्रीराम जी ने उन्हें अपने **“श्रीराम”** इस मन्त्र का उपदेश करा फिर हनुमान् जी ने इसका एक लाख बार जप करा तब इसके प्रभाव से ही श्रीहनुमान् जी महाराज ने समुद्र लांघकर, राक्षसों को मारकर तथा लंका नगरी को जलाकर माता श्रीसीता जी का संदेश लाकर प्रभु श्रीराम जी को सुनाया। उन्होंने श्रीसीता माता से स्वयं कहा था कि मेरे हृदय में **“श्रीराम”** नामक अमोघ शक्ति विद्यमान है, जिसके प्रभाव से मैं राक्षसों को तिनके के समान मानता हूँ॥

श्रीआनन्द रामायण से समुद्धृत

श्रीराम नाम माहात्म्य

श्रीस्कन्द महापुराण, ब्राह्म खंड, चातुर्मास्य माहात्म्य अनुसार

भगवान् श्रीशिव जी भगवती माता श्रीपार्वती जी से बोले- प्रिये ! भगवान् नारायण के सहस्र नामों में जो सारभूत नाम है, मैं उसीका नित्य निरन्तर चिन्तन करता हूँ, मैं रामनाम जपता हूँ और उसी के अंक की इस माला द्वारा गणना करता हूँ। श्रीराम का अवतार बहुत ही श्रेष्ठ है । 'राम' इस दो अक्षर के नाम का जप सब पापों का नाश करने वाला है। मनुष्य चलते, खड़े होते और सोते समय भी श्रीरामनाम का कीर्तन करने से इहलोक में सुख पाता है और अन्त में भगवान् विष्णु का पार्षद होता है । 'राम' यह दो अक्षरों का मन्त्र सौ करोड़ मन्त्रों से भी बढ़कर है। चातुर्मास्य प्राप्त होने पर तो यह राम मन्त्र अनन्त फल देनेवाला होता है। इस भूतल पर राम नाम से बढ़कर कोई पाठ नहीं है । जो राम नाम की शरण ले चुके हैं, उन्हें कभी यमलोक की यातना नहीं भोगनी पड़ती। जो-जो विघ्नकारक दोष हैं, सब राम नाम का उच्चारण करने मात्र से नष्ट हो जाते हैं। जो परमात्मा समस्त स्थावर जंगम प्राणियों में अन्तर्यामी आत्मारूप से रम रहा है, वह 'राम' कहलाता है। 'राम' यह मन्त्रराज भय तथा व्याधियों का नाश करनेवाला है। यह युद्ध में विजय देनेवाला तथा समस्त कार्यों एवं मनोरथों को सिद्ध करनेवाला है। राम नाम को सम्पूर्ण तीर्थों का फल कहा गया है, वह सभी के लिये मनोवांछित फल देनेवाला है । रामचन्द्र, राम-राम इत्यादि रूप से उच्चारण किया जानेवाला यह दो अक्षरों का मन्त्रराज भूतल पर सब कार्य सिद्ध करने वाला है। देवता भी रामनाम के गुण गाते हैं। इसलिये पार्वती ! तुम भी सदा राम नाम का जप करो । जो रामनाम का जप करता है, वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। राम नाम से ही सहस्र नामों का पुण्य मिल जाता है । विशेषतः चातुर्मास्य में उसका पुण्य दसगुना बढ़ जाता है । भगवान् श्रीराम सम्पूर्ण जगत को अपने तेज से व्याप्त करके स्थित हैं और सब मनुष्यों में अन्तरात्मारूप से रहकर उनके पूर्वजन्मोपार्जित स्थूल एवं सूक्ष्म पापों को क्षणभर में भस्म करके उन्हें पवित्र कर देते हैं ॥

॥ इति श्री ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

॥ श्रीआञ्जनेयार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीराम जय राम जय जय राम ॥

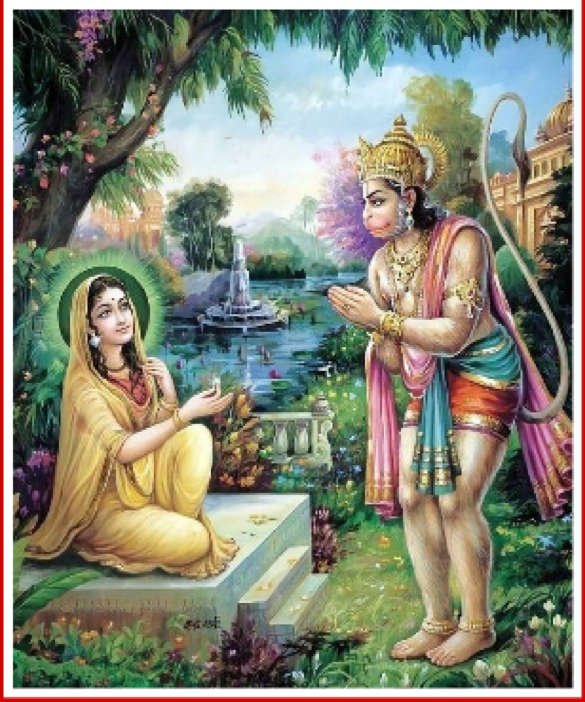

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

हमारे प्रकाशित ग्रन्थों का विवरण :

श्रीरामार्चन सर्वस्वम्
श्रीसीतार्चन सर्वस्वम्
श्रीआञ्जनेयार्चन सर्वस्वम्

ग्रन्थ प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्र : 8303317498

॥ श्रीराम जय राम जय जय राम ॥